राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

श्री खरतरगच्छीय ज्ञान मन्दिर, जयपुर

ग्रन्थाङ्क ४४

राजस्थानी-हस्तलिखितग्रन्थ-सूची

भाग १

प्रकाशक

राजस्थान राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE JODHPUR

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी]

सम्मान्य सदस्य

भाण्डारकर प्राच्यविद्यासंशोधनमन्दिर, पूना, गुजरातसाहित्य-सभा, अहमदाबाद;
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध-संस्थान, होशियारपुर, निवृत्त सम्मान्य नियामक-
(ऑनरेरि डायरेक्टर)-भारतीय विद्याभवन, बम्बई

ग्रन्थाङ्क ४४

राजस्थानी-हस्तलिखितग्रन्थ-सूची

भाग १

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

राजस्थानी-हस्तलिखितग्रन्थ-सूची

भाग १

प्रधान सम्पादक

मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

सहायक

श्रीपुरुषोत्तमलाल मेनारिया
एम.ए. (प्री.) साहित्यरत्न
प्रवर शोध-सहायक

श्रीरमानन्द सारस्वत
शास्त्री, ज्योतिषाचार्य
शोध-सहायक

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१७
प्रथमावृत्ति ५००

भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८२

ख्रिस्ताब्द १९६०
मूल्य ४.५० न.पै.

मुद्रक—हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाके कुछ ग्रन्थ

प्रकाशित ग्रन्थ

संस्कृतभाषाग्रन्थ–१. प्रमाणमंजरी–तार्किकचूडामणि सर्वदेवाचार्य, मूल्य ६.००। २ यन्त्रराजरचना–महाराजा सवाई जयसिंह, मूल्य १.७५। ३ महर्षिकुलवैभवम्–स्व० श्रीमधुसूदन ओझा, मूल्य १०.७५। ४ तर्कसंग्रह–पं० क्षमाकल्याण, मूल्य ३.००। ५ कारकसम्बन्धोद्योत–पं० रभसनन्दि, मूल्य १.७५। ६. वृत्तिदीपिका–पं० मौनिकृष्ण, मूल्य २.००। ७ शब्दरत्नप्रदीप, मूल्य २.००। ८ कृष्णगीति–कवि सोमनाथ, मूल्य १.७५ ९ शृङ्गारहारावली–हर्षकवि, मूल्य २.७५। १० चक्रपाणिविजयमहाकाव्य–पं० लक्ष्मीधरभट्ट, मूल्य ३.५०। ११. राजविनोद–कवि उदयराज, मूल्य २.२५। १२. नृत्तसंग्रह, मूल्य १.७५। १३ नृत्यरत्नकोश, प्रथम भाग–महाराणा कुम्भकर्ण, मूल्य ३.७५। १४ उक्तिरत्नाकर–पं० साधुसुन्दरगणि, मूल्य ४.७५। १५ दुर्गापुष्पाञ्जलि–पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी, मूल्य ४.२५। १६ कर्णकुतूहल तथा कृष्णलीलामृत–भोलानाथ, मूल्य १.५०। १७ ईश्वरविलास महाकाव्य–श्रीकृष्ण भट्ट, मूल्य ११.५०। १८. पद्यमुक्तावली–कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट, मूल्य ४.००। १९. रसदीर्घिका–विद्याराम भट्ट, मूल्य २.००।

राजस्थानी और हिन्दी भाषा ग्रन्थ–१ कान्हडदे प्रबन्ध–कवि पद्मनाभ, मूल्य १२.२५। २ क्यामखारासा–कवि जान, मूल्य ४.७५। ३ लावारासा–गोपालदान, मूल्य ३.७५। ४ बाकीदासरी ख्यात–महाकवि बाकीदास, मूल्य ५.५०। ५ राजस्थानी साहित्यसग्रह, भाग १, मूल्य २.२५। ६ जुगल-विलास–कवि पीथल, मूल्य १.७५। ७ कवीन्द्रकल्पलता–कवीन्द्राचार्य मूल्य २.००। ८ भगतमाळ–चारण ब्रह्मदासजी, मूल्य १.७५। ९. राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिरके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची, भाग १, मूल्य ७.५०। १०. मुहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, मूल्य ८.५० न पै। ११ रघुवरजसप्रकास, किसनाजी आढा, मूल्य ८-२५ न पै। १२ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग १, मूल्य ४.५०।

प्रेसोमें छप रहे ग्रन्थ

संस्कृत-भाषा-ग्रन्थ–१ त्रिपुराभारतीलघुस्तव–लघुपंडित। २. शकुनप्रदीप–लावण्यशर्मा। ३ करुणामृतप्रपा–ठक्कुर सोमेश्वर। ४ बालशिक्षा व्याकरण–ठक्कुर संग्रामसिंह ५. पदार्थरत्नमञ्जूषा–पं० कृष्णमिश्र। ६ काव्यप्रकाशसंकेत–भट्ट सोमेश्वर। ७ वसन्तविलास फागु। ८ नृत्यरत्नकोश भाग २। ९. नन्दोपाख्यान। १० वस्तुरत्नकोश। ११ चान्द्रव्याकरण। १२ स्वयभूछद–स्वयभू कवि। १३ प्राकृतानद–कवि रघुनाथ। १४ मुग्धावबोध आदि औक्तिक-सग्रह। १५ कविकौस्तुभ–पं० रघुनाथ मनोहर। १६. दशकण्ठवधम्–पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी। १७ भुवनेश्वरीस्तोत्र सभाष्य–पृथ्वीधराचार्य, भा पद्मनाभ। १८ इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध। १९ हम्मीरमहाकाव्यम्–नयचन्द्रसूरि। २० ठक्कुर फेरु रचित रत्नपरीक्षादि (प्रा)

राजस्थानी और हिन्दीभाषा ग्रन्थ–१ मुहता नैणसीरी ख्यात, भाग २–मुहता नैणसी। २ गोरावादल पदमिणी चऊपई–कवि हेमरतन। ३ चद्रवशावली–कवि मोतीराम। ४ सुजान सवत–कवि उदयराम। ५ राजस्थानी दूहा सग्रह। ६ वीरवाण–ढाढी बादर। ७ राठोडारी वशावली। ८ सचित्र राजस्थानी भाषासाहित्य ग्रथ सूची। ९ राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिरके हस्तलिखित ग्रथोकी सूची, भाग २। १० देवजी बगडावत और प्रतापसिंह म्होकमसिंघ वार्ता। ११ बगसीराम और अन्य वार्ताएं।

इन ग्रथोके अतिरिक्त अनेक सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, प्राचीन राजस्थानी और हिन्दी भाषामे रचे गये ग्रथोका सशोधन और सम्पादन किया जा रहा है।

सञ्चालकीय वक्तव्य

······

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानमें मार्च सन् १९५६ ई० तक संगृहीत ४००० हस्तलिखित ग्रन्थोंका विषयवार सूचीपत्र हम "हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची, भाग १" के रूपमें प्रकाशित कर चुके हैं और मार्च सन् १९५८ ई० तक संगृहीत हस्तलिखित ग्रन्थोंका विषयवार सूचीपत्र सम्प्रति यन्त्रस्थ है एवं शीघ्र ही प्रकाशित होगा। प्रतिष्ठानमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और हिन्दीके साथ ही राजस्थानी भाषाके हस्तलिखित ग्रन्थोंका भी बड़ा संग्रह हो गया है, जिनके सूची-पत्रकी मांग सम्बद्ध विद्वानों और अन्य जिज्ञासुओं द्वारा बराबर की जा रही है। वस्तुतः देश विदेशमें सर्वत्र प्राप्य राजस्थानी-भाषा निबद्ध समस्त हस्तलिखित ग्रन्थोंका सूची-करण एक विशेष महत्त्वपूर्ण कार्य है, जिसके लिये सुचारु प्रयत्न होना अपेक्षित है। इसी दृष्टिसे हम राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुरमें मार्च सन् १९५८ ई० तक संगृहीत २१६६ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थोंकी प्रस्तुत सूची प्रकाशित कर रहे हैं। भविष्यमें भी राजस्थानी भाषाके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी पृथक् सूची प्रकाशित करनेका कार्य चालू रहेगा और यथावसर वे सूचियां विद्वानोंके सामने आती रहेंगी। इस प्रतिष्ठानमें अथवा अन्यत्र प्राप्त होनेवाले वैयक्तिक संग्रहोंकी सूचियां भी यथाक्रम उपसंग्रह-सूची या परिशिष्टके रूपमें प्रकाशित करते रहना हमारा लक्ष्य है।

प्रस्तुत सूचीके प्रकाशन-व्ययका अर्द्धांश केन्द्रीय भारत सरकारने प्रान्तीय भाषा विकास योजनाके अन्तर्गत प्रदान करना स्वीकार किया है तदर्थ हम आभार प्रदर्शित करते हैं।

जिज्ञासु पाठक और अनुसंधित्सु विद्वान् हमारे इस प्रकाशनसे लाभान्वित होंगे, ऐसी आशा है।

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर।

महाशिवरात्रि, वि. स. २०१६,
भारतीय विद्या-भवन,
बम्बई।



राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

—

पुरातत्त्वाचार्य मुनि जिनविजय द्वारा संपादित कतिपय ग्रन्थ

१ त्रिपुराभारती लघुस्तव — महाकवि लघुपण्डित-कृत
२ शकुनप्रदीप — पं० लावण्यशर्मा कृत
३ करुणामृतप्रपा — कवि सोमेश्वरठक्कुर कृत
४ बालशिक्षा व्याकरण — ठक्कुर संग्रामसिंह कृत
५ पदार्थरत्नमञ्जूषा — पं० कृष्णमिश्र कृत
६ मुग्धावबोधादि औक्तिक संग्रह — प्राक्विविधस्तुतिरूप
७ प्राकृतानन्द — पं० रघुनाथ कृत
८ ठक्कुर फेरु रचित ग्रन्थावलि (प्राकृत)
९ उक्तिरत्नाकर — पं० साधुसुन्दरगणि कृत
१० राठोडारी वंशावलि — राजस्थानी भाषानिबद्ध ऐतिहासिक रचना
११ राजस्थानी सुभाषित संग्रह
१२ हमीर महाकाव्य — नयचन्द्रसूरि कृत
१३ मणिरत्नादि परीक्षा ग्रन्थ संग्रह

******

विषय - सूची





क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	७७५३ (१–१५)	अक पाटी		१८३७	१३–२९	* पाटी के नीचे नीति के दूहे हैं
२	४९०७(१)			,	१८–२२	
३	४९१६(५)	प्रकावलि जिर्णसिंह सूरि प्रासिका	हीरकलश	१८७५	७३–८३	
४	२८८३(७१)	अगफुरकण विचार	हीररतन	१७वीं	१३५ वीं	
५	४४५२(४२)	अजना चोपाई	पुण्यसागर	१८वीं	१०८ वीं	
६	१६२२			१७६८	११	
७	४=१८	(सचित्र)		१७०२	२०	
८	५८९३			१९वीं	४३	लि ४३, प्रारभ के १० दूहे पुण्य-सागर वाली प्रति से मिलते हैं लि क नोनचंद
९	६५२५			१८६८	२४	* रचना १६८७ ग्राम पीहो, ऊदावत राज्य
१०	४०४०	अजना रास		१८४९	१७	अन्तिम पत्र त्रुटित
११	४१६४(१)	अजना सती रास		१९२९	१३	
१२	५०९३	अजन सतीनो रास	,	१८वीं	२१	लि स्था नागोर
१३	३५५३(३)	अजना सुंदरी चोपाई	,	१८७७	१०२–१२७	लि स्था हीयावेसर रचना
१४	३८६०			१७४८	१८	सं० १६८६ सांचोर में
१५	३८७६		भुवनकीर्ति	१८७७	२७	लि स्था सकार ग्राम
१६	३९६६			१७८९	२०	लि स्था पा(खा)रीयानी घरा ग्राम
१७	३८७७			१८७४	२१	लि स्था उदयपुर

क्रमाङ्क	गन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१८	३९६७	अजना सु दरी चोपाई	भुवनकीर्ति	१८५६	२२	लि स्था बीकानेर
१९	२२२३	,, ,,	,,	१७२२	२७	लि स्था सिरुवज
२०	४०३९	,, ,,	,,	१९वीं	१८	अपर नाम पवनजयप्रिया अजना सुदरी हनुमत चरित्र
२१	४३१९	,, ,, सचित्र	,,	१८६१	३४	चि स ४०
२२	७०४३	,, ,,		१८वी	१४	लि कर्त्री आर्या हीरा
२३	७२६१.	,, ,,	पुण्यसागर	१८५०	१२	बीकानेर मे लिखित
२४	१८२०	,, भास	माल मुनि (?)	१७वी	७	
२५	३८६२	,, रास		१७४७	१०	लि. स्था पीपाड
२६	६३६२	,, ,,		१८६५	२५	लि स्था पोरबदर
२७	१०९३	अतरिक्ष पार्श्वनाथ छद	भावविजय	१८८२	३	मान कुआ मे लिखित
२८	२३७४(२)	अबरीषी रास	माइदास	१९वी	१६–२०	
२९	३८९२	अबड विद्याधर रास	मगलमाणिक्य	१६९३	८३	* पालगजा नगर मे लिखित
३०	२२५२	अबाजीकी आरती	शिवानद स्वामी	२०वीं	१	
३१	२२४०	,, ,,	रघुलाल	१९०१	१	
३२	२८९३(२२)	अबिका गीत	सेवक	१७वी	१२ वाँ	
३३	२०४३	,, भवानी छद	जितचद	१९२१	२	
३४	७८०	अबिका स्तोत्र	भवानीनाथ	१९वी	१	
३५	५२०२(१)	अकबरनामा		१८८५	४–८७	जयपुर मे लिखित
३६	४९२०	अकबरनामो		१९वीं	१४	
३७	३५४९(७)	अकल बहादरारी बात		,,	४९–५९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३८	३५५५(२०)	अकलरी वात		१९वीं	१२६–१३२	
३९	११२४(९)	अगडदत्त चोपई	सुमति हर्षवल्लशिष्य	१६७६	३२–३९	* ७० १६०१ में रचित
४०	६२१	अगस्तोदय तथा अर्कोदय विचार		१९वीं	१	
४१	३५६२(१४)	अचलदास खीचीरी वारता		१९७०	११७–१३५	*
४२	९९४	अजापुत्र चोपई	सुमतिप्रभ	१८२९	४२	स० १८२२ में साचोर मे रचित लि स्था बालोतरा
४३	३५०९	रास	धर्मदेव	१८७०	१२	स० १५६१ में सीणी ग्राम में रचित, लि स्था वे(खे)टकपुर
४४	३५४६(१८)	अजितसिंघजीरी वारता		१९वीं	१२५–१२६	*
४५	३५७३(४२)	〃 रो कवित्त			१०६ वाँ	* जीर्ण प्रति
४६	२३६८(४)	〃 रो सीलोको		१८४८	३२–३५	* वाच्या में लिखित
४७	१०६५	अजित शांतिस्तव	मेरुनंदन	१९वीं	८०–८१	
४८	३५७५(२)		〃	२०वीं	२४–२७	
४९	३५७१(४६)			〃	२३१–२३४	
५०	३५७५(६)	अट्ठावीस लब्धिस्तवन	धर्मवर्धन		३४–३७	
५१	२८६३(११३)	अढारभार वनस्पति वर्णन		१७वीं	१६८ वाँ	
५२	२८६३(२७)	अढारनातरा चोपाई	हीरकलश		६१–६४	
५३	३५४३(१)	अणगस	माणकसाह	१८८२	१–२	
५४	२८६३(१२७)	अणहिल्लवाड पत्तन राजावली		१७वीं	१६१ वाँ	*
५५	२०४२(१)	अतिचार तथा स्नात्र विधि		१७८३	१–६	मगरवाड़ा में लिखित
५६	४२८७(१०)	अवीतवारकी कथा	भाव कवियण (?) गग गोत्रीय अग्रवालमल्ल पुत्र	१८वीं	४६–७७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५७	५३१२	अध्यात्म गीता		१८८३	८५	अपूर्ण, प्रथम ८ पत्र अप्राप्त, पाली मे लिखित
५८	७५२४	अध्यात्मविचार		१८२७	१६	अन्त - शदेकरण जेवतना चोपडा माथी
५९	७७४३	अध्यात्म रामायण भाषा	राजसिंघ	१७८४	१–३२	* वाई सिरेकवरी लिखित, सावरमध्ये
६०	२२०३	अध्यात्म सार माला	नेमिदास	१८वीं	६	* स० १७६५ में रचित
६१	३५६७(३०)	अधूरा पूरा		१९वी	१५२–१५४	
६२	२१४२(२)	अधूरं पूरंरा दूहा		,,	५–६	
६३	५४१८(१६)	अनतचतुर्दशी कथा		,,	१२१–१२४	
६४	४९१४(१८)	अनत व्रत रास	ब्रह्मजिणदास	१८७१	२१२–२१८	
६५	३५४६(११)	अनतराय साप(ख)लारी वारता		१९वीं	९३–९७	
६६	३५४९(९)	अनतराय साप(ख)लारी वात		,,	६८–७१	*
६७	३८७८	अनाथी सधी	खेमो	१७५९	४	स० १७४५ में कल्याणपुर में रचित
६८	५१०८	अबजदी प्रश्न		२०वीं	८	अपूर्ण
६९	५४१८(३६)	अबजदी पाशावली		२०वीं	१–१०	जैन विनती सहित
७०	३७४२	,, शकुनावाली		१८वी	३	
७१	३७५८	,, ,,	सतीदास	१८८२	२४	विक्रमपुर में लिखित
७२	२३७५(३)	अबोलानी वारता	सामलदास भट्ट	१९०६	१०४–१३१	सिंघासण बत्तीसी के अतर्गत
७३	११२४(७)	अभयकुमार रास		१६७५	१से४६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७४	२८६३-(१२६)	अभयदेव सूरि गच्छ निर्णय		१६१७	१९०-१९१	१९० वें पत्र में अन्य ग्रन्थों के अवतरण हैं १९१ वें पत्र में अन्य गच्छों के ३४ मुनियों की साक्षी है, पत्तन में लिखित लि क हीरकलश
७५	४४५२(१६)	अभिसारिका वर्णन गीत आदि	रतन विमल	१८वीं	१८ वाँ	
७६	११२४(१)	अमरतज राजा धर्मबुद्धि मंत्री रास	देवगुप्त चन्द्रसूरीश्वर	१६७५	२-१८	प्रथम पत्र अप्राप्त सं० १६०९ में रचित
७७	७१४१	अमरदत्त मित्रानंद चरित्र रास ,	„	१७००	२८	सं० १६०६ में रचित सारण मध्य, ऋषि कचरा भाभण शिष्य लिखित
७८	४३६१	अमरसिंघजी को सिलोको	जयरंग	१६१७	१६	लि स्या वाच्या
७९	२३६८(२)			१९वीं	२७-२९	
८०	३२१३	अमरसेन वयरसेन चोपाई	पुण्यकीर्ति	,	३	
८१	२०९७(१)	,	विजयहर्ष	१७७२	१-१०	सं० १७०० मे रचित, पत्तन में लिखित
८२	३८६३	, ,	राजसुंदर	१८वीं	१५	सं० १६६६ में सांगानेर में रचित
८३	५११७	, , रास	राजो	१८४६	२०	
८४	२०७८	„	सवाई प्रतापसिंह	१८वीं	२३	सं० १६६७ में जालोर में रचित
८५	११२२(५)	अमल रो छंद	„	१९वीं	३-४	
८६	६६०२	अमितसागर			२२८	२ ३ ४ ५ वें पत्र अप्राप्त
८७	४२०६	„		१८७६	२७८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
८८	५८३९	अम्रितसागर	सवाई प्रतापसिंह	१९वी	३३८	अपूर्ण
८९	६८३१	,, ,,	,,	,,	४६७	
९०	३७२१	अयनाशकरण विधि आदि		,,	३	
९१	७१३७	अयवती सुकुमाल चौपाई		,	५	रचना १७४१
९२	४०४८(२)	अयवती सुकुमाल स्वाध्याय	शांतिहर्ष	१८९२	१६–२०	लि क धनरूप हंस, सऊपरा-ग्रामे
९३	२८९३(४६)	अर्ध प्रकरण वर्णन		१७वीं	८८वां	
९४	१८९०(९८)	अर्जुन गीता	धरमदास	१९वी	७६–७९	
९५	७७४४(२)	,,	रुघनदास	१७५८	३–८	
९६	२१३०	अर्जुन मालीरी चोपाई	मुक्तिनिधान	१८९३	५	सुवाई गाम मे लिखित
९७	२१५६	अरजन हमीररी वात		१९वी	५	"
९८	४४६१	अर्बुदाचल श्लोक	विनीतविमल	१८वीं	२	
९९	२८९३(३२)	अर्हंत भेद नमस्कार		१६१९	६६वां	
१००	४०'४	अरहन्नक मुनि चरि	जिनहर्ष सूरि	१९वीं	६	
१०१	२८९३(७३)	अल्प बहुत्व विचार		१७वी	१३७–१३८	
१०२	८६३	अवतार गीता (चरित ?)	नरहरदास बारहठ	१८११	६०४	
१०३	२२१९	,, ,,	,,	१८२६	६१	पुनरासर में लिखित
१०४	७७२४	अवतार चरित	नरहरिदास बारहठ	१७८६	२९७	
१०५	७७२९	, ,,	,,	१९१८	६४६	
१०६	७७३३	,, ,,	,,	१९१४	४४५	हरिराम कबीरपंथी द्वारा वदनोर मे लिखित
१०७	७३८७	अवतीगज सुकुमाल चोपाई	जिनहर्ष	१९वीं	६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०८	१८३६(१२)	अवंती सुकुमाल चोपाई	जिनहर्ष	१८३१	५७–६५	
१०९	२१४६	,,	,,	१९वीं	८	रचना सं० १७४१
११०	२३७४(६)				३१–३४	
१११	३५१०(२)	ढाल	धमनरेंद्र		३रा	
११२	३५६७(१६)	अन्लीत रासो	जल्ह		१३३ वां	
११३	७७४५	अश्वपरीक्षा		१९४३	३६	
११४	२०४१	अष्टप्रकार पूजा		१९वीं	२	
११५	४७८९	,, रास	उदयरत्न	१८२९	६१	
११६	५४१८(१६)	अष्टमी कथा		१९वीं	१४०–१४३	
११७	३५७५(४८)	,, स्तवन	कांति	२०वीं	२३६–२३८	
११८	४६१४(२४)	अष्टाणी वरतनो रास	शुभचंद्र	१८७१	२३१–२३२	
११९	३५७५(७)	अष्टापद तीर्थराज स्तवन	पद्मराज पाठक	२०वीं	३७–३८	
१२०	३५४३(५)	असज्झाय सज्झाय		१८८२	९–१०	
१२१	१७६७	अक्षय तृतीया विचारादि		१९वीं	१	
१२२	२८६३ (१३५)	आगमवचन चोपाई (कुमति विध्वंसणाधिकार)	हीरकलश	१६२१	२०२–२३६	रचना सं० १६१७
१२३	१०००	आगमसारोद्धार	देवचंद	१९३१	८१	
१२४	२०३५			१९१८	६७	
१२५	३५६२(१६)	आठपहोररा दूहा		२०वीं	१३७–१३८	
१२६	२१४०	आणंद संधि	श्रीसार	१८२४	१२	
१२७	२१७७	,,		१६९६	१२	* लि स्था राजलदेसर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सन्या	विशेष उल्लेखनीय
१२८	२२२०	आणद सधि	श्रीसार	१८वीं	६	
१२९	३५७३(३६)	,,	,,	१९वीं	८९–९७	
१३०	३८७१	,,	,,	१७६४	७	लि स्था कृष्णगढ
१३१	३८७९	,,	,,	१७७३	६	
१३२	५६०२	आत्मप्रकाश चौपाई	धर्ममन्दिर	१८वीं	२३	रचना १७४२
१३३	३५४८(१०)	आत्मबोध सज्झाय	रूपचद	१८४५	१–२	तिमरी ग्राम मे लिखित
१३४	५४१८(४)	आत्मसबोध रास	बनारसी	१८वीं	८८–९१	
१३५	३५७५(५२)	आत्मोपरि स्वाध्याय	नयविमल	२०वीं	२५०–२५१	
१३६	३५७५(६८)	आदिजिन गुहली	शिवचद्र	,,	२९९–३००	
१३७	३५७१(९)	,, वीनती	समयसुदर	,,	४४–४६	
१३८	४९१४(२०)	आदित्य व्रत कथा	सूरजी शाह	१८७१	२२२–२२९	
१३९	५३७६(२)	,, वार कथा		,,	३१–४२	
१४०	५३७६(१३)	,, ,, (छोटी)		,,	१९७–१९९	
१४१	१८१९(२)	आदिनाथ हमचडी	वर्धमान	१८वीं	४–५	
१४२	३५४९(५)	आदीश्वर वीनती		,,	४६–४७	
१४३	४४२०	आनदमदिर रास	ज्ञानविमल	१८वीं	२१३	उात वृत्तात, अतिम पत्र अप्राप्त
१४४	७०६४	आनद श्रावक	श्रीसार	१८७०	२२	लि क. साध्वी रत्ना, गावडीमध्ये
१४५	४०४२	,, सधि	,,	१७५४	१५	लि क गगमा
१४६	५४१८(३२)	आनदाके दोहे		१९वीं	१७१–१७३	दूहा स० ४१
१४७	११२२(२८)	आबूजीनो छद	रूपो कवि	,,	२७वां	
१४८	३०२०(३)	आनूघरा छत्तीसी	महिराज	१८वीं	३–५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नामादि	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४६	३०२०(२)	आवूधरा बत्रीसी	मेहिराज	१८वीं	१-३	
१५०	४६११(२)	आभूषण चितावणी		१८७६	४१-४२	
१५१	३५७३(४३)	आमणा	ज्ञानसागर	१९वीं	१०६-१०७	जीर्ण प्रति
१५२	६४६	आद्रकुमार चोपाई	समयमुनि	१७३०	१२	
१५३	४०३५	आद्रकुमार चोढालिया	ज्ञानसागर	१७३०	३	
१५४	३०३०	चोपाई	मान कवि	१७७८	१३	
१५५	४८२३(२)	रास	कनकसोम	१८१९	९-११	
१५६	६४८	धवल	अजितदेव	१७वीं	३	
१५७	१००८	आराधना	समयसुंदर	१६४७	१०	वीरमपुरमें रचित
१५८	२११६	गद्य	हीरसूरिशिष्य	२०वीं	१०	
१५९	६५१	स्तवन	सोमसूरि	१७वीं	६	अन्त्य पत्र अप्राप्त
१६०	१०४५	प्रकरण	दयासार	१८वीं	६	
१६१	३४६८	आराम शोभा चोपाई		१७४९	१६	● सं० १७०४में मुलतानमें रचित
१६२	३५४६(१०)	आलणमी भाटीरा दूहा	कमलहर्ष	१९वीं	७२-७३	
१६३	३५७५(१२)	आलोचना स्तवन	ऋषभ	२०वीं	५८-६२	
१६४	३५७५(४२)		अमरसींह		२०६-२११	
१६५	३५७५(४५)		समयसदर		२२८-२३१	
१६६	६६४	आलोयणा छत्तीसी		१७वीं	१	
१६७	४४५२(६)	आवडीजी आदिके छंद	सोमसुन्दर शिष्य	१८वीं	१३ वां	
१६८	२१११	आवश्यक पीठिका बालावबोध		१७वीं	३९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६६	७३४४	आवश्यक विधि प्रकरण	जिनवल्लभगणि	१५वीं	६	
१७०	११२२(५८)	आशा पुश्करी माता छंद		१६वीं	८१ वां	
१७१	४०५१	आषाढाभूति चतुष्पदिका	भावप्रभ	,,	२	
१७२	६२७	आषाढाभूति धमाळ	कनकसोम	१७७७	३	
१७३	५४१८(७)	,, चौपई		१६वीं	६७–१०१	
१७४	६६६	, धमाळ	,,	१७१४	२	
१७५	२१६७	,, ,,	,,	१८वीं	६	
१७६	३५७३(१०)	,, ,,	,,	१६वीं	३२–३३	
१७७	५१२१	,, ,,	,,	१८वीं	५	रचना १६३८
१७८	१०१२	,, रास	ज्ञानसागर	१८१३	९	
१७९	२०१५	,, ,,	,,	१८वीं	१२	
१८०	२०६५	,, ,,	,,	१७६५	८	
१८१	२३७४	,, ,,	,,	१६वीं	७२–९९	
१८२	३२४५	,, ,,	,,	१८७४	९	
१८३	३९१९	,, ,,	,,	१७५१	५	
१८४	३५५३	,, ,,	,,	१९०५	१६०–१६४	
१८५	३९२०	,, ,,	,,	१६७१	३	*
१८६	३५४६(१६)	आमथानजीरी वारता		१६वीं	१२२ वां	
१८७	२३९१	आज्ञाविचार गीत	हीरकलश	१७वीं	२३९ वां	
१८८	२०७७	इखुकारी संधी	खेमराज	,,	५	प्रथम पत्र अप्राप्त
१८९	२१६३	,,	,,	,,	२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९०	३५७३	इलुकारी संधी	लमराज	१९वीं	६०–६१	
१९१	२२१७(१)			१७६०	१–२	किसलगढमें लिखित
१९२	३५७३(४८)	इग्यारसकी कथा—गद्य		१९वीं	११९–१२०	अपूर्ण
१९३	४५७३	इंद्रिय पराजयशतक		१६२८	६	
१९४	७२७३			१७वीं	६	
१९५	४०४३	इलाकुमार चौपाई	ज्ञानसागर	१८४३	५	रचना १७१९
१९६	६५३०		,,	१८वीं	७	
१९७	९०७	इलाचीकुमार रास		१७५९	१७	ज्ञ स १७१९में रचित सोवपुरमें
१९८	९४९	,,		१७६५	५	
१९९	२०४५		,,	१८७२	९	
२००	२०९३			१७६८	१४	
२०१	१५९९	,,		१७९०	१७	
२०२	२०९७			१७७२	१७–२२	
२०३	२३७४(३)		,,	१९वीं	२०–२५	
२०४	३०३१	,,		१८वीं	११	
२०५	१५२२(१६)	इल्कघमन		१९वीं	१० वाँ	
२०६	७८६	ईश्वरी छन्द	कुशलकुशल	१८५१	४	
२०७	७११	ईश्वरी छन्द	,,	१९वीं	५	
२०८	११३२(४६)				६३–६४	
२०९	२०३९	ईसरशिक्षा	ईसर	१७वीं	२	
२१०	४९१४(२८)	उणतीसो भावना		१८७७	२४६–२४७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२५२	६०५	ओ(उ)खा हरण	प्रेमानन्द	१६०३	७४	
२५३	३२८६	,,	,,	१६वीं	३७	*
२५४	३८४१	औषधपुराण भाषा गद्य		,,	१२	
२५५	२३०६(३)	कृष्णध्यान	ईसरदास	,,	१४–१५	*
२५६	२१००	कृष्ण बारमास	किसनदास	१८वीं	१	
२५७	१८६८(४)	कृष्णरुक्मणी वेली	पृथीराज	१७६२	१–६७	
२५८	२०७०	,,	,,	१७२२	४६	
२५९	२०६६	,,	,,	१७६६	३३	
२६०	३५५७(२)	,, सटीक	,,	१७६१	१–६६	
२६१	३६४२	,	,,	१७३८	८१	
२६२	३६४३	,,	,,	१७६८	३५	
२६३	३५४८(४)	,,	,,	१८वीं	१–७३	
२६४	४८३८	,,	,,	१७४५	२४	लि.क. भाग्यविजय
२६५	४४५२(४७)	,,	,,	१८१७	८५–१००	लि.क प्रीतसौभाग्य
२६६	७७६६(४)	कृष्णलीला वर्णन		१८५६	२–७	चित्र १
२६७	६४२५	कृष्णजीरो व्याहलो		१६वीं	४	
२६८	३४७०	,, ,,		१८वीं	८	
२६९	७०३०	,,	पदमकवि	,,	६४	
२७०	२८२६	कृष्णस्मरण तथा अकलवेल	अर्जुनजी	,,	२	
२७१	२०५६	कक्काबत्तीसी	जीवो ऋषि	१६वीं	२	
२७२	२३६८(१६)	,,		,,	६०–६३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२७३	३५७३(५७)	कक्काभास	विद्याविलास	१९वीं	१५४वां	
२७४	७४४४(२०)	कक्कास्वाय	श्रावक चोथो	१८८५	३२४–३२६	
२७५	५२११	कछवाहोंकी वंशावली		१८८४	११४	*
२७६	२०४७	कथलो	ज्ञानविमल	१८८४	२	
२७७	४०४६	कनकावती चोपई	जिनहर्ष	१९वीं	२३	अन्तिम पत्र अप्राप्त
२७८	७७२०(२२)	कपटकुतूहल		१८वीं	९वां	*
२७९	४०४७	कपोत कपोतणीरी वारता		१८५४	१२	
२८०	६६३७(२)	कबीरजीकी वाणी	कबीर	१८११–१८१६	१०९–१८७	लि क रामदास
२८१	३५५७(१)	साखी		१९वीं	१–११	
२८२	२०१२	कयवन्ना चोपाई	जयरंग	१८२३	३१	
२८३	२०६०		”	१७७९	३९	
२८४	२१८४			१८वीं	२१	
२८५	२२०६		”	१७६८	१४	
२८६	३८७४	”	”	१८५५	१९	
२८७	३९२१	कयवना चोपाई	जयरंग	१८वीं	१८	
२८८	४०४८(१)			१८९२	२२	रचना १७४१
२८९	६७३६	”	गुणसागर	१७१६	१०	लि क भरथ
२९०	३८७५	रास		१८वीं	१५	प्रथम पत्र अप्राप्त
२९१	४०४९	”	”		५	लि क आर्या हीरां
२९२	२०९२	करणडू चोपाई	मतिशेखर	१७वीं	१०	*

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२९३	३७६७	करणकुतूहल सार		१८वी	९	भाषामें ग्रहसाधन प्रकार वर्णित है
२९४	३७५६	,,		,,	२९	
२९५	५९७६	कर्मग्रन्थपंचक	मतिचंद्र	,,	११२	
२९६	१४०३	कर्मविपाक		१९वी	७	भाषामें फलादेश वर्णित है
२९७	१४४४	,,		१९१९	१५	
२९८	३८१७	,,		१८१९	५	
२९९	४९१४(३३)	,, काण्ड	गुणकीर्ति	१८७७	२५१–२५५	
३००	२०८८	,, रास	वीरचंद	१८२०	९	
३०१	३५७५(१९)	करमछत्तीसी	समयसुन्दर	२०वी	८८–९१	मुलतानमें रचित
३०२	११२३(१२)	करसवाद	लावण्यसमय	१७वी	६९–७१	*
३०३	४४२५	कलावती चरित्र	विजयभद्र	१६७६	४	२रा पत्र अप्राप्त
३०४	३८७२	कलावती चोपाई	रायचंद	१८७३	५	
३०५	९३३	कलियुगमाहात्म्य		१८६८	२	
३०६	४०२०	कविकल्पलता	श्रीसार	१८७८	९	*
३०७	२३१४	कवित्त		१९वी	१	
३०८	३४३०	,,		१८वीं	३	
३०९	३५६२(११)	,,		२०वी	६७ वां	
३१०	३५६७(१०)	,,		१९वीं	११२ वां	
३११	४४५२(५४)	,,		१८वी	१०९–११०	
३१२	४४५२(७३)	,, गीत आदि		,,	१२२ वां	
३१३	४४५२(९५)	,,	उदेराज	,,	१३१ वां	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्त्ता आदि नाम	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१४	४६१५(२)	कवित्त गीत आदि		१८८७	२०–४१	
३१५	११२२(९६)	,, छप्प दूहा		१८८८	[illegible] वाँ	
३१६	३५४६(३)	जेठवारा दूहा आदि		१९वीं	३१–३६	
३१७	३५८७(२)	दूहा सग्रह		१८वीं	६८–१०१	
३१८	४४८२(१०३)	,, दूहा आदि	केसरसिंघ	,,	१३६–१४१	
३१९	३२६७(१४)	पद दूहा		१९वीं	१२९–१३१	
३२०	२०८५	,, बावनी	जिनहर्ष	१८५७	१०	
३२१	४४५२(२६)		उदयराज	१८वीं	२४–२६	
३२२	४४८२(४५)	,, सवया आदि		,,	६१ वाँ	
३२३	४४५२(६६)	कष्टावलोचक			१२६ वाँ	
३२४	२८९३(८१)	कनकरास्वप्न		१७वीं	१४३ वाँ	
३२५	४९१८(१६)	कागदरी नकल		१८८७	३९८–४०६	*
३२६	२१८३	कान्ह कठियारा चोपाई	मानसागर	१८८२	१४	
३२७	३५५४(५)	,, ,,		१९वीं	६५–९७	
३२८	३८७३	,, ,,	,,	१८४१	९	
३२९	४०५१	,, ,,		१८वीं	८	
३३०	४०५०	विवाहलो		१७०२	८	
३३१	३५९२(२)	काया नगरको कागद		२०वीं	१२–१६	*
३३२	१८२१	कालक कथा		१८वीं	६	
३३३	२१९५(१)	कालकाचार्य कथा		१९वीं	१–७	
३३४	७३७७	कालज्ञान भाषा	लक्ष्मीवल्लभगणि	,,	७	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
	२७८४	कालिका स्तोत्र	जयलाल	१६२७	२	
३३६	३५४७(८)	कालिकाजी रा दूहा-सोरठा	लधो	१९वी	८६–८७	
३३७	२३२९	,, स्तव	चत्रदत्त	१८९४	१	
३३८	२७८५	,, स्तोत्र तथा आरती	जयलाल	२०वी	२	
३३९	२२४६	,, की आरती		,,	१	
३४०	४०५२	कालीनाग दमण पवाडो		१८वी	७	
३४१	५४३०	काव्यविधान		१९वीं	३३–४०	जैन श्लोकको मन्त्र मान कर उसके प्रयोग का वर्णन किया गया है
३४२	२३७५(२)	काष्ठ घोडा विक्रमजीतनी वारता	सामल भट्ट	२०वी	६१–१०४	*
३४३	३८८०	किसनजीरी ढाला		१९वी	८	
३४४	११३१	कुडलियाबावनी	धर्मवर्द्धन	१८०७	९	
३४५	११५२	कुतुबशत		१६७०	६	*
३४६	७७५२(७)	,, री वात		१७२०	९९–१०४	लि.क माधो
३४७	२१४६	कुतुबुद्दीन शाहजादारी वारता		१९०२	१२	
३४८	७७२१(१०)	,,		१८२५	१६६–१७७	
३४९	३५६७(२७)	कुपति रासो		१९वी	१४७–१४८	
३५०	५९६१	कुमति विध्वसण चौपाई	हीरकलश	१७वी	७	रचना १६७७
३५१	९९३	कुमारपाल रास	ऋषभदास	१८८०	१०८	
३५२	१५६४	,,	हीरकुशल	१७वी	१८	रचना १६४०
३५३	४९०४(१)	केरडावाली चौथमाताजीरी कथा		१८६१	१–३४	लि क कल्याणसौभाग्य

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३५४	७१७२(१)	वैराट राजाकी कथा		१९३६	२७	
३५५	३५७३(५२)	केनवस्य यादि यादक		१९वीं	१३५ वाँ	
३५६	११२३(१४)	केशी गौतम संधि		१७वीं	७५–७६	
३५७	३५७५(७७)	प्रद्युम्नलाघ		२०वीं	३१६–३२६	
३५८	११२२(५६)	कोटेसरनो छन्द	विसराम (?)	१९वीं	८२ वाँ	
३५९	७३६	कोकशास्त्र भाषा (काम विलास)		१९१२	११	अन्त में 'काम समूह' नाम है
३६०	७३८			१८१४	१२	
३६१	१८३४		नरपद	१८वीं	५	
३६२	२८९३(४५)	गरतरगच्छनाम सप्तपद	हीरकलश	१७वीं	४ था	
३६३	२८९३(६०)	खरतरादिगच्छोत्पत्ति छप्पय	हीराणद		११४ वाँ	
३६४	२८९३(६)	खातरकादि विचार			१३२ वाँ	
३६५	५४१८(३०)	खिचड़ी रासा		१९वीं	१६८–१७०	
३६६	४०६०	खीची अचलदासरी रास		१८वीं	६	सं ३३ के समान
३६७	२१४३(२)	खी(री)च विजरी रास		१८६०	४–७	
३६८	४४५२(१३)	खजडला माताजीरी नीसाणी	मान कवीसर	१८०८	१६ वाँ	
३६९	४६८८	खर्टासिद्धि		१८४८	६	लि क चतुरविजयगणि
३७०	४६८९	„	महिमोदय	१८४८	६	लि क ज्ञानविजय
३७१	४४५२(८४)	खेतरपालजीरो छन्द	कवि देव	१८वीं	१२५ वाँ	
३७२	३५५०(५)	खत्राजीरो छन्द		१९वीं	३६–४०	
३७३	२३७४(१२)	गमालानो रास	लक्ष्मीरतन	१८५७	४३–४७	
३७४	१८३९(५)	गजकर्मनि चोढ़ालीयुं		१८२९	२३–२७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३७५	३५७५(१४)	खदकमुनि वोढालीयु		२०वी	६६–७७	
३७६	३५७३(३८)	गउडी पार्श्व स्तवन	जिनचन्द्र	१९वीं	१०१ वां	
३७७	४९१४(१४)	गजमुनि वीनती		१८७१	२०८ वां	
३७८	६४३७(२)	गर्जासहकुप्रर कथा		१८वी	२४–४८	अपूर्ण
३७९	३५७३(११)	गजसुकुमाल गीत	नन्नसूरि	१ वी	३३–३४	
३८०	३९२३	,, छढालीयो	केसव	१८वी	३	
३८१	१८१९	,, ढाल	शुभवर्द्धन	,	१–४	
३८२	९४७	,, विवाह		१७८०	७	
३८३	२०८२	,, सधि	मूलाऋषि	१६६५	८	
३८४	३५७५(२२)	,, स्वाध्याय		२०वी	९७–१००	
३८५	४०५६	गजसुकुमाल चरित्र		१८वी	१८	अपूर्ण
३८६	६५४१	,, रास		१८८७	८	लि.क सरूपचद
३८७	९७५	गणधरवाद वालाववोध भाषा		१९वीं	११	
३८८	२८९३(२३)	गणविचार चोपाई	हीरकलश	१७वीं	१३वां	
३८९	३४४०	गणित ग्रथ साठीसो वोहा	महिमोदय	१७५७	९	
३९०	४४५२(६९)	गणेशजीछन्द अमृतध्वनि		१८वीं	१२० वां	
३९१	३८११	गतेष्टकरण विधि		१९वीं	२	
३९२	३५६२(१)	गरब चितामणी	रामचरन	१९५६	१–११	
३९३	६०४१	गर्भोत्पत्ति स्तवन	श्रीसार	१८वी	३	
३९४	२२९९	गागातेलीरी वात		१९वी	२	
३९५	३५५३(५)	गाफल लावणी	विनैचद	,,	१५७–१५९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३९६	३५५६(५)	गि ोलीरी कथा		१९वीं	६६–७०	
३९७	३५५८(२)	बात			१–११	
३९८	५४५८(४)	, वारता		१८५६	१–२७	जगमाल वारता
३९९	३५६२(१८)	गणगोरकी वारता		२०वीं	१४६–१५१	
४००	८८४	गिरनारकी गजल	कल्याण	१८८८	३	
४०१	४९१५(५)	गीत		१८८१	१३४–१३५	
४०२	४८१५(१५)	कवित्त			३६५–३६७	
४०३	४१३६	गीतगोविन्द भाषा	टी भगवद्दास	१८वीं	४७	अन्य पत्र अप्राप्त
४ ४	७५५९	सभाष		,	४	
४०५	४४५२(६०)	गीत सवया आदि			१२८ वां	
४०६	२२६०	संग्रह	जवानसिंह आदि	२०वीं	१२	
४०७	४६०४(३)	गीता माहात्म्य			६५ वां	
४०८	२८९३(१०३)	गुजाकांचन संवाद		१७वीं	१६३ वां	
४०९	११२३(२३)	गडी पारसनाथ छन्द	कुशललाभ		८२–८३	
४१०	११४३(२)	गुण एकावली माहात्म्य	सांगा भट्ट	१९वीं	३८–९८	
४११	४०२२	गुणकरड गुणावली चौपाई	ऋषि दीप (?)	१८२१	२२	
४१२	४०५३	, ,		१९वीं	२७	लि क आर्या नाथी
४१३	४८२०	रास		१८७४	२०	
४१४	६०२७	"		१८३९	१८	स १८५७ में रचना
४१५	६५४२	,		१८३३	३६	लि क नवनिधिविजय
४१६	२१०३	गणरत्नाकर छन्द	सहजसुन्दर	१७४६	१९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४१७	२०२३(३)	गुणसागर भास		१७३४	३–६	
४१८	३५६२(५)	,,		१६६७	२१–३४	
४१९	४०१३	गुणहरिरस		१७६६	७	
४२०	३५१४	गुणावली कथा चोपाई	ज्ञानमेरु	१८वी	८	
४२१	२०३३	,,	,,	१७४३	७	
४२२	३८८१	,,		१८४८	२४	
४२३	३९६८	,,	दीपो	१८७१	२६	स १७५७ मे रचित
४२४	९५०	गुणावली गुणकरडरी वात		१८वी	२–४	
४२५	४०५५	,, चरित्र चौपई	शातिहर्ष	१८७४	२१	रचना स १५१३
४२६	९०९	गुणावली बुद्धिप्रकाश रास	श्रुतसागर	१७वी	१०	
४२७	३९२४	गुणावली रास	गजकुशल	१७१८	१८	
४२८	५०६४	,,	,,	१९वी	२६	
४२९	३५६४(५)	गुरुचार		१८६१	२३–३२	
४३०	१९८४	,, विचार		१७वीं	३	
४३१	५१०३	गुरुचेलारी कथा		,,	२	त्रुटित पत्र
४३२	३५७५(७३)	गुरुजी गुहली		२०वीं	३०७ वां	
४३३	२८६३(१२१)	गुरुपरम्परा गुर्वावली	हीरकलश	१७वी	१७६–१७७	
४३४	७१८०	,, ढाल	ज्ञानविमल	१९वो	१२	
४३५	३५७५(२५)	गोडीजिन स्तवन	प्रीतिविमल	२०वी	१०४–१०९	
४३६	१०९२	गोडीजीरो छन्द		१८९४	५	
४३७	३५७५(१०)	गोडी पार्श्व जिन चौदा स्वप्नस्तवन	समयरग	२०वीं	४६–४९	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४३८	११२२(५६)	गोडीपार्श्व छंद		१९वीं	७४-७५	
४३९	२०५१		रूपसेवक	१८वीं	९	
४४०	२२१३(१)	वद्ध स्तवन	प्रीतिविमल	१८३८	१-२	
४४१	२०५२		नमविजय	१८२९	४	
४४२	५४५८(३)	गोतम रासा		१८३८	४	
४४३	७५६७	गोतमपच्छा चौपाई		१७५६	१३	लि क मुनि गगजी
४४४	६११८	„ बालावबोध	जिनसूरि	१८८३	६८	
४४५	५४३६(७)	गोतम लघुस्तवन	समयसुन्दर		२८-४०	
४४६	५०६६(२)	स्वामी रास	उदयवंत	१९०६	३-८	
४४७	५४३६(३)				१७-२६	
४४८	७४४४(११)	गोतम रासो		१८८१	२०५-२१२	
४४९	३४६६	गोपीचंद राजापद		१९वीं	१	
४५०	३५४६(३)	गोरखनाथजीरो छंद			१० वां	
४५१	३०२७	गोरखप्रमोद भाषा		१७८४	२	
४५२	४४५२(५)	पत्ता		१८वीं	१० वां	
४५३	३५४६(५)	गोरभजीरो छंद		१९वीं	११ वां	
४५४	२१६६	गोराबादल कथा	जटमल	१८२८	९	
४५५	२३६०(३)	की बात	"	१९वीं	११-१७	
४५६	३५५५(२५)	री बात			१५१-१५६	
४५७	३३८४	चोपाई	भाग्यविजय	१८ ३	३१	
४५८	३३८५		हेमरतन	१९वीं	२९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	गन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४५९	३०२९	गोराबादल चौपाई	लब्धोदय	१७९५	२५	
४६०	३३८६	,, ,,	,,	१७५६	४१	स १७०७मे रचित
४६१	४१५१	,, कथा आदि गुटका		१८वी	९०	१४ कृतियोका सग्रह
४६२	७७५२(६)	,,	हेमरतन	,,	५७–९५	सादडीमे रचित
४६३	४९२४(२)	,,	जटमल	१७८७	६–१५	लि क जयसौभाग्य
४६४	२३७७(५)	गोरावणे वीरनो सपषरो तथा घोडावर्णन	माधौ	१९वीं	३०–३१	
४६५	३५७५(४१)	गौतम प्रश्नोत्तर स्तवन	ऋषभ श्रावक	२०वीं	१९९–२०६	
४६६	१८३९(१६)	गौतमरास आदि		१८३३	११८–१४३	
४६७	१८३९(८)	गौतमाष्टक	लावण्यसमय	१९वीं	४०–४१	
४६८	६१८	ग्रहण विचार		,,	३	
४६९	१७७७	,,		,,	२	
४७०	२५७४	,,		,,	२	
४७१	६४८	,, साधन		,,	२	
४७२	६७४	,, अनेक विचार		,,	६	
४७३	२८९३(१४)	ग्रहभाव फल		१७वीं	९ वां	
४७४	३२१४	ग्रहलाघवसारिणी विधि		१९२८	९	
४७५	३२४८	ग्रहस्पष्टकरण विधि		१८वीं	६	
४७६	५२७९	ग्रहणविचार टीका		,,	३	
४७७	४७२९	घटीज्ञान		,,	१	
४७८	४४५२(७६)	घूघूचक्र		,,	१२३ वां	उत्तूक सम्बन्धी शकुन-विचार, अन्तमे नाहरखान राजसिघोतरो छन्द है

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४७९	३५७३(८)	घोडावणन तथा वर्षावणन दूहा		१९वीं	३०–३१	
४८०	४९२४(१०)	घोडांरा वखाण		१७६३	११–१२	
४८१	४४५२(९३)	मणाव		१८वीं	१३० वां	
४८२	१८१७	चउपरवीचउपई	समयसुन्दर		२०	
४८३	७७५	चउसठी (योगिनी) छंद तथा जगदम्बा छंद		१९वीं	१	
४८४	५१२३(२)	चक्रकेवली		१८वीं	२–११	
४८५	३५७५(७४)	चक्रेश्वरी स्तवन		२०वीं	३०७–३०८	
४८६	७१५४	चतुरमु द्रव्य प्रकिरण		१८७७	३१	
४८७	२८९३(३९)	चतुर्विंशति जिनगणधर संख्या बीनती	हीरकलश	१६१९	८४ वां	
४८८	२८०३(३३)	चतुर्विंशति जिनपंचकल्याणक स्तोत्र		१७वीं	६६–६९	
४८९	५३७६(२१)	स्थानक सूची			२४३–२४८	
४९०	६६१२	चर्चा समाधान		१९वीं	२३६	
४९१	४९१४(५७)	चारित्ररत्नत्रय गीत		१८७७	३१२–३१३	
४९२	९५९	चातुर्मासिक व्याख्यान बालावबोध	सूरचंद्र	१८वीं	१२	
४९३	३३८३	,		१७वीं	२८	
४९४	६३६३	व्याख्यान पद्धति		१९११	७४	लि क टंकचंद
४९५	५१०५	चार जणारी बात		१९वीं	३	
४९६	७२३१	चार भावना (गद्य)		१७वीं	११	
४९७	६२९२	चारित्रप्रत्यक बुद्धचरित्र	समयसुन्दर	१६७६	२७	प्रथम पत्र अप्राप्त
४९८	३५६०(१०)	चावडारो छंद	चुनीलाल	२०वीं	६६–६७	रचनास्थल–सोभन

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४९९	३२०५	चित्तोडकी गजल	खेतल	१८वी	२	स. १७४८में रचना
५००	३५५०(४)	,,	,,	१९वीं	३७–३९	
५०१	४४५३(३)	,,	,,	१८वीं	६	
५०२	४८०६	,,	,,	१९वी	२	
५०३	४८२२	,,	,,	१७८३	५	३रा पत्र अप्राप्त
५०४	३५४६(१७)	चित्तोड, जोधपुर, अजमेर आदिकी ऐतिहासिक हकीकत		१९वी	१२३–१२५	
५०५	४४५२(१०)	चित्रबन्ध काव्य		१८वी	१३४–१३५	
५०६	३८८६	चित्रसेन पद्मावती चोपाई	रामविजय उपाध्याय	१९वी	१५	
५०७	३५७३(५३)	,, सभूत चोढालीयो	जीवराज	,,	१३६ वां	
५०८	४७९७	,, चौपई	ज्ञानसागर	१८वी	३५	
५०९	२८९३(७८)	चिहुत्तरजत्र विधि	हीरकलश	१७वी	१४१ वां	
५१०	४२८७(१४)	चेतन गीत	मनराम	१८वी	११५–११६	
५११	७८१०(३)	चेतनदासकी वाणी	चेतनदास	,,	२३०–२९८	
५१२	२३६८(११)	चैत्यवदन	कमलविजय	१८४८	४० वां	
५१३	४४५२(६१)	चोवोली राणीरी कथा	जिनहर्ष	१८वीं	११८	
५१४	७४४४(१३)	चोढालियो (दानशील तपसवाद)	समयसुन्दर	१८८५	२४५–२५३	
५१५	३१५८	चौथकी कथा		१८३३	४	
५१६	२१३४	,, मातारी वात		१९वी	२	
५१७	३२७७	,, ,, कथा		,,	४	
५१८	३५४७(१४)	,, ,,		,,	९२–९३	

क्रम	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५१९	३५६७(२२)	चौबोली कथा		१९वीं	१३८-१४१	
५२०	४०६१			१८वीं	३	बिलाड़ामें लिखित
५२१	३५६३(१)	चौबीस एकादशीकी कथाएँ		१७८६	१-६०	
५२२	२८६३(५३)	, गति आगति विवरण		१७वीं	८६-९०	
५२३	६०९७	चौबीस चोक	अमृत कवि	१८५३	७	लि भ० भानुकीर्ति, जयपुर
५२४	६६१८	चौबीस तीर्थंकरोंकी पूजाविधि		१९वीं	६६	
५२५	१८३९(११)	दंडक स्तवन	धर्मविजय	,	४८-५२	
५२६	३२०४	चौबीसी स्तवन	जिनराज	१७६१	६	लि स्था कानू
५२७	३५७५(१)		देवचंद्र	२०वीं	१-२४	
५२८	३५७५(३३)	,	जिनराजसूरि	,	१४२-१५४	
५२९	११२२(२९)	चौबीस सातनां कवित्त		१९वीं	२८ वां	
५३०	२३६८(८)	चौरासी बोल प्रास्ताविक आदि		,	५१-५२	
५३१	७४२५	चौसठ मागणा विचार			१३	
५३२	२३६०(७)	चंदकवररी वात		,	८५-६१	
५३३	३५५५(२६)		हंस कवि	,	१५६-१५९	
५३४	३५६२(१२)	, वारता	,	१६७०	६८-८१	
५३५	३५७३(४४)			१८ ॥	१०७-१०८	
५३६	४१४८	,		१८१६	१८	
५३७	४९१५(१०)			१८८७	३४८-३६०	
५३८	४९११(३)		कविराय	१८३०-१८३२	१-६	
५३९	५३४१(२)	तथा स्फुट कवित्त		१९वीं	५८-६७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५४०	७७५३(११)	चदकवररी वात	कलश कवि	१८३७	४७–६०	
५४१	५४५८(१)	,, वारता	सकलकीर्ति	१८३८	४	
५४२	१८२४(१)	चदनबाला चौपाई	देपाल	१६वी	१–४	
५४३	७३७६	,, भगवती गीत	भक्तिलाभ	१८वी	१	
५४४	६१६	चदनमलयागिरि चोपाई	भद्रसेन	१८६६	८	विक्रमपुरमें रचित
५४५	१००६	,,	,,	१८वी	४	
५४६	४०५८	,,		१८६५	१०	लि क उमेदचन्द
५४७	४४२१	,,	यशोवर्द्धन	१७८६	११	रचनाकाल १७४७
५४८	४४५२(४८)	,, वारता	भद्रसेन	१८०६	१०१–१०२	
५४९	६३३६	,, चौपाई	,,	१८३४	८	
५५०	७०७६	,, ,,		१८वीं	५	
५५१	५०८४(२)	,, री वात सचित्र		१८३६	२६–३५	३४ वाँ पत्र अप्राप्त
५५२	७०७२	चदराजा चरित्र	मोहनविजय	१६वीं	१८५	अपूर्ण, प्रथम व अंतिम पत्र अप्राप्त
५५३	४१५	,, रास		,,	६६	अंतिम पत्र अप्राप्त
५५४	६८५०	,, चौपाई	विद्यारुचि	१८०६	४१	स. १७७७, सिरोहीमे रचित
५५५	६६०	,, रास	मोहनविजय	१८८५	१६०	सं० १७३८, राजनगरमे लिखित
५५६	६६६	,, ,,	,,	१८६०	७७	
५५७	२०२२	,, ,,	,,	१८११	६६	
५५८	२०८४	,, ,,	,,	१८२५	१०४	
५५९	३५५४(२)	,, ,,	,,	१८७६	१–६०	
५६०	३८८३	,, ,,	,,	१८३१	८०	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५६१	३८८२	चन्दराजा रास	लब्धिरुचि	१८२७	६१	
५६२	३९७०	"	"	१८६६	१३०	
५६३	३९२५(१)	"	"	१७७०	५३	प्रतमे पार्श्वनाथ गीताके ३६ पद्य लिखे हैं
५६४	३९९९	"		१८२१	७६	
५६५	४०५९	" "	मोहनविजय	१८१०	८२	
५६६	६३४९(२)	,, नो रास	"	१९०६	७०–३५४	लि क हुकमचन्द पाड
५६७	१२४९	" "	"	१८४७	६८	स० १७८ में रचना
५६८	७४२०	"		१८४९	१२३	लि क पृथ्वीराज
५६९	११४३(१)	चन्दराजकी वात	विक्रमजी	१९वीं	२०–३५	
५७०	६६१	चन्द्रग्रहणाधिकार			५	
५७१	२८९३ (१३८)	चन्द्रगुप्त सोल स्वप्न सज्झाय	हीरकलश	१७वीं	२४३–२४४	स० १६२२में राजलदेसरमें रचित
५७२	३५७५(९४)	चन्द्रप्रभजिनस्तवन	नयचन्द्र	२०वीं	२१६–२१७	
५७३	७४०७	चन्द्रलहा चौपाई	मतिकुशल	१७७८	१८	
५७४	९५५	चन्द्रलहा चोपई		१७७४	२०	लि स्या नापासर
५७५	१८३९		हर्षमूर्ति	१७वीं	५	
५७६	२२२९		मतिकुशल	१९७५	२६	
५७७	३५०३		"	१७६५	२६	
५७८	३५३७			१८३०	२३	
५७९	३५५०(३)		"	१९वीं	१३–३६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८०	३८८४	चद्रलेहा चोपई	मतिकुशल	१७६१	२७	लि स्था णीपाड
५८१	३६२६	,,	,,	१७७७	१६	लि स्था घं(खं)रवा
५८२	३६७१	,,	,,	१७७४	१३	
५८३	४०६०	,, चरित्र चौपई	,,	१८०५	१६	स १७२८में रचना
५८४	४७८६	,, रास	,,	१६वीं	२४	
५८५	४७६५	,, ,,	,,	१८वीं	२६	
५८६	२२११	चपक श्रेष्ठि चोपाई	समयसुन्दर	१७वी	१०	
५८७	५०६६	चद्रायणा कथा	करमचन्द	१८वी	२	
५८८	५३७६(१८)	,, ,,	मलयकीर्ति	,,	२११–२१३	
५८९	४७८६	चद्रार्की		,,	११	
५९०	५०६१	छत्तीस अध्ययन गान	सागरचन्द्र	१६४२	१५	लि क हर्ष
५९१	३५४६(११)	छत्तीस राजकुल नाम		१६वीं	७४ वां	
५९२	२८८३(१०८)	छाया ज्ञान		१७वीं	१६५	हीरकलशद्वारा लिखित
५९३	२८६३(११६)	छिन्नवइ जिन नमस्कार	हीरकलश	,,	१७४–१७५	
५९४	२८६३(४३)	,,	,,	,,	८६–८७	
५९५	४४५२(७८)	छीक चक्र		१८वीं	१२३ वां	
५९६	४३०८(३)	छीतरदासजीका सवैया	छीतरदास		४४७–४५५	
५९७	३६७०	छूटक दूहा		१६वीं	३	
५९८	६३२	ज्योतिष (सार दूहा)	मेघराज	१८६६	४	
५९९	३५४७(३)	,, दूहा		,,	१ ला	
६००	३५४७(११)	,, ,,		,,	८९–९०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६०१	४८४७	ज्योतिष वार्ताएं		१८४३	३०	
६०२	५५२८	, सार	कवि कृपाराम	१९०७	४७	लि क रामकुवार
६०३	३५४६(१३)	जलरा मुलरारी वारता		१९वीं	१०७–११३	*
६०४	११२२(३)	पगडूनो छंद	लीलो		२ रा	*
६०५	११२२(१८)	साहनो जस			१० वां	*
६०६	३५५४(२१)	जगदेव परमाररी वात		१९२४	३२–४९	
६०७	४४५२(६४)	जगदेव पमाररा कवित्त	ककाली भाटण(?)	१८वीं	११९ वां	
६०८	७१७२(२)	री वात		१९३६	१–३५	
६०९	७७५३(१४)			१८३७	७१–८८	अपूर्ण
६१०	४९१६(१)	,		१८७५	४४	
६११	४४५२(७१)	जन्त्र भरथरा कह्या श्लोक आदि		१८वीं	१२१ वां	
६१२	६२०	जन्मकुण्डली विचारादि		१९वीं	६	मारवाड़के जसवंतसिंह और जयपुरके राजाका युद्ध वर्णन
६१३	४८४८	जन्मपत्री गणित		,	२९	
६१४	४५२४	, (क्रमग्रहतुल्य)			२५	
६१५	६४३४	, प्रकार		१७५९	६	
६१६	७४२७	जम्बू अज्झयण		१८८०	५८	प्रथम पत्र अप्राप्त
६१७	४२७३	, गुण रत्नमाल		१९वीं	३३	
६१८	६२९८	"	आणद जेठमल	२०वीं	३६	
६१९	४१५७	चरित्र रास	पदमचंद मनि	१९वीं	३३	लि क परतावाई स्था अजमेर
६२०	७०४६	,		१८७२	५५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६२१	७५३३	जम्बू चरित्र रास		१७६६	६०	
६२२	७६०३	,,		१८६१	११३	
६२३	६२४	जम्बू पृच्छा रास	वीरमुनि	१८८६	१३	स १७८८मे पाटणमे रचित
६२४	१०१०	,,	,,	१८१६	१२	स १७२८में पाटणमें रचित
६२५	५३७६(३)	जम्बू स्वामी कथा			४२-८०	लि. क विहारी,चूरूमध्ये लिखित
६२६	७३५२	,,		१८६६	२०	लि क. माणकचद
६२७	६७३५	,,		१८५६	७	
६२८	६७८१	,,		१६वीं	४	
६२९	३३७६	,, चरित्र		१७वीं	१२	
६३०	३४७१	,, ,,		१८वीं	१६	लि स्था चाटसू
६३१	२२३१	,, चोपाई	चद्रभाण	१८६३	३६	सुवाई ग्राममें लिखित
६३२	३४७२	,, ,,	देपाल	१५४८	८	स १५२२में रचित
६३३	३५७३(१४)	,, ,,	,,	१६वी	३८-४२	जीर्ण प्रति
६३४	२१३१	,, ,,	पद्मचद्र	,,	५३	१५ से २३ पत्र अप्राप्त
६३५	३२८८	,, रास	नयविमल	१६४६	४६	स १७५४में लिखित
६३६	३४७३	,, ,,	राजपाल	१६५६	३४	स १६४२मे रचित
६३७	३५६४(७)	जमानारा दूहा महामाईवायक		१८६१	३५-४३	
६३८	३६२८	जयविजय चोपाई	धर्मरत्न	१७वी	२८	स १५५१में आगरामें रचित
६३९	६८८४	जयसुख वैद्यक		१७३३	८	लि क मतिविमल
६४०	५४१८(१३)	जलगालण विधि		१६वीं	११४-११६	
६४१	३५७३(५५)	जलाल गहाणीरी वारता		१८१२	१३६-१५१	लि स्था ऊबरी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६४२	३५४६(८)	जलाल महाणीरी वारता		१९वीं	६०-६७	
६४३	४४५२(३२)			१८०७	३५-४०	
६४४	४०६२	,		१८६०	२०	लि [redacted] वेचद
६४५	७७६६(५)	"		१८५६	२-४२	
६४६	५८६५	जलान वूबना वारता सचित्र		१८वीं	३२	चि स १२
६४७	४२२	ज्वरनो छंद	कांति	१८३८	१	
६४८	२३६२(७)	जसवतसिंहजीरा कवित्त		१८वीं	७ वां	*
६४९	३५४८(६)	तथा अजीतसिंहजीरा कवित्त		"	१	*
६५०	११२२(४६)	जमालखारी नीसाणी		१९वीं	६२-६३	*
६५१	४०६४	जांमवती चोपई	सूरसागर (?)	१८७७	७	लि स्था बीकानेर
६५२	३४७४	जालोर पार्श्व विविध ढाल स्तवन	पुण्यनधि	१७वीं	५	*
६५३	६४६	जालधरपुराण	हरदास	२०वीं	४३	
६५४	४८१७	जिणरस	वेणीराम	१८४१	१७	
६५५	३५७५(३१)	,	"	१९वीं	१७०-१७४	स १७२६में रचित
६५६	२८६३(१३३)	जिनकल्याणकस्तवन	हीरकलश	१६२१	१९५-१९७	
६५७	२८६३(१२२)	जिनचद्रसूरि गीत	,	१७वीं	१७७ वां	
६५८	२८६३(१२४)	,	"	,	१८२-१८६	
६५९	२८६३(१२५)	,			१८६-१८९	
६६०	२८८३(९४)	, स्तुति	विल्ह		१६० वां	
६६१	२८६३(३)	जिनप्रतिमाधिकार चोपाई	हीरकलश		२-३	स १६२४में रचित

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६६२	३५५५(३१)	जिनरस		१९वी	१७०–१७४	
६६३	३५७५(५०)	जिनप्रतिमा स्थापन स्तवन	जिनहर्ष	२०वी	२४१–२४८	
६६४	३९८५	जिनरग बहुत्तरी	जिनरग	१८वी	२	
६६५	३५७५(५४)	जिनरक्षित जिनपाल चोढालियो	उदयरतन	२०वीं	२५२–२६०	
६६६	३५७५(६२)	जिनवाणी स्तुति	शिवचद्र	,,	२९४–२९५	
६६७	२३६८(१६)	जिनवीनती	कनककीर्ति	१९वीं	५०–५१	
६६८	३५७५(७१)	जिनहर्षसूरि भास		२०वी	३०५–३०६	
६६९	३५७५(६६)	,,	शिवचद्र	,,	२९८–२९९	
६७०	२८९३(३५)	जिनहससूरि गीत		१७वी	६९ वाँ	
६७१	२१२५	जिनाज्ञा स्तवन सविवरण	नेमिसागर	१८वीं	५	
६७२	५०७३	जिनेश्वर पूजा पद्धति		,,	१९८	
६७३	७४४४(३)	जीव विचार		१८८५	१२१ -१२९	
६७४	३२००	जीराउला पार्श्वनाथ स्तवन	सोमविजय	१७४५	३	
६७५	४९१४(२६)	जीवसिखामण रास	प्रभुचद्र	१८७७	२४२–२४४	स १८५८मे रचित
६७६	४९०५(७-९)	जुवानीरा दूहा आदि			३१–३६	
६७७	३५५५(१३)	जैतसी उदावतरी वारता		१९वी	९०–९५	
६७८	५४५६	जैन बोल सग्रह		,,	५३	
६७९	३५४३(६)	जोग पावडी	गोरखनाथ	१८८५	१०–१४	*
६८०	२५८३	जोग बत्रीसी	सोम	१८वी	१	*
६८१	४९१४(५४)	जोगीरासा	जिनदास	१८७७	३००–३०२	
६८२	५४१८(२०)	,,	,,	१९वीं	१४३–१४५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लखनीय
६८३	५४१८(२५)	जोगीरासा	भगोतीदास	१७वीं	१५२-१५४	
६८४	४२८७(४)	जोगी रासो	जिणदास	१७२६	१४-१८	लि क रामचद्र
६८५	२३०६(१)	झाडो		१६वीं	१-६	
६८६	५४१८(३१)	ढडाणा गीत		,	१७०-१७१	*
६८७	११२२(१२)	ठाकरपचीसी			७ वाँ	
६८८	३५६२(४)	ढोकरीरो वात रो चटकलो		१६५६	१८-२०	
६८९	६८४१	ढाणपट्ट आदि		१६वीं	६६	
६९०	४०६७	ढालसार	चोथमल		१६	रचना स १८५६
६९१	३८८७	ढालसागर	गुणसागर		१३१	स १६७६ में रचना
६९२	३६७२		"		६६	
६९३	६१२२	,	केशराज	१८वीं	१०१	
६९४	६७३७			१८६७	११६	लि क खुशालचद
६९५	७२२४	,	गुणसागर	१८वीं	७७	
६९६	७३७५		,	१७६८	७६	
६९७	४०३३	प्रबन्ध	,	१७७०	१०४	
६९८	४०६६	,		१७५६	८६	लि क ओघमजी
६९९	६१३	ढुढक पवाडो	अविचळ (?)	१८७४	६	
७००	११२२(२३)	ढुढियानो छद तथा सवया	प्रेमकवि	१६वीं	१६ वाँ	
७०१	११४४(१)	ढोलामारवणी चोपई		,	१-२८	
७०२	२२०७	ढोलामारू री वार्ता		१८२८	८	
७०३	१८८१(२)	ढोलाजीकी वात		१६वीं	२५-६६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
७०४	५०८४(१)	ढोलामारू सचित्र		१८३६	१४	चि स ३६
७०५	७७२०(१)	ढोलामारू चोपाई	कुशललाभ	१७५६	१–२३	
७०६	६४३८	ढोला मरवणी ,,	,,	१८वी	२४	स. १६७३ में रचना, लि स्था.–जेसलमेर
७०७	५८६६	ढोला ,, रा दूहा सचित्र		,,	६१–११४	स १५३०मे रचित, चि सं ३३
७०८	७७४७	,, मारूनी वात	कुशललाभ		५६	
७०९	६७२०	,, ,, रा दूहा		१९वीं	४७	
७१०	४९२४(१३)	,, ,, री चौपाई	,,	१७७०	१–३४	
७११	३५७३(२)	ढढणस्वाध्याय	जिनहर्ष	१९वीं	१७ वां	
७१२	७७४८	तर्कप्रबन्ध	सरूपराम	,,	५७	
७१३	७००७	ताजिकसार भाषा		१८२०	२९	
७१४	३५६७(२५)	तारादे लोचनारी सज्झाय	हर्षकुशल	१९वीं	१४६–१४७	
७१५	२३६८(५)	तारातबोलरी वार्त्ता			३७–४०	*
७१६	२५८१	तिथ्यानयन टीका		१८वीं	१	
७१७	१७४६	तिब्ब सहावी फारसीकी भाषा	सीताराम	१८३०	५२	
७१८	४८७५	तुरक शकुनावली		१८५०	२९	
७१९	११४४(६)	तेजपाल व्ययवर्णन तथा नागोर चित्तौडादिके ऐतिहासिक सवत्		१९वीं	४८ वां	*
७२०	७५३५	तेजसिंहजीका सवैया		१७४३	१७	प्रथम पत्र अप्राप्त
७२१	४९१४(५०)	तेरह काठिया		१८७७	२७९ वां	
७२२	७६०४	तदुल वेयालिय पइन्न	पाशचद	१८३३	४१	लि क मोतीचद डूगरसी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७२३	२३६२(१२)	तवावली कथा	हरजी जोशी	१८वीं	७	
७२४	७२६५	थावच्चा चोपई	समयसुन्दर		१८	
७२५	३५७५(७६)	थावच्चा मनि चोढालियो	क्षमाकल्याण	२०वीं	३११–३१६	
७२६	२२२८	, सुत चोपाई	राजहरप	१८वीं	१७	
७२७	३८८८		समयसुन्दर		७५	स १६६१में रचित
७२८	४६०४(२)	थावर वेशतांगी बात		१८६१	३५–६५	लि क कल्याणसौभाग्य
७२९	४०६८	थूलभद्र नवरसो	उदयरतन	१८४६	५	॥ १७५६मे रचित
७३०	४८३२	,	,	१८५२	८	लि क राजविजय
७३१	६२५५	,		१८वीं	२	
७३२	७४४४(१४)		,	१८८५	२५३–२६०	
७३३	३५७३(२४)	थभण पार्श्वनाथ स्तवन	कुशललाभ	१९वीं	६९–७०	
७३४	७४२१	दडकसस्तवक			६	
७३५	७४४४(५)	प्रकरण		१८८५	१३६–१४३	लि ग नमविजय
७३६	१६२१	द्रव्यसग्रह बालावबोध	पवत धर्मार्थी	१६८९	४५	
७३७	१८२६	द्रौपदी चोपाई	कनककीर्ति	१७०७	२०	स १६९३ में जसलमेरमे रचित
७३८	२१३२	,		१७२९	२६	
७३९	३४७५		,	१७१८	३६	डोल ग्राममें लिखित माडवगढ़ पार्श्वे
७४०	३५३८		॥	१८वीं	३१	
७४१	६९६	द्रौपदी रास	समयसुन्दर	१८५६	२०	॥ १७००में अहमदाबादमें रचित
७४२	६५३१	,	कनककीर्ति	१८वीं	८१	जसलमेरमें रचना

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
७४३	६३५९	द्रौपदी रास	कनककीर्ति	१८१५	४०	
७४४	६४१९	द्वादश भावफल		१९वीं	४	
७४५	१९९४	द्वादश भावफल		१७वीं	४	
७४६	२११९५(१)	दत्त ब्राह्मण कथा		१९वीं	७ वां	
७४७	६४४६(५)	दत्तलालाको कक्को	दत्तलाल	,,	५–११	
७४८	१८३९(१०)	दशपच्चक्खाण वर्णन	रामचद	,,	४४–४७	
७४९	४९१४	दर्शनबत्तीसी		१८७७	२७७–२७८	स. १८५४में रचित
७५०	२१७५	दशवैकालिक भास	राममुनि	१७वीं	२४	
७५१	९८६	,, स्वाध्याय	वृद्धिविजय	१९वीं	७	
७५२	२८९३(८७)	दशाविचार कोष्ठक		१७वीं	१४९ वां	
७५३	२८९३(११)	दशार्णभद्र गीत	हीरकलश	,,	६–८	६, ८वां पत्र अर्ध-त्रुटित
७५४	६५४४	,, चौढालियो	वीवो	१९वीं	३	लि स्था अहिपुर
७५५	६३९९	दशावली		,,	६	लि क. उपाध्याय पद्मउदयगणि
७५६	३५७३(५)	दाढाला एकलमल्ल वराहरी वारता		,,	१८–२२	स २२०के समान
७५७	३५५९(६)	,, री वारता		,,	१–१०	,,
७५८	४१४९	,, री वारता		१८१७	२३	,,
७५९	११२२(६८)	दातार सूरनो सवाद		१८८८	८७–८८	
७६०	४३०८	दादू वाणी आदि गुटका		१८वी	४१०	विभिन्न सतोके ४४४० पदो का सग्रह
७६१	६९२६	,,		१७८७	२९८	
७६२	६९३७(१)	,,		१८११	१०९	लि क रामदास

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७६३	६६४८	दादूजी [redacted] शब्द		१८००	७८	आद्यन्त शोभन
७६४	६६५४(१)	,,		१९वीं	६५	
७६५	६६४६	दादूजीकी साखी		१८६६	६६	लि क लक्ष्मणदास
७६६	६६५०			१८वीं	६७	
७६७	२१०१	दान लीला		१९वीं	१ला	
७६८	८८१	दानशील तपभावना संवाद	समयसुन्दर	१८वीं	४	[redacted] १६६२में सांगानेरमें रचित
७६९	९५२	,,	,,	१९वीं	४	
७७०	९९५	,,	,,	१७वीं	६	
७७१	१८३९(७)		,,	१८२९	३२–४०	
७७२	२०४२(२)			१७८३	९–१२	
७७३	२०८९	,,		१७०५	६	
७७४	२३७४(११)	,,	,,	१९वीं	३९–४२	
७७५	३२५६			१८४१	५	कृष्णगढमें लिखित
७७६	३२७१	,,		२०वीं	१८	
७७७	३५७३(५४)		,,	१८१०	१३७–१३९	
७७८	३५७५(३६)		,,	२०वीं	१७३–१८१	
७७९	३८६१		,,	१८वीं	४	
७८०	३९४७		,,	१९वीं	४	
७८१	५४३६(९)				५४ वाँ	
७८२	५४३६(११)		दयाण भद्दराज	,,	४६–५९	
७८३	६८४५	,,			४५	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८२६	९५०(३)	धर्मवुद्धि पापवुद्धिरी कथा		१८वीं	५-६	
८२७	३५५५(२३)	धर्मसिंघ बावनी	धर्मवर्धन	१९वीं	१४६-१४९	
८२८	५२२३	धर्मोपदेश		,,	१३	प्रथम पत्र अप्राप्त
८२९	३५४९(१४)	धरातीर्थ गीत आदि		,,	७५-७७	
८३०	१८८२(१३९)	ध्रुव चरित्र	परमानंद	,,	७२-७५	
८३१	२३६०(१०)	ध्रू चरित्र	गुपाल (?)	१८४७	३७-४६	
८३२	४८०८	धामना वणन		१९वीं	६	
८३३	५४३६(१२)	नरकरो चोढालियो	गुणसागर	१८५३	३	
८३४	८७७	नरसी मामेरू	प्रेमानंद	१८९१	१५	
८३५	६९५४(२)	नरसी माहेरो		१८८८	६५-६९	६८वा पत्र अप्राप्त
८३६	५२०२(२)	,,	वसन्त	१८८५	८७-९१	
८३७	९५२	नलदववती चोपई	समयसुन्दर	१७७४	२८	सं १६७३में रचना प्राणनगर मध्ये
८३८	११२३(२५)	,,		१७वीं	८९-९४	
८३९	३८८९	,,	,,	१७७९	७२	
८४०	३९३१	,,	मेघराज	१६८९	२७	
८४१	४०७०	,,	समयसुन्दर	१८३९	२५	
८४२	१८८०(१)	नल राजाकी वात		१९वीं	१-२५	
८४३	२०५९	नलायनोद्धार	नयसुन्दर	१६८५	६७	
८४४	३५६६(२)	नव आख्यान (नवरत्न)		१९वीं	१-११	
८४५	९३१	नवकार बालावबोध		१७वीं	४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लखनीय
८४६	९९७	नवकार बालावबोध		१८वीं	११	
८४७	२१५२				१०	
८४८	३४९६			१७वीं	२	
८४९	६६१३	नवकार मंत्र बगर		१९वीं	१३५	
८५०	३५७५(३९)	नवकार वाली स्तवन	राजसोम	२०वीं	१९१–१९५	
८५१	७६६७	वालीनो सज्झाय	लब्धिविजय		१	
८५२	३५५४(१५)	नवकार सज्झाय		१९वीं	२६ वां	
८५३	३५१६	नवग्रह छंद	गकर		५	
८५४	९७०	नवतत्त्व बालावबोध		१७वीं	१७	
८५५	२११९	विचार		१६०२	६९	
८५६	३२९३	संग्रह बालावबोध		१८७५	६८	
८५७	२८९३(२५)	नवनिदान कुलक चौपाई	हीरकलश	१७वीं	५९–६०	
८५८	६४१२	नवपद पूजा		१८८५	१४	
८५९	३५७५(२६)	,, स्तवन	जिनलाभ	२०वीं	१०९–११३	
८६०	२०४९	नववाड सज्झाय	जिनहर्ष	१९वीं	५	
८६१	२०६०			१७वीं	४५	
८६२	३५६६(१)	नवरत्न नव आख्यान		१६८७	४–१०	
८६३	३५६६(३)	नवरस काव्य	नारायणदास भट्टजी	१७वीं	१८–२६	
८६४	२६५५	नवाण पद्धति		१८८७	१८	
८६५	५४६१	नसीहतनामा और देवीदास के कवित्त		१९वीं	स्फुट पत्र	
८६६	१९८७	नष्टजन्म विचार		१७वीं	६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८६७	११२३(६)	नक्षत्रशकुनावली		१७वीं	५६–६०	
८६८	३७७४	"		१६वीं	१	
८६९	२३७७(४)	नागदमण चोपाई		१८०७	१६–२६	चोवारी गामर्मे लिखित
८७०	३५५५(१६)	नागदमण		"	१२१–१२६	
८७१	३५७३(३३)	"		"	८२–८६	
८७२	३६३२	"		१९वीं	४	
८७३	४४५२(४)	"		१८वीं	७–६	
८७४	७०७३	" चोपई	साईदास	१८२४	६	
८७५	२१६६	" छव (सदुणतिपवाडो)		१८५२	४	
८७६	८१८	"		१७७६	७	
८७७	६२८	"		१६वीं	५	
७७:	६३६०	"		१८वीं	४	
८७९	४६२४(३)	नागदमण कथा		१७८७	१५–१८	
८८०	३०३६	नागमाता चोपाई		१८वीं	६	
८८१	३५५०(११)	"		१६वीं	८४–८७	
८८२	१८३०	नाग मतु		१७वीं	४	
८८३	४४५२(२२)	नागमतर		१८वीं	२३ वां	सर्प-विष उतारनेके मन्त्र हैं
८८४	३८४२	नाडी परीक्षा		१६वीं	२	
८८५	५०६६	नाडीता भवदेव रास	समयसुन्दर	१७४१	५	
८८६	४३१२	नाथियाका सोरठा		१६वीं	११	
८८७	२३७५(५)	नापिकनी वारता	सामतदास	१६०६	१७६–१६६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८८८	६६३७(३)	नामन्देवजीका सबद	,	१८११	१८७–२०१	लि क रामदास नारायणा मध्ये
८८९	४८३१	नामप्रताप	रामचरण	१९वीं	१२	
८९०	७८१६(३)	नारायण लीला	माधोदास	१८३१		
८९१	४४५२(५०)	नासिका विचार		१८वीं	१०७ वा	
८९२	२१४१	नासकेतु व्याख्यान	जगन्नाथ	१८६४	१५	
८९३	३८५५(७)	नासकेत कथा बालावबोध		१८२७	१–६	
८९४	३५७१(४१)			१ वीं	१०२–१०६	
८९५	३५६३(२)	नासकेतरवेसरजीरी कथा		१७८६	६४–७३	
८९६	६७४९(१)	नासकेतपुराण कथा	नददास	१९वीं	८८	
८९७	४२९३	भाषा	,	१८३७	४४	
८९८	६११०			१९वीं	५१	
८९९	३५७५(४०)	निगोद विचार स्तवन	क्षमाप्रमोद	२०वीं	१९५–१९९	
९००	३२६४	निर्णयसिद्धांत भाषा		१९वीं	१४	
९०१	५४१८(३३)	निर्वाणकाण्ड		,	१७३–१७५	
९०२	३५५७(१)	नीमाणी	केसोदास गाडण	१८वीं	१०२ वा	
९०३	३५४९(१३)	नीसाणी कवित		१९वीं	७४–७५	
९०४	४४५२(२२)		सूरज	१८वीं	२४ वां	
९०५	१८३९(६)	नमजीका बारहमास	श्यामगुलाब	१९वीं	४१–४४	
९०६	३५०८	नमराजुन चनडी	कांतिविजय	,	२	
९०७	५३३०	,, का सवया			२५	
९०८	३५२०	बारमास	उदयरतन	१८वीं	४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६०६	७३०३	नेमराजुल का बारमास		१६वी	१	
६१०	५०७७(२)	नेमराजीमती सज्झाय		१८०२	१ ला	
६११	२३६८(१२)	नेमनाथजी की वीनती बारमास		१६वी	४०–४२	
६१२	२८६३(६)	नेमि गीत	हीरकलश	१७वी	४ था	
६१३	११२३(२२)	नेमिनाथ चदाइण गीत	भाकड मुनि	,,	८१–८२	
६१४	३५५४(४)	,, चोक	अमृत	१६वीं	६२–६४	
६१५	६८२	,, चौवीस चोक	,,	१८६३	८	
६१६	३६३३	,, धवल	नयसुन्दर	१६६१	८	
६१७	२१७०	,, रास	कनककीर्ति	१७वीं	१०	
६१८	३८६३	,, ,,	पुण्यरत्न	१७३५	२	
६१६	३६३६	,, ,,	,,	१७१६	४	
६२०	६७८	,, विवाहलो	वीरविजय	१८६४	७	
६२१	६४०	नेमिजिन फाग	रत्नसागर	१६वीं	८	वीसलनगरमे लिखित
६२२	३६३५	नेमिनाथ फाग	राजहर्ष	१८वीं	२	
६२३	२३७४(५)	नेमिनाथ बारमास	रूपचद	१६वीं	२६–२७	
६२४	२३७४(६)	,,	देवविजय	,,	२७–२८	
६२५	२३७४(७)	,,	फत्रियण	,,	२८ वां	
६२६	३२०३	,,	विनयविजय	१८वीं	२	
६२७	२३६८(१७)	नेमिनाथ स्तवन	मनरूप	१६वीं	५२–५४	
६२८	४६१४(३४)	नेमिनाथनी साखी		१८७७	२५५–२५६	स १६७०में रचना
६२६	२८६३(५६)	नेमिनाथ हींडोलणा	हीरकलश	१६२५	१११–११४	स १६२५में रचना

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
९५१	२८९३(४१)	पचपरमेष्ठि नमस्कार	हीरकलश	१७वीं	८५ वां	
९५२	३५७५(६१)	पचमांग सज्झाय	शिवचत्र	२०वीं	२९३–२९४	
९५३	२०३१	पचमी कथा-गद्य		१७८०	७	
९५४	१८६३	पचमेरु पूजा		१९वीं	४	
९५५	२०५४	पचलघु तीर्थमाला स्तवन		१९१८	५	
९५६	३५५४(१)	पचाख्यान बालावबोध		१८८५	१–५४	
९५७	११२२(१३)	पचागुली देवी छंद		१९वीं	८ वां	
९५८	३५७५(४४)	पचेन्द्रिय चोपाई		१८वीं	२१६–२२८	
९५९	३९३९	,,		,,	४	
९६०	५२९५	पचेन्द्रिय चोपाई		१८७२	५	
९६१	३९४०	पचेंद्रिय वेली	गेल्ह (?)	१७वीं	१	
९६२	४९१४(५८)	,,	ठाकुरसी	१८७७	३१३–३३५	
९६३	१८८२(१२८)	पद	मीरा	१९वीं	६७ वां	
९६४	१८८२(२०६)	पद	,,	,,	१३२ वां	
९६५	१८९०(६३)	,,	,,	,,	५३–५४	
९६६	१८९०(७४)	,,	,,	,,	६१–६२	
९६७	१८९०(८२)	,,	,,	,,	६८ वां	
९६८	१८९०(८७)	,,	,,	,,	७०–७१	
९६९	१८९०(८८)	,,	नरसी	,,	७१ वां	
९७०	१८९०(८९)	,,	,,	,,	,,	
९७१	१८९०(९०)	,,	मीरा	,,	७१–७२	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
९७२	१८९०(९६)	पद	मीरां	१९वीं	७६ वां	
९७३	१८९०(१०५)			"	८२–८३	
९७४	१८९०(११६)	"	"	"	८९–९०	
९७५	१८८२(९९)		नरसी		४८ वां	
९७६	१८८२(११०)		कबीर		६१ वां	
९७७	१८८२(१३४)	"	मीरां	"	६८ वां	
९७८	१८८२(१३५)	"	मुरलीदास	"	६८–६९	
९७९	१८९०(५२)	"	नरसी	"	४८ वां	
९८०	१८९०(१४४)		मीरां	"	१२६ वां	
९८१	१८९०(१४७)	"	"	"	१२७ वां	
९८२	१८९०(१८०)	"	नरसी	"	१४३ वां	
९८३	१८९०(१९८)	"	"	"	१५६ वां	
९८४	१८९०(२०४)	"	मीरां	"	१५८–१५९	
९८५	१८९०(२०६)	"	"	"	१५९–१६०	
९८६	१८९०(२२३)		"	"	१७०–१७१	
९८७	१८९०(२२७)	"	मीरां	"	१७३ वां	
९८८	३५७५(९३)	"	शिवचंद्र	२०वीं	२९५–२९६	
९८९	४९१४(१०)	"	सकलकीर्ति	१८७१	२०७ वां	
९९०	४९१४(३१)		"	१८७७	२४८–२४९	
९९१	१८८२(१२७)	, ग्रंथ	नरसी	१९वीं	६६–६७	
९९२	१८९०(९५)	"	"	"	७५–७६	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
९९३	[illegible]	पद	मीरां	१९वीं	९४-९५	
९९४	[illegible](३७)	,,	,,	,,	३४-३५	
९९५	३२७२(१३)	पद्मावती आलोचना	समयसुन्दर	२०वीं	७९-८१	
९९६	११७२(१४)	,, छंद	हर्षसागर	१९वीं	८-९	
९९७	४८०३	पद्मिनी चौपई	हेमरतन	१८२७	५१	
९९८	४९१०	,,	,,	१९वीं	३१	
९९९	४०७२	पदमसी पद्मावती चौपई	मुनिमाल	१८वीं	२२	
१०००	७७२१(५)	पनर बादशाह [illegible]		१८२५	११८-११९	
१००१	७३०८(१)	पनरमी [illegible]	वीरचंद	१८६१	१-१७	
१००२	२२१२	,,		१९वीं	१३	
१००३	[illegible](१७)	,,		,,	१०३-११४	
१००४	[illegible]	,,		१८८१	८४-९६	
१००५	[illegible]	,,		१८०५	१०३-१०७	लि क. प्रीतिसौभाग्य गणि
१००६	[illegible]	[illegible] चौपाई	ज्ञानचंद	१७६१	२०	
१००७	[illegible]	,, [illegible]	,,	१८४८	३१	
१००८	[illegible]	,, [illegible] ,,	सहजसुन्दर	१७वीं	८	
१००९	[illegible]	,, ,,	,,	१६३६	३४-३९	
१०१०	२१५२	,, ,, ,,		१८८२	१६	
१०११	७६१२	,, प्रबन्ध	ज्ञानचंद	१८४८	३१	
१०१२	४८२७	,, राजाजी चौपाई		१८८५	२९	लि स्था बडली
१०१३	३५४६(१२)	परमार जगदेवरी वारता		१९वी	९७-१०७	सं. ५५१ के समान

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०१४	५४१८(२६)	परमादि (प्रमाद)	गोपालदास	१६वीं	१६७–१६८	
१०१५	३५४६(४)	परमेसरजीरो छंद	हररूप सेवग	१८१६	१०–११	
१०१६	३२४६	परसोतम पुराण		१८८१	११३	
१०१७	३४७६	प्रकीर्ण कथा		१६वीं	५	
१०१८	६२०४	प्रत्येक बुद्ध चौपई	समयसुन्दर	१८६७	२४	
१०१९	१००३		"	१८६७	३१	
१०२०	२१७८		"	१७वीं	१०	
१०२१	४५२६	"	"	१८२५	२८	लि क जतसी
१०२२	११२४(५)	प्रतिमाधिकार बलि	सामंत	१६७५	२	
१०२३	५२७०	प्रद्युम्नप्रबंध	कमलवधू	१८१३	२८	
१०२४	५२७४	,	समयसुन्दर	१७३६	२०	प्रथम पत्र अप्राप्त
१०२५	५०६८	प्रदेशीराय चौपाई		१८६०	२६	
१०२६	६०३३	प्रबोध चिंतामणि चौपाई	धर्ममंदिर गणि	१८५८	७७	
१०२७	११२३(२१)	प्रस्तावनमाला बिनकत		१७वीं	८० वाँ	
१०२८	५११७	प्रश्नोत्तरसाधनातरनो बीजक		१६वीं	५७	
१०२९	१०४८	प्रश्नोत्तरसाधनातक भाषा	क्षमाकल्याण	१८६८	१५	
१०३०	२११६		,	१६वीं	४६	
१०३१	६३४६(१)	,	,	१६०६	७०	लि क हरकचंद
१०३२	४६१५(१४)	प्रश्नोत्तरी रत्नमाला	मंगलीराम	१६वीं	३८६–३६५	
१०३३	११४४(४)	प्रहेलिका आदि			३२–३५	
१०३४	५१०१	प्रहेली	जिनहर्ष	,	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०३५	२३६८(१५)	प्रहेलिका		१९वीं	४६–५०	
१०३६	२८९३(६७)	,,	हीरकलश	१७वीं	४ था	
१०३७	५३२९	प्रश्नशकुनावली		,,	१२	
१०३८	६८५४	प्राकृतप्रबन्धसंग्रह	मोहनविजय	१८६८	११९	लि क. बगनावर
१०३९	१८४२	प्रास्ताविक गीत		१९वीं	१	
१०४०	११२२(३०)	,,		,,	२८ वां	
१०४१	२८९३(९८)	,,		१७वीं	१६२ वां	
१०४२	२८९३(१००)	,,		,,	१६३ वां	
१०४३	३६७३	,,		१८वीं	६	
१०४४	२८९३(९)	,,		१७वीं	५ वां	
१०४५	३०२६	,,		,,	७	
१०४६	३५५०(८)	,, कुण्डलिया	धर्मवर्धन	१९वीं	७०–७४	
१०४७	२८३२(५)	,, दूहा		१७७४	८८–८९	
१०४८	३५६२(१७)	,,		२०वीं	१३९–१४५	
१०४९	३५७३(४०)	,,		१९वीं	१०१ वां	
१०५०	३५७३(५०)	,,		,,	१२८ वां	
१०५१	३५५०(१०)	प्रास्ताविक बावनी	धर्मसी	,,	७९–८३	
१०५२	११२२(२४)	,, सुभाषित		,,	१७–२१	
१०५३	४७९२	प्रास्ताविक दूहा		१८वीं	३	
१०५४	४८०९	प्रास्ताविक दूहा		१८वीं	३	
१०५५	४८१५	,,		१८३९	३	लि.स्था राजपुर

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०५६	५३६५	प्रास्ताविक दूहा		१८वीं	६	
१०५७	४४५२	भावि		,	१३२-१३४	
१०५८	५३४५	प्रास्ताविक पत्र		१९वीं	८	
१०५९	९५८	प्रियमेलक चोपाई		१७वीं	४	
१०६०	९७४			१७५५	६	
१०६१	१८१२	,		१७१४	७	
१०६२	२०९७(२)	,,		१७७२	१०-१७	
१०६३	२२०१	,	,	१८९०	७	
१०६४	४७९३	प्रियमलक चोपई	समयसुन्दर	१८वीं	७	
१०६५	४८२१	,	,	१७वीं	६	
१०६६	६८७५			१९वीं	८	लि क ल'घकीर्तिगणि
१०६७	१८९९(१)	प्रम'यौतिष	महिमोदय	१८१८	१-१५	
१०६८	४०७३	पलकदरियावरी वात		,	३६	लि क आखुजी
१०६९	४०७४	पाण्डवचरित्र चोपई	लाभवर्द्धन	१७८५	५६	स १७६७में रचित
१०७०	७७२३	पांडवविजय	मलूकदास	१९२९	३७७	लि क जीताराम
१०७१	१८३९(१३)	पांडवोकी सज्झाय	कान्ह सेवक	१८३१	६५-६७	
१०७२	२५६६	पातसाह नामोपरि शकुनावली		१९०८	२	
१०७३	३५५७(६)	, पातसाही भोगवी तिणरी विगत		१७६१	७५-७७	
१०७४	३५५०(१)	पाबुजीरो नीसाणी		१९वीं	१-६	
१०७५	३५६०(४)	पाबुधा छोलोतरा दूहा		१८वीं	१-५	*
१०७६	४९१४(५५)	पार्श्वनाथ आदित्यवार कथा		१८७७	३०२-३११	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०७७	३२९५	पाराशरी भाषा टीका	परमसुख	१९वीं	८	
१०७८	३५५४(१७)	पाशा केवली भाषा		,,	२७–२८	
१०७९	२३६८(६)	,,		१८४९	४१–४९	
१०८०	६४३३	,,		१९६९	७	लि क रूपा साध्वी
१०८१	७६७०	,,		१९वी	५	
१०८२	५१२३(३)	,,		१८वीं	१२–१९	
१०८३	६२८२	,,		१९वीं	१६	
१०८४	२०४०	पार्श्वजिन स्तवन	दीपो	१८वी	३	
१०८५	९७६(२)	,,	,,	१९११	२–४	
१०८६	३५५०(२)	,,	रूपसेवक	१९वी	९–१२	
१०८७	३५७५(२८)	पार्श्वनाथ घग्घरनिसाणी छंद	जिनहर्ष	२०वीं	११७–१२२	
१०८८	११२२(९)	पार्श्वनाथ छंद		,	५–६	
१०८९	३५५५(३२)	,,		,,	१७४ वां	
१०९०	३५४८(८)	,, रो छंद		,,	१३–१४	
१०९१	२१०५	पार्श्वनाथ देसतरी छंद	राज कवि	१८वीं	१	
१०९२	२३२७(१)	,,	,,	१८६५	२–९	
१०९३	३५२२	,,	,,	१८वी	२	
१०९४	३५७३(३४)	,,	,,	१९वीं	८६–८८	
१०९५	३५४६(६)	,,	,,	१८१७	११–१२	
१०९६	३१९४	पार्श्वनाथरागमालामयस्तवन	जयविजय	१८वीं	३	
१०९७	३९२५(२)	पार्श्वनाथराज गीत	उदयविजय	१७७०	५३ वां	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०९८	३५५९(४)	पार्श्वनाथ स्तवन	समयसुन्दर	१९वीं	६५–६६	
१०९९	२३६४(१)	पिंगल सटीक		,	४७	
११००	४४५५	पिंगल शास्त्र टीका		१८७१	२३	
११०१	७१४३	पुडरीक कुडरीकनो ढाल	मुनि हर्ष	१९वीं	५	
११०२	३५७५(१७)	पुण्यछत्तीसी	समयसुन्दर	२०वीं	८१–८५	स १६६९में सिद्धपुरमे रचित
११०३	११२३(११)	पुण्यपाल राजरिषि चउपई	सौभाग्यसेखर	१७वीं	६२–६६	स १६४१में रचित
११०४	३५७५(२९)	पुण्यप्रकाश स्तवन	विनयविजय	२०वीं	१२२–१३०	
११०५	५११६	पुण्यसारचरित्र	हर्षचन्द गणि	१८७५	३	स १६६२में सागानेरमें रचित
११०६	११२३(७)		विमलमूर्ति	१६३६	४६–५८	
११०७	३५३५	पुण्यसार चोपाई	पुण्यकीर्ति	१७५१	६	स १६६२में रचित
११०८	३६३७			१८वीं	६	
११०९	३९६५	,	,,	१७६५	४	
१११०	३८६४	,,	पुण्यरत्न	१७५४	७	
११११	७५३०	, चोपाई	पुण्यकीर्ति	१८वीं	५	*
१११२	६४३७	पुरंदर कुमर कथा	मालदेव	,	४८	
१११३	१८२२	चोपाई		१७वीं	१०	
१११४	३८२६	चोपाई	रतनविमल	१९वीं	२१	
१११५	३९४१	,	मालदेव	१७वीं	७	
१११६	४६७६	पूर्णिमा विचार			४	
१११७	२५५४	पूनम विचार		१९वीं	१६	
१११८	२५६०	,,		१८९४	२४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११११९	५३३२	पूर्वदेश चैत्य प्रवाडो		१८९४	३	
११२०	११२२(६३)	पुरुषना कुलखाण छद		,,	८४ वां	
११२१	१८३७	पुरुषनी ७२ तथा स्त्रीनी ६४ कला		१७वीं	१	
११२२	२३००(४)	पुरुषप्रतिस्त्रीका प्रीति लेख		१८७९	१९–३४	
११२३	२३७५(१)	पुष्पसेन पद्मावतीनो वारता	सामलदास	१९०६	१–६०	
११२४	११४२(२)	,,	,,	१८वीं	१७–१०२	
११२५	३५७५(३१)	पैंतालीस आगम सज्झाय	धरमसी पाठक	२०वीं	१३८–१४१	
११२६	३५४७(१)	पोथी प्रेम दूहा		१९वीं	१	
११२७	३५५५(४)	,		१८२६	१५ वां	
११२८	३५७५(३८)	पौषधस्तवन	समयसुन्दर	२०वीं	१८६–१९१	
११२९	४९१४(१९)	पोस्तीनो रास		१८७१	२१८–२२२	
११३०	४०७५	,,		१८८२	४	
११३१	३५७३(३९)	फलवधि पार्श्वस्तवन	बखतो	१९वीं	१०१ वां	
११३२	३९२	फरासीस हकीमवैद्यक फुटकर औषध		,,	७२	
११३३	७७५२(१२)	फुटकर औषध		१८वीं	११६–१२५	
११३४	२३७१(३)	फुटकर कवित्त		,,	५२	
११३५	३५६७(३१)	,,		,,	१५५–१७६	
११३६	३५५७(४)	,,		,,	७२ वां	
११३७	४९२४(१८)	,,		,,	२७–२९	
११३८	३५६७(२)	,, दूहा		१९वीं	७२–९६	
११३९	३५५७(७)	,, ,,		१७९१	७८–८१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११४०	४६२४(७)	फटकर ज्योतिष		१७६३	१४–१५	
११४१	२३६८(१४)	फटकर मत्र		१६वीं	४४–४५	
११४२	२३६८(२०)	"		"	६३–६७	
११४३	५२७२	फूलकवरफूलकवरीरी वात		१६१२	* १४	१८५२मे रचित
११४४	५०८१			१८६०	७२	लि स ४५
११४५	५५००	फूलजीफूलमतीरी वात		१८४६	२६	
११४६	३५६७(१५)	फूलमाला		१६वीं	१३१–१३३	
११४७	३५६७(१७)	फूहडरासो	जदेव		१३३–१३४	*
११४८	३५६७(२६)	"			१४७ वाँ	
११४९	३५७५(३)	महुवालोचनास्तवन	राजसमुद्र	२०वीं	२७–३०	
११५०	३५४६(२२)	मराटोवांरी एतिहासिक हकीकत		१६वीं	१–२	
११५१	३५७५(११)	ब्रह्मचर्यनववाडसज्झाय	जिनहर्ष	२०वीं	४६–५८	
११५२	२८६२	ब्रह्माण्डपुराण भाषा तथा पद्मपुराण भाषा		१८०६	२–११७	
११५३	४६१४(३७)	ब्रह्मजिणदासनी वीनती		१८७७	२५८–२५६	
११५४	७७४३(३)	ब्रह्मनिरूपण	राजसिंघ	१७८४	४६–५३	लि क बाई सिरेकवँरी
११५५	५८६७	बागीरामप्रोहितहीरांरीवात	कवितेण	१६वीं	६५	*
११५६	६७६(३)	बावीसअभक्ष्यबत्तीसअनंतकाय सज्झाय	लक्ष्मीरत्न	१६११	४–५	
११५७	७७५३(७)	बोभडवाड रो स्तवन	कमल	१८३७	३६–४१	
११५८	१७५४	बारमासफल वर्षग्रहफल आदि		१८७२	१८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११५९	१८०९	बारतातकथा		१६५७	११	
११६०	३५६७(९)	बावनअक्षरी	कानडवासबारठ	१९वीं	१०९–११२	
११६१	३५७५(१३)	बारहभावना सज्झाय	जयसोम	२०वीं	६२–६९	
११६२	३५६७(२८)	बारहमासो		१९वीं	१४९–१५०	
११६३	४९१४(६२)	बाईजतननेलीलवणनीविगत		१८७१	३२१ वां	
११६४	७१३९	बाईसपरीक्षाकीचोपाई	रामचन्द्र	१८२२	४	
११६५	४३२०	वातसंग्रह		२०वीं		चौबीस वार्ताओंका संग्रह
११६६	७८१७	बादशाहीहाल		१९वीं	८–५०	
११६७	४९१४(२७)	बारहअनुप्रेक्षा	चन्द्रकीर्ति	१८७७	२४४–२४६	
११६८	४७२१	बारहपूनमरो विचार		१९वीं	१	
११६९	४७३७	बारहभाव फल		१८४०	५	
११७०	७४४४	बारहभाव		१८८५	२६०–२७०	
११७१	७७५४–(१,२,३)	बारहमासासंग्रह		१९२२	१५	
११७२	४२८७(१५)	बारहमासो	रामचन्द्र	१८वीं	११६–१२७	
११७३	७६२१	वालचन्द्रबत्तीसी	बालचन्द्र	१०वीं	७	
११७४	२१०१(२)	बाललीला		१९वीं	१–३	
११७५	२२५	वाततन्त्रभाषावचनिका	कल्याण पण्डित	१८९५	८२	
११७६	२८९३(१०१)	विघडिया	हीरकलश	१७वीं	१९३ वां	
११७७	११४१	विल्हणपचाशिका चोपई	ज्ञानसागर	१८०७	२०	१,२ पत्र अप्राप्त
११७८	२२०२	बीबीरोख्याल		१९२३	३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११७६	२०४२(३)	बुद्धिरास	शालिभद्र	१७८३	१२–१४	
११८०	२०६८	,		१८वीं	२	
११८१	३१६५	,		१७वीं	२	
११८२	३४८०			१८वीं	८	
११८३	४१४२	बुद्धिसेन चोपई	तिलकसूरि	१६वीं	६६	
११८४	७५४२	बोधविवरण		१७वीं	६२	
११८५	७७२१(१)	भंगीपुराण	हरदास	१८२५	१–२५	
११८६	२२५७	भंडारी मानीरामजीरो गीत		२०वीं	१	
११८७	२२५६	सिवचंदजीरो गीत		"	१	
११८८	३५६७(१३)	भक्तविरुदावली	मलूकदास	१६वीं	१२८–१२६	
११८९	५८८५	भक्तसार	शालिग्राम		२२	
११९०	२८६१(१)	भगवद्गीता भाषा (गीतासार)		"	७५	
११९१	३७४०	भड्डली दूहा			८	
११९२	३५६४(८)	, पुराण			१–३३	
११९३	१८७७	,			६	अपूर्ण
११९४	३७५७	, विचार		,	१५	
११९५	५६८	भड्डली वाक्य		१८वीं	४	
११९६	५१२३(७)				२६–४१	
११९७	७४५२(१७)	दूहा पचीसी			१६ वीं	
११९८	६७२८	भड्डलीपुराण		१८८१	१२	
११९९	५१२२	" रा दूहा		१८२८	३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२००	४४५२(६८)	भड्डलीवाक्य		१८वी	१३२ वां	
१२०१	५८००	,,		१९१३	१४	लि क. व्रजवासी
१२०२	२०२३(१)	भमरगीता	विनयविजय	१७३४	१–२	
१२०३	३२०६	,, ,,		१७६८	५	
१२०४	२३६८(१३)	भमर की सज्झाय		१८४८	४२–४४	
१२०५	७६३०	भरताधिकार		१७९३	५३	लि क. त्रिकमजी
१२०६	३५४६(७)	भवानीजीरो छन्द	उदो	१९वी	१२–१३	
१२०७	२३२६(२)	भवानीदासजीरो गीत आदि	साधूराम सेवक	,,	३–४	
१२०८	२५३३	भवानीवायक		१८६३	९	
१२०९	२२०९	,,		१८७७	३	
१२१०	१२५	भागवतदशमस्कध भाषा		१८२७	७५	
१२११	२८९३(३७)	भावनागीत	हीरकलश	१७वी	७० वां	
१२१२	४७६६(२)	भाषालीलावती	लालचन्द	१७७५	१–१५	बीकानेरके महाराजा रार्यासह के अमात्य कोठारी नैणसीके पुत्र जैतसीकी प्रार्थना पर उनके गुरु द्वारा प्रणीत
१२१३	७४१०	भुवनद्वारविचार		१९वीं	२०	
१२१४	७७२२(१०)	भैरव आदिकी वोलीविचार		१८वीं	१०७–११४	
१२१५	३२५९	भोगलशास्त्र (भूगोल)		१८८७	१९	
१२१६	६७०२	भोगलपुराण		१७७२	३०	लि क टीकूदास
१२१७	३४७७	भोजचरित्रचोपाई		१७४०	३५	पत्र १४,१५,१६ अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि नातथ्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२१८	११२३(४)	मंगलकलशचरित्र	सर्वाणदसूरि	१७वीं	३०–३४	
१२१९	३५१६	चोपाई	मगलधम	,	१२	स० १५२५में रचित
१२२०	३५५४(७)	,	लक्ष्मीहष	१८८०	१–१२	
१२२१	३९७४	,	लक्ष्मीकीर्ति	१८६६	३०	
१२२२	३५३३	फाग	कनकसोम	१७वीं	७	
१२२३	२०२९	रास	दीप्तिविजय	१८७४	३३	
१२२४	२०८६	,, ,	,	१८६६	४९	
१२२५	२८९३(११३)	मगध आदि देशके नगर तथा ग्रामों की सख्या		१७वीं	१६८ वाँ	
१२२६	३४८८	मत्स्योदरकुमाररास	पुण्यकीर्ति		१५	
१२२७	४८२५	मच्छोदर चोपाई	शातिहष	१८४८	२३	लि क क्षमासौभाग्य
१२२८	४७९८	मदनवार्ता	खुशियालचन्द आलधरी	१८वीं	१०	
१२२९	४४५२(१)	मदन शत			२	अपूर्ण
१२३०	२१४३(१)	मदनशतकरीवार्ता	दान ?	१८६०	१–४	
१२३१	११४२(३)	मधुमालतीचोपई	चतुर्भुज दास	१८वीं	१०२–२११	
१२३२	२३६०(११)	,		१९वीं	४७–५७	अपूर्ण
१२३३	३५४७(४)	,		१८२८	१–३३	
१२३४	३५५५(१२)		,	१८२६	५८–८९	
१२३५	३५५६(१)	,		१८४६	१–७७	
१२३६	५३५८(१)		,	१९वीं	१–९३	
१२३७	३८९१	,	,	१८५६	३२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२७७	१०८६	माणिभद्र छन्द	शांतिसूरि	१८७०	४	
१२७८	१०६१	,,	गुलाल	१६वीं	३	
१२७६	२०६७	,,	उदयविजय	,,	२	
१२८०	३५४७(६)	माताजीरो छन्द	नरसिंघ चारण	,,	८७ वां	
१२८१	३३४७(१०)	,,	भगवान भोजग	,,	८८–८६	
१२८२	३५४७(१२)	,,	सारग कवि	१६वीं	६१ वां	
१२८३	३५४७(१३)	,,	आढो दूरसोजी	,,	,,	
१२८४	४४५२(१२)	माताजीरो गीत		१८०८	१६ वां	लि क प्रीतिसौभाग्य
१२८५	४४५२(१०)	,, री चरचा		१८वीं	१३ वां	
१२८६	४४५२(११)	,, रो छन्द	वीकाजी	१८०७	१४–१६	
१२८७	४४५२(८५)	,, ,,	कवि सारग	१८वीं	१२६ वां	
१२८८	७७२१(११)	,, ,,	चानणखिडिया	१६३१	१७७–१७६	लि क प्रमरसिंह
१२८६	६०४	माधवानलकामकदलाचोपाई	कुशललाभ	१६४३	१६	,, १६१६मे जैसलमेरने रचित
१२६०	६१५	,,	,,	१६वीं	२५	
१२६१	६१६	,,	,,	१८६६	२०	
१२६२	२०६१	,,	,,	१८वीं	२०	
१२६३	२२२२	,,	,,	१८२४	१२	
१२६४	२३६०(६)	,,	,,	१६वीं	१४–३७	
१२६५	३५३०	,,	,,	१७३०	१४	
१२६६	३५५५(१)	,,	,,	१८३१	१–११	
१२६७	३५६१(१)	,,	,,	१७२५	गुटका	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२९८	३८६५	माधवानल कामकंदला चोपाई	कुशललाभ	१७१६	१४	
१२९९	३९४५	"	"	१६३८	३०	
१३००	४९११(४)	"	"	१८३०	६	
१३०१	४९२४(१६)			१७९२	१–२२	
१३०२	९७१	मानतुंगमानवती चोपई	अभयसोम	१७७८	११	स० १७२७में रचित, विक्रमपुर में लिखित
१३०३	३९४७	"	"	१८९५	१०	
१३०४	३९७६	"	"	१८३१	२१	
१३०५	३९७५	"	सुन्दरसूर	१९वीं	१४	
१३०६	५११८	"	मोहनविजय	१८वीं	२१	
१३०७	१००५	" रास		१८१३	२९	
१३०८	२०३७		"	१७६४	२५	
१३०९	२०४६	" "		१७८०	३३	
१३१०	३२४१	"	"	१९वीं	४१	
१३११	३२९१	" "		१८४५	३५	
१३१२	३५५४(१०)	"	"	१८८३	१३–२५	
१३१३	३९४६	"		१७७९	२२	लि [illegible] राजनगर
१३१४	६१३८	" "	"	१८०९	४४	स० १७१०में रचित
१३१५	६१३९(१)	" सचित्र	"	१८७८	९५	चित्र स० ८८
१३१६	६२९७			१९१४	३६	
१३१७	६३३५			१८२४	५०	लि क आलमचन्द

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३१८	६५३४	मानतुगमानवती चोपाई	मोहनविजय	१८७९	७९	
१३१९	७३९९	,,	अभयसोम	१८२८	११	
१३२०	७५२८	,,	मोहनविजय	१८९२	८४	
१३२१	७५५७	,,	,,	१७९७	३५	
१३२२	३२२२	मामेरू	प्रेमानन्द	१८७४	१६	
१३२३	२८९३(४७)	मारूदेशनिंदा गीत		१७वीं	८८ वां	
१३२४	४४५२(८०)	मासधि चक्र ?	?	१८वी	१२३ वां	
१३२५	३९७७	मीया बीबीरी वात		१९वीं	२	
१३२६	३४९८	मीरा कबीर आदिके अनेक पद-सग्रह		१८६०	२०	
१३२७	२८९३(२९)	मुखवस्त्रिका विचार चोपाई	हीरकलश	१७वी	६४–६५	
१३२८	३४८२	मुज सबध		१९वी	२	
१३२९	२०२१	मुनिपतिचरित्र चोपाई	धर्ममन्दिर	१८४१	३९	
१३३०	२१३९	,,	,	१८१८	३१	
१३३१	२८९३(२४)	,,	हीरकलश	१६१८	१३–५८	
१३३२	६५२६	,,		१९वी	२१	
१३३३	६३५५	,,		१७६६	३१	
१३३४	३४८१	, चोपाई		१५९९	३८	स० १५५०में रचित
१३३५	३४९४	,, ,,		१७वीं	३५	
१३३६	३९७८	,, ,,	धर्ममन्दिर	१८८९	५४	
१३३७	३५७५(३७)	मुनिमालिका	चारित्र सघ	२०वीं	१८१–१८६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३३८	३६७६	मनिमालिका	चारित्र [illegible]	१६वीं	२	
१३३६	५४३६(४)	,			२६–३३	
१३४०	६२७२	,	कल्याण	२०वीं	२०	सं० १६३६में रचित
१३४१	८७३	मुमनाक्तविनी यमनी दवा		,	५	
१३४२	११२३(१०)	मुष्टिज्ञान		१७वीं	६१ वां	
१३४३	२५३१	,			१	
१३४४	३३४१(१)	महता नणसीरी ख्यात प्रथम भाग	महता नेणसी		१–१००	पत्र सं० १ ६ ५३ ५४ ५५ ६८, ६६ ८५,८६ ६६ ६६ १०० अप्राप्त
१३४५	३३४१(२)	, द्वितीयभाग	”		१०१–१६६	पत्र सं० १०१ १०७,११० १११ ११५ ११६ १२१ १२३, १३५ १६२ १५७ १६६,१७० १६४ पत्र अप्राप्त
१३४६	३३४१(३)	, तृतीयभाग	,		२००–३००	
१३४७	३३४१(४)	, चतुर्थभाग	,		३०१–४ ०	पत्र स ३०८,३२६,३३६ ३४१, ३६० ३६४ ३६६ अप्राप्त जीर्ण प्रति
१३४८	३३४१(५)	, पचमभाग	”		४०१–५००	पत्र ४१५ ४३५ ४६१ ४६३ तथा ४६६ वां अप्राप्त
१३४६	३३४१(६)	षष्ठभाग	”		५०१–६००	पत्र सं० ५५५ ५६६ ५७६ अप्राप्त
१३५०	३३४१(७)	सप्तमभाग			६०८–७००	पत्र सं० ६६१से ६६८ अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३५१	३३४१(८)	मुहता नेणसीरी ख्यात अष्टमभाग	मुहता नेणसी		७०१–७९५	पत्र सं ७३०,७३६,७५४,७५५, ७५७,७५६,७६६,७६६, तथा ७७१ वां अप्राप्त
१३५२	३३४१(९)	,, नवमभाग	,,			भाग १,८ तकके स्फुट पत्र
१३५३	२२५५	मुहता वाकीदासजीरो गीत ?		२०वीं	१	वाकीदासजी रचित मुहता विषयक गीत
१३५४	२५२०	मुहूर्त		१९वीं	२	
१३५५	२५२१	,,		,,	२	
१३५६	२५३७	,,		१८वीं	१	
१३५७	२५५९	,,		१८७९	२	
१३५८	३२६५	मुहूर्तानि		१७वीं	१	
१३५९	११४४(३)	मूर्खनहुत्तरी		१९वीं	२०–३२	
१३६०	२८९३(६४)	मूलनक्षत्र विचार आदि		१७वीं	१३१ वां	
१३६१	२८९३(१०६)	मूत्रपरीक्षा तथा कालज्ञान		,,	१६५ वां	चित्र सं० ४८
१३६२	५८९१	मृगलेखा चोपाई सचित्र	मुनि सागरचन्द्र	१८३८	५३	
१३६३	३५७३(२२)	मृगापुत्रसंधि	कल्याणतिल	१९वीं	६७–६८	
१३६४	३९४४	,,	,,	१६४७	४	
१३६५	९६१	मृगावती चोपई	समयसुन्दर	१६९०	२८	
१३६६	३८६६	,,	,,	१८वीं	२५	
१३६७	३९४८	,,	,,	१७वीं	३४	
१३६८	३९८०	,,	,,	,,	६०	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३६६	७०५७	मृगावती चरित्र	समयसुन्दर	१८वीं	३८	
१३७०	४०८६		"	"	२४	
१३७१	६५३३	"		"	२३	
१३७२	६२५०	चोपाई			१३	
१३७३	२३१७(२)	मृगापुत्र सज्झाय	खेममुनि		३ रा	
१३७४	३५७३(१२)	मेघकुमार चोढालियो	कनककवि	१६वीं	३४–३५	
१३७५	३६४६		"	१६६१	७	
१३७६	३६८१	"	यादव	१८८१	३	लि स्था प्राणपुर
१३७७	६८३८			१७३८–४६	५३	१२ कृतियोंका संग्रह
१३७८	१७६८	मघमाला		१६वीं	३३	
१३७९	१७८६	"			५	
१३८०	३२०८	मेघमाला		१८४६	२	
१३८१	४२८२			१६वीं	५	
१३८२	३५५०(१५)	मेडता आदिकी एतिहासिक हकीकत			६१–६२	*
१३८३	२०२६(१)	मेवाडको छंद	जिनेंद्र		१–३	
१३८४	४६१४(१६)	मेरुजयमाला		१८७१	२०६ वां	
१३८५	४४५२(६०)	मेषसक्रान्ति आदि विचार		१८वीं	११७ वां	
१३८६	६६२२	मणरेहा चोपाई		१६४६	७	लि क केशरीचंद
१३८७	३१६६	मोती कपासिया संवाद चोपाई	श्रीसार	१८वीं	६	
१३८८	३२०८	"	"	१७२५	२	
१३८९	३८६७			१६६५	४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३९०	३९५०	मोतीकपासिया संवाद चोपाई	श्रीसार	१७वीं	७	
१३९१	५१०२	,,	,,	१८वीं	५	लि.क नित्यसागर
१३९२	८३	मोह विवेकरास	धर्ममन्दिर	,,	७७	स० १७४१में रचित
१३९३	५६०१	,,	,,	१७९९	६६	लि.क. भीमविजय
१३९४	६७६२	मोहमरद राजाकी कथा (गोतम-महावीर संवाद)		१९५३	१३	
१३९५	९६०	मौन एकादशी व्याख्यान		१७वीं	४	
१३९६	७०७७	,,		१८२४	५	
१३९७	९२३	यदुवंश वंशावली	रतनु हमीर	१८१५	१६	
१३९८	१५६८	यशोधर रास	नयसुन्दर	१७वीं	२१	
१३९९	२०२५	,,	उदयरत्न	१८०३	५४	
१४००	२१३७	,,	ज्ञानद	१९वीं	२०	
१४०१	१८२८	यादव रास	पुण्यरतन	१६९०	३	
१४०२	२८९३(७९)	युद्धवर्णादि विचार		१७वीं	१४२ वाँ	
१४०३	६४००	योगदृष्टि स्वाध्याय	नयविजय	१९वीं	५	जीर्ण पत्र
१४०४	७२७	योगरत्नाकर चोपई	नयनशेखर	१८१४	१२८	स० १७३६में रचित
१४०५	९४१	योग बालावबोध	भेरुसुन्दर	१९वीं	६७	
१४०६	९४२	,,	,,	,,	५९	
१४०७	३०३२	,,		,,	४८	
१४०८	५४१८(१८)	योगसारके दोहे	योगचंद	,,	१३४–१४०	
१४०९	५४५०	योगासन माला सचित्र		१८४६	११०	लि.क. शोभाराम

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४१०	८८६	रघुनाथरूपक	मछाराम सेवग	१६वीं	७६	
१४११	१८३३	रतिप्रमोद	जगन्नाथ	१८५७	१२	स० १८२२में जसलमेरमें रचित
१४१२	६०३८	रत्नकुमाररास	सहजसु दर	१८वीं	११	
१४१३	११२३(२४)	रत्नचूडकुमार चउपई	सेवक	१७वीं	८४–८६	
१४१४	११२४(६)			१६७५	१–२२	
१४१५	३५५४(८)	"	कनकनिधान	१८७६	१–१२	
१४१६	३६८२	,	,	१८४१	२४	
१४१७	३६६२		,	१६वीं	१८	
१४१८	४ ८७		,	१८१४	१२	
१४१६	२१८०	रत्नपाल चोपाई	रघुपति	१८२४	१४	
१४२०	२२३०	"	,	१८६४	३३	
१४२१	३८६४		कनकसु दर	१८२१	१३	
१४२२	३८६५		मोहनविजय	१८१२	५४	
१४२३	३८६६	,	हर्षनिधान	१८७३	२७	
१४२४	६३६	रास	सूरविजय	१७७६	३२	लि स्था धोलका
१४२५	६८८	,	"	१८३०	२४	स १७३२में रचित
१४२६	४८१६		मोहनविजय	१८६७	५४	लि क हितसौभाग्य
१४२७	६०५७	,	सूरविजय	१६००	७६	
१४२८	६५३१		सेवक सूर	१८२७	३२	प्रथम पत्र अप्राप्त, स० १७३२में रचित
१४२६	४८३३	रतनमहेशदासोतरी वचनिका	खिडियो जगो	१७४१	७	लि क प्रमोदमनि

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४३०	८६२	रतन रासो	विडिओ जगो	१८७६	१४	
१४३१	२३१०	,,	,,	१८२५	३८	लि स्था मेड़ता
१४३२	२३६०(४)	,,	,,	१८४१	१–१३	पत्र सं० ५,६ अप्राप्त
१४३३	३५४८(३)	,,		१८वीं	२१–२८	
१४३४	३५४९(२)	,,	,,	१९वीं	२४–३१	
१४३५	३५६०(१)	,,	,,	१८वीं	१–३१	
१४३६	३५७३(५१)	,,	,,	१८०९	१२९–१३५	
१४३७	११२३(६)	रत्नसार रास	सहजसुन्दर	१७वीं	३९–४६	
१४३८	३९८३	,,	,,	१८वीं	१५	सं० १५८६में रचित
१४३९	४९१४(३०)	रत्नत्रय		१८७७	२४८ वां	
१४४०	४९१५(३)	रतना हमीररी वात	कवियण ?	१८८७	४२–७५	लि क प्रभुदान
१४४१	१७८०	रमलग्रन्थ भाषा		१८८५	३०	
१४४२	३७३१	,,		१८६७	१५	
१४४३	३७२२	,,		१९वीं	१७	
१४४४	१७७४	रमलशकुनविचार		१८७९	३	
१४४५	६७१	रमलशकुनावली		१८०१	४	
१४४६	१८३६	रसिकसुरतीमास	ब्रह्मानन्द	१७४५	२	
१४४७	५४१८(२६)	रविकथा		१९वीं	१५४–१६३	लि.क. रामसागर
१४४८	५४१८(२७)	,,	भानुकीर्ति	,,	१६४–१६५	
१४४९	८४७	रागसागर		,,	६	
१४५०	७४४४(१६)	रागपदबहोत्तरी	आनदघन	१८८५	२७०–२९४	लि क नेमविजय

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४५१	४२८७(६)	राग पदसंग्रह		१८वीं	३८–९	
१४५२	५१००			१९वीं	३	
१४५३	५४१८(३४)	रागरासाष्टक		„	१७५–१७६	
१४५४	७७२०(२३)	रागनामोपरिविरह सुभाषित		१७६५	९–११	
१४५५	२८३२(६)	राजकीय हिसाबकी विगत		१७७४	८९–९८	*
१४५६	२०३६	राजसिंह रतनवती पत्रकथा रास	प्रभुदास	१९वीं	१९	
१४५७	२८९३(१८)	„ संधि	हीरकलश	१६१९	७१–८४	
१४५८	१८३२(२)	राजानराजावतरो वातवणाव		१९वीं	४–१५	
१४५९	३५७३(५८)	राजा भोजरी पनरमी विद्यारी वारता	भवानीदास व्यास		१५९–१६६	
१४६०	२३६०(२)	राजा भोजरी वात			१–११	
१४६१	४९०६(२)	राजसभारंजन	रसिक ?	१७९८	१–२५	* र का १७५६
१४६२	४९१५(१७)	राजा चंवरी मातरा दूहा		१८८७	४०६–४१०	
१४६३	४९१६(२)	राजा भोज माघ पंडित न डोकरीरी वारता		१८७५	४५–४६	लि क सौभाग्यगणि
१४६४	७७२१(६)	राजा रतनरी वचनिका	खिड़ियो जगो	१८२५	११९–१४१	
१४६५	७७२०(२१)	राजावली			७ वीं	सं० १२ ७ से सं० १७७० तक के सीसोदिया राणाओंका वंश परिचय
१४६६	४७९९	राणांरी वंशावली		१८वीं	१	नागरा नरेशसे अमरसिंह-पुत्र संग्रामसिंह तक
१४६७	३९८६	राजीमति मंगल	जिनदास	१९वीं	२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४६८	३६८७	राजुलपचीसी	लालचंद	१६वीं	८	
१४६९	४९१४(८)	,, बारहमासी	राजुल	१८७१	१६७–१६८	
१४७०	५४१८(३५)	,,	प्रानवर्द्धन	१८०६	१–६	लि क दयानिधि
१४७१	७१४४	,,	लालचंद	१८५८	४	लि क सरूपा
१४७२	७२४३	,,	,,	१६वीं	२	
१४७३	५१०४	राठोड रतन महेशदासोतरी वचनिका	खिड़ियो जगो	१८०२	३७	प्रथम पत्र अप्राप्त लि क. धर्मसुन्दर
१४७४	३५४६(९)	राठोडांरी वसावली		१६वीं	१४–८५	
१४७५	४४५२(६१)	,,		१८वीं	१२६ वां	
१४७६	४८३४	राठोड नाहरखानरो छंद	गाडण माधोदास	१६वीं	१	
१४७७	६४४६(७)	राधाजीकी बारहखडी		,,	१४–१६	
१४७८	१००६	राधाविलाप बारमास	प्रेमानंद	१८२०	११	
१४७९	७७४४(३)	राधाविलास		१७५८	८–१७	
१४८०	११२२(१९)	राधिका कृष्णसंवाद		१६वीं	११–१३	
१४८१	४४५२(१९)	रामकिशनजीरो छंद		१८वीं	१६ वां	
१४८२	५६०३	रामकृष्ण चोपाई	लावण्यकीर्ति	१७११	३०	रचना सं० १६७७
१४८३	३३८७	रामगुण रासो	माधोदास	१७८३	३७	
१४८४	३३८८	,,	,,	१८२६	४४	
१४८५	३५४८(५)	,,	,,	१७६१	७३–१३६	
१४८६	३५४९(१)	,,	,,	१६वीं	१–२३	
१४८७	३५६७(१)	,,	,,	१८०६	१–७१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४८८	४६२४(५)	रामगणरासो	माधोदास	१७८८	१–३२	लि क जयसोभाग्यगणि
१४८९	७७२१(२)			१८२५	२५–६६	
१४९०	७७३५	,	,	१८वीं	८१	
१४९१	३५५३(२)	राम चरित्र		१८७६	१६–१०१	
१४९२	३५४७(७)	रामचन्द्रजीरो सपखरो		१९वीं	८५ वाँ	
१४९३	६४१७	रामचंद्र सपारो	रामनाथ		६	
१४९४	७८१०(२)	रामचरणदासजीमहाराजको	रामचरणदास	१८वीं	२६–२३०	
१४९५	६८५३	रामजसरसायन		१८९४	११४	
१४९६	३५५५(३)	रामदासजीरो बात		१९वीं	१६८–१७०	
१४९७	७७४४(१)	राममनरी	गोविंददास	१७५८	१–२	
१४९८	३८९७	रामयशोरसायन	केशराज	१८७१	६५	❋ सं० १६८०में रचित
१४९९	३९८८		,	१८४७	१००	
१५००	६३५७	,		१७९४	८६	
१५०१	८०२	रामरक्षा भाषा		१८९४	१	
१५०२	२३०६(२)	,		१८५६	६–१३	
१५०३	६७४६(२)		रामानंदजी	१९वीं	८८–९२	
१५ ४	७६०६	मंत्र			३	
१५०५	४४६	रामविनोद भाषा वचनिका	रामचंद्रमति	१९३०	१५१	पत्र १०० से १०४ तथा ११७ से ११९ अप्राप्त
१५०६	२६२०			१९वीं	२६	
१५०७	११७२(१५)	रामाभरण ढूढ	जैस कवि		६ वाँ	
१५०८	७१४०	रामप्रश्नार्थणिमध्य ग्यारह प्रश्न		२०वीं	७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५०६	३४८४	रावणसवाद	लखण्यसमय	१८वीं	२	
१५१०	११२२(२०)	,,		१६वीं	१३–१४	
१५११	७७२२(८)	राव सत्रसालरो गीत		१८वीं	१०५ वां	
१५१२	४४५२(७५)	रासभचक्र		,,	१२३ वां	
१५१३	२५३६	राहुविचार		१६वी	१	
१५१४	२२१५	रात्रीभोजन चोपाई	धर्मसमुद्र	१६७७	६	
१५१५	३४८३	,,	,,	१७५४	७	
१५१६	३५७३(१७)	,,	,,	१६वीं	५१–५७	
१५१७	४४५७	,,	,,	१७२३	७	लि क. भक्तिविशाल
१५१८	४६१४(४३)	,, रास		१८७७	२६८–२७२	
१५१६	४६१४(४१)	,, सज्झाय			२६६ वां	
१५२०	४६१४(४२)	,, ,,	कवियण ?	,,	२६७–२६८	
१५२१	६२६	रीसालू कुवररी वारता		१८६०	७	
१५२२	३५५३(४)	,,		१६वीं	१२७–१५६	
१५२३	३५७३(६०)	,,		,,	१७१–१७५	
१५२४	३६६०	,,		१८१०	१५	
१५२५	४६०५(१–२)	,,	नरवदो चारण	१८७५	१–२५	लि.क अनूपविजय
१५२६	३५७३(४५)	रीसालुरा दूहा		१६वीं	१०६ वां	
१५२७	७१२२	रुक्मिणीमगल (कृष्णजीको ब्याहलो)		,,	१२–४२	अपूर्ण
१५२८	६६७५	रुक्मिणी ब्याहलो		१८६७		गुटका, स० ४८ से ६४ तकके पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५२६	४०७६	रुक्मिणी वली सबालावबोध	पथ्वीराज	१८२६	४३	लि क जीवणदास टी कुशलधीरगणि
१५३०	४०७७	" री सटीक	टी लर्ि धधिज्ञान निवनिधान	१७८६	२८	
१५३१	७१६५	" नागदमण आदि		२०वीं	गुटका	जीर्ण
१५३२	४०७८	" राजस्थानी अर्थसहित		१८वीं	२७	
१५३३	८७२	रुक्मिणीहरण		१६०४	१२	
१५३४	८७५	,			६	
१५३५	२२१०		विजराज	१६वीं	७	
१५३६	५२२१	रास		,	१५	पत्र स० १ १२ अप्राप्त
१५३७	२३६४(२)	रूपदीपक पिंगल	भवानीदास पुष्करणा	१८५८	७	* सं० १७७६में रचित
१५३८	५८६४	रूपसेनकुमार रास सचित्र		१८वीं	१३	लि क साध्वी मेहश्री
१५३९	६५०(४)	रूपसेनरी कथा			८–६	
१५४०	३५४३(२)	रेंटिया सज्झाय	रतनबाई	१८८२	२–३	
१५४१	६६३७(४)	रवासके पद	रवास	१८११	२०१–२०६	लि क रामदास
१५४२	३५७३(५६)	रोहिणी तपमहिमास्तवन	श्रीसार	१६वीं	१६६ वां	
१५४३	३५७५(५५)	,		२०वीं	२६०–२६४	
१५४४	४०२७	,		१८वीं	२२	
१५४५	२५६६	लगनदोषावली		१८८१	३	
१५४६	,५५५(२७)	लाखा फुलाणीरी वात		१८२६	१५६–१६१	*
१५४७	११२२(६१)	कवित्त		१६वीं	८३ वां	*
१५४८	३५००:	लीलावती चोपाई	हेमरतन	१७वीं	१६	सं० १७७३में पाटणमें रचना
१५४९	६११६	"	नाभवर्द्धन	१७४२	१४	पत्र १ ३ अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५५०	६३७८	लीलावती चोपाई	लाभवर्द्धन	१६वीं	३६	
१५५१	३५६४(२)	लीलावती भाषा	लालचंद	१८६१	११–३५	
१५५२	३७१८	,,	,,	१८४५	२१	स० १७३६में बीकानेर में रचित
१५५३	३७२३	,,	,,	१६वीं	१५	
१५५४	६०५६	,,	,,	१७८३		
१५५५	४८३६	,, रास	उदयरतन	१८०७	१६	लि.क. जेठा
१५५६	५२८६	,, ,,	,,	१६वीं	१२	स० १७६७में रचित
१५५७	६८७	लीलावती सुमतिविलास रास	,,	१८४२	१४	
१५५८	२०५०	,,	,,	१८१७	१३	
१५५९	३२२७	,,	,,	१८७१	११	
१५६०	३५१५	,,	,,	१८वी	१५	
१५६१	३५६७(८)	लेखा		१६वीं	१०७–१०८	
१५६२	४६१४(२५)	लकायत निराकरण प्रतिमा स्थापन रास	सुमतिकीर्ति	१८७७	२३४–२४२	
१५६३	३५५५(१०)	वृ वबहुतरी	वृ द	१६वी	१–२	
१५६४	२८६३(१२३)	वृद्धगुर्वाविली	हीरकलश	१६१९	१७८–१८२	
१५६५	३५१३	वृद्धसागर निर्वाण-रास	दीपो	१८०५	१०	
१५६६	४४५२(६२)	वृद्ध जवानको झगडो		१८वी	११८ वाँ	लि.क प्रीतिसौभाग्य
१५६७	३४८६	वच्छराज चोपाई	आनंदविधान	,,	२१	
१५६८	४०८८	,,	जिनोदय	१८६१	३३	लि.क. रूपविजय
१५६९	२१५८	वकचूल कथा		१६वीं	१८	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५७०	४७८१	वध्याकल्प		१८१४	४	
१५७१	७७२६	वंशभास्कर	सूर्यमल	१९४३	१८४	
१५७२	७७२७	"		१९४०		लि क बारहठ बालाबक्सजी
१५७३	१६८०	वचनामृत	सहजानंद स्वामी	१९वीं	१०२	
१५७४	११२२(६६)	वणिकछप्प			८५ वां	
१५७५	१०५४	व्याख्यानपद्धति			२	
१५७६	२६५६	" वचनिका		१९वीं	प्लट ३६	फोटो कापी
१५७७	२८६३(८)	वर्तमानादि चोवीसीनमस्कार	हीरकलश	१७वीं	४–५	
१५७८	७७२१(३)	वमक बारहो निसाणी		१८२५	९९–११०	
१५७९	४९२४(६)	"	केशवदास	१७९३	१–१४	लि क जयसौभाग्य
१५८०	४७१६	वर्णोत्पत्ति		१९वीं	२	
१५८१	७१५१	वर्षाऋतुका कवित्त		१८७६	७५	लि क भरुवास
१५८२	२६४६	वशीकरणविधि		२०वीं	१	
१५८३	१८३६(४)	वस्तुपाल तेजपाल रास	समयसुन्दर	१९वीं	१९–२३	
१५८४	२२१३(३)	"	"	१८३८	४–५	
१५८५	३४८५	वसुदेवकुमार चोपाई	हर्षकुल	१८वीं	८	
१५८६	३३३५	वसंत राजशाकुन भाषा		१८५०	१७६	
१५८७	५३७६(२०)	वारसेनर्मानकथा			२२९–२४२	
१५८८	२८९३(४९)	वासप्रास्ताविक	हीरकलश	१७वीं	८९ वां	
१५८९	२१२४	वासुपूज्य पुण्यप्रकाश रास	सकलचन्द्र	१७४१	२९	
१५९०	२३७४(१३)		"	१८५७	४७–६३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५९१	३८६९	विक्रम खापरा चोपाई	अभयसोम	१७९७	९	
१५९२	६७३८	,,	,,	१९वी	१६	
१५९३	१८१५	विक्रमचरित्र प्रबध	उदयभानु	१५६७	२०	
१५९४	६४१४	,,	हेमानंद	१९वीं	२७	
१५९५	६९१५	चोबोलीसतीचोपाई	अभयसोम	१८९५	११	
१५९६	३५५५(२८)	विक्रम चोबोली चोपाई	जिनहर्ष	१९वीं	१६२ वां	
१५९७	२१२७	,,	अभयसोम	१८६९	८	स० १७२४में रचित
१५९८	२१४३(३)	विक्रम चोबोलीरी वात		१८६०	७–८	
१५९९	२८९०	,, चोपाई		१९वीं	२२	अत्य २३वां पत्र अप्राप्त
१६००	२२५५	,, ,,	,,	१७६८	११	
१६०१	३९००	,,	,,	१७८२	१२	
१६०२	१०११	विक्रम चोबोली तथा प्रहेलिका	जिनहर्ष	१९वी	२	
१६०३	२३७५(४)	विक्रम पचदड कथा	सामलदास	१९०६	१४०–१७९	
१६०४	२२०५	,, चोपाई	लक्ष्मीवल्लभ	१८५३	११६	
१६०५	३८६८	,, ,,	,,	१८वी	७२	
१६०६	३९५१	,, ,,	,,	,,	७१	
१६०७	३९०२	,, ,,	,,	१८८१	८४	
१६०८	३९९४	,, ,,	,, कीर्ति	१९वी	१०९	
१६०९	२०८०	,, ,, रास	नरपति	१७९२	३४	
१६१०	२१२८	विक्रम रास	लाभवर्धन	१८६९	२३	
१६११	१८२५	विक्रमसेन चोपाई	पदमसागर (?)	१८१९	४५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६१२	२०१६	विक्रमसेनचोपाई	परमसागर	१६३५	६१	र का १७२४
१६१३	३८९८	,	मानसागर	१८२८	३६	
१६१४	३८९९	,		१७८४	४८	
१६१५	३९९१	,		१७६८	३३	
१६१६	३५७३(५६)	विक्रम गनीसर वारता		१९वीं	१५१–१५३	अपूर्ण
१६१७	७०१४	विक्रमादित्य भूपाल पंचदंड चरित्र	लक्ष्मीवल्लभ गणि	१७६२	५५	र का सं० १७२४
१६१८	६४१५	विक्रमादित्यलावणी	धमवेवी (?)	१९७७	६	लि स्था वेगढ़
१६१९	१०१६	, चरित्र चोपाई	नरपति कवि	१७०६	३२	
१६२०	३९०१	, नवसेन कन्या चोपाई	लाभवर्धन	१८४८	१९	
१६२१	२०९२	विचारबालावबोध		१७वीं	१७	
१६२२	११२३(१६)	विचाररत्तयन	सेवक		७७ वाँ	
१६२३	११२२(६)	विजयप्रभसूरि नीसाणी छन्द	वद्धि	१९वीं	४ था	
१६२४	३५७५(२१)	विजयसेठ विजयासेठाणी चोढालियो	चंद्रकीर्तिसूरि	२०वीं	९५–९७	
१६२५	७६२	, लावणी	लालचन्द	,	३	
१६२६	२२२७	विद्याविलासचोपाई	राजसिंह	१७वीं	९	
१६२७	३९५२		"	१६६३	१३	
१६२८	३९९७		जिनहर्ष	१८५०	२१	
१६२९	६१११	,	,	१८२९	१८	
१६३०	११२३(१)	पवाडउ	हीराणदसूरि	१६३१	२–५	सं० १४८५में रचित
१६३१	१८२४(२)	,	,	१६वीं	४–८	
१६३२	१८२७			१६७६	९	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६३३	२०१३	विद्याविलास पवाडऊ	हीराणदसूरि	१६वी	५	
१६३४	३५४४	,,	हीराणद	१७वी	६	
१६३५	१००४	विनयचटरास	ऋषभसागर	१८७६	५३	
१६३६	४०६६	विनयचट श्रेष्ठिपुत्र कथा	,,	१६वीं	७०	स० १८१०में रचित
१६३७	२१२३	विमलमत्री रास	लावण्यसमय	१८वीं	२६	
१६३८	२३७४(१७)	,,	,,	१८५७	८३–१४१	
१६३९	३५३४	,,	,,	१७वीं	६५	
१६४०	४४५२(४१)	विमलसाहजीरो सिलोको	शांतिविमल	१८वी	४५–४८	
१६४१	४१४५	,,	,,	१६वी	१४	
१६४२	३५४६(१)	विमेकवाररी नीसाणी	केसोवास	१८०६	१–५	
१६४३	३५५५(१८)	,,	,,	१६वी	११४–१२१	
१६४४	३५५५(२२)	,,	,,	,,	१४५ वां	
१६४५	३५७३(७)	,,	,,	,,	३० वां	
१६४६	३६६६	,,		,,	११	
१६४७	३५५५(२६)	विरमदे सोनगरारी वात		१६वी	१६३–१६८	
१६४८	२५१७	विवाह दोप		१६वी	६	
१६४९	६८२	,, पटल चोपाई	अभयकुशल	,,	६	
१६५०	३७३४	विवाह दोप वालावबोध सहित	अमरसाधु सोमसुन्दरशिष्य	१८१६	३२	
१६५१	३७७२	विवाहपटलभाषा	मतिकुशल	१८६०	४	
१६५२	२८६३(११८)	विविधवृत्टात गीत		१७वीं	१७३ वां	
१६५३	२८६३(१०५)	,, मुहूर्तनक्षत्र विचार		,,	१६४–१६५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६५७	३५७३(२५)	विषयस्तवन		१९वीं	७० वां	
१६५८	४४५२(५३)	विषहरा विचार ?		१८वीं	१०९ वां	
१६५४	४९१४(४)	विषापहार स्तोत्र	अचलकीर्ति	१८७१	१६०-१६१	
१६५८	६३३४			२०वीं	१३	
१६५६	२२९५	विसरभजन	सिवदान	२०वीं	२	
१६५९	३५७५(८३)	विहरमान स्तवन	धर्मसी	२०वीं	३६१-३६५	
१६६०	३५७५(६७)	बीकानेर मडन आदि जन स्तुति	हीरवल्लभ	१७वीं	६९ वां	
१६६१	३५५९(३)	बीझा सोरठरी बात		१९वीं	५१-६५	
१६६२	३५६२(१३)			१९७०	८२-११६	
१६६३	३५७५(६७)	वीरजिन गुहली	विद्यारंग	२०वीं	२९९ वां	पद्मविजयकृत बालावबोध सहित
१६६४	३५७५(८१)	वीरजिन पचकल्याणक स्तवन	सकलचंद	,	३४६-३५२	
१६६५	४१६	वीरजिनस्तवन	यशोविजय	१८७६	८६	
१६६६	३५७५(७८)	वीरजिनस्तुति	,	२०वीं	३२७-३४०	
१६६७	३५७५(६५)	वीरदेशना स्तवन	शिवचद पाठक	,	२६७-२६८	
१६६८	३५७५(७२)	,		१८वीं	१५२-१५६	* लि ■ प्राणवराम
१६६९	२१४८	वीरभाण उदभाण चौपाई	कुशलसागर	१८४२	४८	
१६७०	७७२२(१४)	वीरमदे ईडरिया आदिके कवित्त		,	३०६ वां	
१६७१	७७६९(१)	वीरमदे पमारी वारता सचित्र		१८५६	१-३७	चित्र सं० १८
१६७२	४१३९	वीरसेन राजकथा आदि		१९२४	८	सं० १७४५में रचित लि क जोधो
१६७३	२१४३(४)	वीसलदेव सूमर सिकाररी बात		१८६०	९-१३	*

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६७४	३५७५(२३)	वीसस्थानकस्तवन	वसतो मुनि	२०वी	१००–१०२	
१६७५	३९९८	वीसस्थानक रास	जिनहर्ष	१८२५	१८१	
१६७६	२३७४(१४)	,, पद पूजा तथा विधि	लक्ष्मीसूरि	१९वी	६३–७१	
१६७७	११२३(१५)	वीसायत्र चउपई	अमरसुन्दर	१७वीं	७६ वां	
१६७८	६३४	वेतालपचीसी		१८८०	६५	
१६७९	२१४४(१)	,,		१९वीं	१–१५	स० १६१९में रचित । दूहावध
१६८०	२१४३(५)	,,	देवसील ?	१८६०	१३–३५	
१६८१	२३६०(६)	,,	देवीदान नाइता	१८४९	२९–५४	
१६८२	३२४३	,,	,,	१८५४	१९	
१६८३	२८३०	,	,,	१९वी	१३	
१६८४	३५५४(९)	,,		१८८०	१–१३	
१६८५	३५७३(१)	,, चोपाई	हेमाणव, हीरकनश शिष्य	१८१२	१–१७	
१६८६	५३६८	,,		१९वी	४०	
१६८७	६४४३	,,	म. अनूपसिंह	१८९१	४४	
१६८८	७०४४	,,	शिवदास	१७२६	५२	लि.क पुरुषोत्तम
१६८९	७७२२(२)	,, रा कवित्त		१७८४	३७–४५	* लि क. सिरेकवरी
१६९०	७७४३	वेदस्तुति भाषा	राजसिंघ	१९वी	३३–४६	कवित्त ६१
१६९१	३९०३	वैदर्भी चोपाई	प्रेमराज	१८वीं	७	*
१६९२	३९९५	,,		१८५९	६	
१६९३	३८५३	वैद्यकगुणसार		,,	१०८	१,३ पत्र अप्राप्त
१६९४	२४०९	,, नुखसा		२०वी	६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६९५	३५६७(११)	वचक फक्कड़		१९वीं	१३-१२६	
१६९६	३५६७(३३)	„			१८१-२२६	
१६९७	३८३२	„ सार		१९वीं	२७	
१६९८	२३८२			१६१६	२४०	
१६९९	३५७५(५१)	वैराग्यसज्झाय	विजयभद्र	२०वीं	२४८-२५०	
१७००	३५४८(१)	शकुनमरी वात		१८वीं	३-१६	*
१७०१	३५१०(१)	शकुंतला रास	धर्मसमुद्र	१८वीं	१-३	
१७०२	२५७८	शकुन विचार		१९वीं	१	
१७०३	३५७५(३४)	शकुनावली		२०वीं	१५४-१६६	
१७०४	६८६३	शकुनदीपिका चोपाई		१९वीं	८	
१७०५	४४५२(६२)	शकुनरा कवित्त		१८वीं	१२० वां	सवाई जयसिंह और बखतेसयुद्ध का भी वर्णन है
१७०६	४४५२(३)	शकुनरी चोपाई			३१-३२	अपूर्ण
१७०७	४४५२(७)	विचार		„	११ वां	
१७०८	४१६०	शकुनावली		१७वीं	२	
१७०९	५१२३(४)			१८वीं	१९-२७	
१७१०	२८९३(२८)	शतवय दिन प्रहर महूर्त घड़ी संख्या चोपाई		१७वीं	६४ वां	
१७११	६०२	शतसय घड़ी तथा राशिफल		१७वीं	१२	
१७१२	१७५०	„		१८६८	२२	
१७१३	३७७८	„		१८२७	१६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७१४	४६८६	शतसवत्सरी		१८वी	६	
१७१५	४७२५	,,		१९वी	४६	
१७१६	३५६४(६)	शनिचार		१८६१	३३–३४	
१७१७	१७७८	शनिपुत्तलक विचारादि		१८वीं	२	
१७१८	४४५२(६५)	शनीसररो गुण छन्द	हेमकवि	,,	११६ वां	लि.क प्रीतिसौभाग्य
१७१९	४१६६	शनीसरकथा		१८४०	२१	लि क. गोपाल मिश्र
१७२०	४७८८	,,		१९वी	६	
१७२१	४८२४	,,		१८३६	२	
१७२२	६३०७	,, छन्द		१९वी	२	
१७२३	२३०६	श्यामाजीकी आरती	मगनीराम	२०वी	१	
१७२४	२३०७	,,	,,	,,	१	
१७२५	२३१७	,,	,,	१९१६	२	अजमेरमे लिखित
१७२६	१०५३(२)	श्राद्धविधिप्रकाश	क्षमाकल्याण	१८४१	१७–२७	
१७२७	३५६७(१८)	श्रावकारी चोरासी न्यातरो छन्द		१९वी	१३५ वां	
१७२८	७४४४(८)	श्रावक अतिचार		१८८५	१८०–१९०	
१७२९	७१२२	,, कथा कोष भाषा		१९वी	२१	अपूर्ण
१७३०	७७५३(८)	,, री सज्झाय	जिनहर्ष	१८३७	४२–४४	
१७३१	२०२८	श्रीआनी कथा		१९वी	७	
१७३२	१५६७	श्रीचन्द्रकेवली रास	देवविजय	१७१७	९२	
१७३३	९५०(१)	श्रीदत्त श्रीमतीरी कथा		१८वीं	१–२	
१७३४	७८१६(१)	श्रीधरलीला		१८३१	४८	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७३५	६०२४	श्रीपालकथा	रत्नशेखर	१७२७	२६	
१७३६	६३५१	,, चरित्र भाषा		१९१७	१०२	
१७३७	६६१६	,	सुजसविजय	१९२८	७८	लि क मागूमल प्रथम पत्र अप्राप्त
१७३८	३९०५	श्रीपाल चोपाई	महिमोदय	१८५१	४३	
१७३९	४००२		जिनहर्ष	१८२३	२५	
१७४०	४१३८	,	,	१८६४	३५	
१७४१	६५२७	,	ग्यानसागर	१७९१	३४	
१७४२	७०८९	श्रीपाल नरेंद्र कथा	हेमचंद	१८८३	१३७	लि क गोडीचंद
१७४३	७२४८			१९वीं	३१	
१७४४	९८०	श्रीपाल रास	विनयविजय	१९२३	७८	
१७४५	९८५		ज्ञानसागर	१८वीं	८	
१७४६	९९१	,	जिनहर्ष	१८१४	२७	
१७४७	१००१	,,	विनयविजय	१९१७	८४	
१७४८	११२४(२)		ज्ञानसागर	१६७५	२१–३७	
१७४९	२०५८	,	विनयविजय	१७८५	४६	
१७५०	२१३८	,	जिनहर्ष	१८३०	३३	
१७५१	२१५४		जिनहर्ष	१८७८	४३	
१७५२	३४८९		गुणरत्न	१७वीं	२२	
१७५३	३९०६		जिनहर्ष	१८३३	२८	
१७५४	३९०७	,	विनयविजय	१८४२	४६	
१७५५	३९५७	,	ज्ञानसागर	१७५२	११	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७५६	४४६३	श्रीपाल रास	ज्ञानसागर	१७३२	१३	
१७५७	६५२८	,,	विनयविजय	१८५७	५५	
१७५८	६७४६	,,		१८७७	गुटका	
१७५९	५३७३(५)	,,		१८०९	१०९–११८	
१७६०	२१५०	श्रेणिक चोपाई	धर्मशील	१८३५	२३	
१७६१	२१५१	,,	जिनहर्ष	१९वी	१३	
१७६२	२०३०	,,	सोमविमल	१९२०	२१	
१७६३	४४५२(७७)	श्वानचक्र		१८वीं	१२३ वां	
१७६४	२८९३(८२)	श्वानचेष्टा विचार		१७वीं	१४३–१४४	
१७६५	२८९३(७५)	,, शकुन विचार		,,	१४०–१४१	
१७६६	२८९३(४४)	शत्रु जय इगतालीस नाम गर्भित-नमस्कार		,,	८७–८८	
१७६७	६३८९	शत्रु जय उद्धार	भानुभेरु	१६६७	६	*
१७६८	१००२	,, , रास	समयसुन्दर	१८३६	८	
१७६९	१८३९	,, ,,	,,	१८२९	१०–१९	स १६८२में नागोरमे रचित
१७७०	२२२६	,, ,,	,,	१८वीं	२३	
१७७१	३५५४(३)	,, ,,	नयसुन्दर	१९वीं	६०–६२	
१७७२	३९५३	,, ,,	,,	१६६५	६	
१७७३	६५३८	,, ,,	,,	१८वीं	६	लि क. दानविजय
१७७४	५४३६(२)	,, रास			५–१७	
१७७५	३५७५(५७)	शत्रु जयवीनती	देवचन्द्र	२०वीं	२७७–२८०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७७६	२८९३(४)	शत्रुंजय स्तवन	राजकलश	१७वीं	३ रा	
१७७७	३५७८(२७)	शांतिजिन स्तवन	मेघमुनि	२०वीं	११३-११७	
१७७८	३५३६	शांतिनाथ चोपाई	ज्ञानसागर	१८वीं	५०	
१७७९	३९०४			१८८७	२२	
१७८०	२३९८(३)	शांतिनाथ स्तवन	गुणसागर	१९वीं	२९-३१	•
१७८१	२३९८(१०)	„ „	शांतिकुशल		३९ वां	
१७८२	३५७३(२३)	„	हर्षधर्म	„	६८-६९	
१७८३	५८९०	रास		१८२४	२२०	पत्र सं० १०४ १०५ अप्राप्त
१७८४	२०७१	शारदा छंद	शांतिकुशल	१९वीं	३	
१७८५	२०७४	„	„	१८७०	२	
१७८६	२१०२	„		१९वीं	२	
१७८७	७७२०(७)	शारदाष्टक		१८वीं	४५ वां	
१७८८	४०२४	चरित्र	मतिसार		१२	सं० १६७८में रचित
१७८९	९५३	शालिभद्र चोपाई	„	१७७५	१९	
१७९०	९८३		„	१८१३	१५	
१७९१	१००७	„	„	१८वीं	१७	
१७९२	१८३९(१४)		„	१८३१	६७-११०	
१७९३	२०२०			१८२१	१७	
१७९४	२१८६		„	१७वीं	२५	
१७९५	२३७४(१)		„	१८५७	१६	
१७९६	३४८७			१७वीं	२४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७९७	३५५४(६)	शालिभद्र चोपाई	मतिसार	१८७९	१–८	
१७९८	३८७०	,, ,,	,,	१६८९	१८	
१७९९	३९५५	,, ,,	,,	१७वीं	१८	
१८००	३४९५	,, ,,		,,	९	
१८०१	३५५०(७)	,, ,,	मतिकुशल	१९वीं	५०–६९	
१८०२	४८०४	,, ,,	,,	,,	१२	
१८०३	५०६५	,, ,,		१८४३	१८	लि स्था सवाई जयपुर
१८०४	६१४०	,, ,,		१८१८	४८	
१८०५	६५४३	,, ,,		१८५१	२६	
१८०६	६८४६	,, ,,		१८२८	१७	लि क. खुशालचंद
१८०७	७५६३	,, ,,	,,	१७७२	१३	
१८०८	७५६४	,, ,,	,,	१८०६	२६	लि क. खुशाल
१८०९	५४५८(२)	,, श्लोक		१८५६	१–१०	
१८१०	२४१३	शालिहोत्र		१८५१	८	
१८११	३५४९(४)	,,		१९वीं	४०–४५	
१८१२	३५५०(६)	,,		,,	४१–५०	
१८१३	४७७७	,,		२०वीं	६०	
१८१४	६८२६	,,		१९१५	१०५	१,३ पत्र अप्राप्त
१८१५	७७३०	,, गुटका		१९४३	३४	लि क राव जयसिंह, वदनोर फतेबुर्जमध्ये
१८१६	७७६७	,, सचित्र गुटका		१९वीं	१३९	चित्र सं० ११८

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१८१७	७८३७	शालिहोत्र सचित्र		१९वीं	६–७२	चित्र सं० ४८
१८१८	३५७५(३०)	शाश्वतजिनवरस्तवन		२०वीं	१३०–१३८	
१८१९	२८९३(११७)	शास्त्रीय विचार		१७वीं	२३९–२४२	
१८२०	११३८	शिलनग्रथन	केशवदास	१९वीं	१६	
१८२१	३५७५(५३)	शिलामणस्वाध्याय		२०वीं	२५१–२५२	
१८२२	२८५२	शिवरात्री कथा		१८६६	१४	
१८२३	३५४६(२१)	,,		१८१९	१४२–१४३	
१८२४	३२७	शिवरात्री कथा चोपाई	जावड़ ?	१७८६	२४	
१८२५	७७२२(११)	,,		१७२७	१२५–१५२	
१८२६	३९५६			१७वीं	४	
१८२७	३५४६(१४)	शिवरात्रीरी वारता		१८०५	११३–११५	
१८२८	३५५५(१४)	शिवरात्रीरी कथा		१९वीं	९५–९९	
१८२९	४००१	,,		१८वीं	५	
१८३०	५२९९	शीतलनाथस्तवन	समयसुन्दर	२०वीं	३२–३४	
१८३१	३५७५(५)	शीयलबावनी		१९वीं	२	
१८३२	२०५७	शीलरक्षारास	विजयदेवसूरि	१७वीं	७	
१८३३	२१६५	,,	नयसुन्दर	१६७३	९	
१८३४	३५७३(३७)	,,	विजयदेवसूरि	१९वीं	९७–१०१	
१८ ५	३८९०			१७वीं	६	
१८३६	३४७८	शीलरास		१६४४	१०	
१८३७	४०७१			१७९२	७	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१८८०	२०२३(२)	स्थूलभद्रकोश्याभास	नयसुन्दर	१७३४	२–३	
१८८१	९२५	,, गुणरत्नाकर छंद	सहजसुन्दर	१८८१	२५	
१८८२	३५७५(५६)	,, रास	उदयरतन	२०वीं	२६४–२७७	
१८८३	१५६५	,, शीयल वेली	वीरविजय	१८७१	११	
१८८४	३५५०(१४)	,, सज्झाय		१९वीं	८९–९०	
१८८५	४९२४(१४)	,, ,,	सिद्धिविजय	,,	३५–३६	
१८८६	७२४७	,, स्वाध्याय	,,	,,	१	
१८८७	८८८	सदैवच्छसावलिंगारी वात		१७५२	८	
१८८८	९२१	,,		१९वीं	१८	
१८८९	११४४(५)	,,		,,	३५–४७	
१८९०	२१२९	,,		१८६१	४	
१८९१	३५१७	,,		१८वीं	११	
१८९२	३५५५(२१)	,,		१९वीं	१३३–१४५	
१८९३	३५५९	,,	कविजन	१८२०	१–३८	
१८९४	३५७३(६)	,,		१९वीं	२२–२९	
१८९५	४९१८(२)	,,		१७९९	२१–५२	लि क प्रोहित जोधा मनोहरपुरका
१८९६	७१७३	,,		१८७९	२७	लि क. मयुरालाल
१८९७	७७२२(५)	,,		१९वीं	५३–५६	
१८९८	५४५८(२)	,, सचित्र		१८३८	५४	चित्र स. ७
१८९९	४९२४(१)	,,		१७८७	१–८	
१९००	४९१६(४)	,,		१८७५	५४–७२	लि.क सौभाग्यगणि

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९०१	४१४७	सदय वृक्षावलिंगारी वात		१८१९	३९	
१९०२	९९८९	,,		१८५६	१६–१०८	लि क राधाकृष्ण
१९०३	७७६८	,, सचित्र गुटका		१८वीं	१–७ तथा १६–२५	चि ॥ ७७
१९०४	७८४५			१७वीं	७–८४	चि ॥ १४
१९०५	५२०२(७)	,, अपूर्ण		१८८५	१४३–१४१	
१९०६	२०१४	सनत्कुमारचक्री रास	लब्धिविजय	१९वीं	१०२	
१९०७	५११६	प्रबंधचोपाई		१८००	२०	प्रथम पत्र अप्राप्त
१९०८	१०१३	सनीश्चरछंद		१८वीं	१	
१९०९	२१०४	,,		१९वीं	१	
१९१०	२३०९(४)	,,	हेम	,,	१५–२०	
१९११	३०२०(१)	,,	,,	१८वीं	१	
१९१२	३५४८(२)	,,	,,	,,	१६–२०	
१९१३	३५५४(२०)	,,		१९वीं	३१ वां	
१९१४	३५६२(७)	सनीसरछंद	हेम	२०वीं	५६–५९	
१९१५	१६५४		,,	१७४४	१	
१९१६	२१८५	सनीसरजीरी कथाचोपई	जोरावरमल्ल	१८८०	८	
१९१७	३५६२(८)	,, जी रो स्तोत्र		२०वीं	५९–६०	
१९१८	३५५४(१६)	सनीसरकथा		१९वीं	३१ वां	
१९१९	१८८४	,,		,,	२	
१९२०	२३२७	,,	जोरो	१८६५	१–२४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९२१	२९२२	सनीचरकथा		१८८३	३०	
१९२२	३५६२(६)	,,	जोरो	१९७०	३४–५६	
१९२३	३५६२(९)	,, वारता		१९७०	६०–६६	
१९२४	७४४४(१२)	स्नात्रविधि	देवचंद्र	१८८५	२१२–२४५	
१९२५	२२१७(४)	सप्तव्यसन दूहा कुंडलिया	भीम	१८वीं	३ रा	
१९२६	११२२(५३)	सपाईनीजातिसबद		१९वीं	७२ वाँ	
१९२७	२२७६	,,	मगनीराम	१९२०	४	
१९२८	५१२३(८)	स्फुट ज्योतिषचक्रादि		१८८५	४१–४९	
१९२९	७७५३(१५)	स्फुट पद्य		१८३७	८९–१०६	
१९३०	४९१४(५१)	सबोधसत्तानू दूहा	वीरचन्द	१८७७	२७९–२८३	
१९३१	३९०८	सम्यक्त्वकौमुदी कथा चोपाई	रूपऋषि	१८८६	४२	
१९३२	३९०९	,, भाषा		१८३४	३०	
१९३३	२०६३	समकितकुलकचोपाई		१७वीं	१९	
१९३४	३५४३(४)	,, सज्झाय	लक्ष्मीसुन्दर	१८८२	७–९	
१९३५	४९१४(३)	सम्मेदशिखरनिर्वाणकाण्ड		१८७१	१५८–१६०	
१९३६	४७२४	समयरे राजारो फल (वर्षपति फल)		१९वीं	१	
१९३७	२३७४(४)	समरासारगकडखो	देपाल कवि	,,	२५–२६	*
१९३८	३५७५(६९)	समवसरणदेशना	शिवचन्द्र	२०वीं	३००–३०३	
१९३९	३५७५(७५)	,, स्तवन	धर्मवर्द्धन	,,	३०८–३११	
१९४०	१११५	,, स्तव बालावबोध		१९वीं	६	
१९४१	३५०७	समाधितन्त्र बालावबोध	पर्वतधर्मार्थी	१७६५	८५	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९४२	५३७६(१५)	समाधिरास			२०२–२०३	
१९४३	३५७५(४६)	स्याद्वनमयस्तवन	श्रीसार	२०वीं	२३६–२४०	
१९४४	४२३	सरस्वती छन्द		१८०५	१	
१९४५	९९७		शान्तिकुसल	१९वीं	२	
१९४६	२३१२	,	हेम		२	
१९४७	२३२७		दयासूर	,	१६–१७	
१९४८	२८९३(२०)	,	लावण्यसमय	१७वीं	१२ वां	
१९४९	२८९३(२१)	,,	मतिसुन्दर			
१९५०	३२४४	,	सहजसुन्दर	१९वीं	२	
१९५१	३५४८(९)	,	हेम	,	१४–१६	
१९५२	४८०२			,,	३	
१९५३	४२८७(१६)	सवाई भीमसिंहजीकी जोधपुर पर चढ़ाईका कवित्त		१८वीं	१२७–१३०	*
१९५४	२२००	सवा सो सीख	धर्मसी	२०वीं	२	
१९५५	१७५९	स्वरोदय	चरनदास	१९०२	१४	
१९५६	२५१०	,,	चिदानन्द	१९११	२१	
१९५७	३२३४	स्वातिहरण चौपाई	गोदड़दास	१८११	२०	
१९५८	३५५५(२४)	सवैया [illegible]		१९वीं	१४९–१५०	
१९५९	७७५३(१३)	,,		१८३७	७० वां	
१९६०	४२८७(३)	, इकतीसा	बनारसीदास	१७२६	१२–१३	बनारसीदासके स्वाक्षर लिखित ५ पद्य हैं
१९६१	४०८१	, बावनी	राजसी	१९वीं	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९६२	४९०६(४)	सवैया बावनी	राज कवि	१७९८	२५–३४	लि.क केवलसौभाग्य
१९६३	४४५२(२०)	,, सपखरो आदि		१८वीं	२० वां	
१९६४	४४५२(१४)	,, संग्रह	प्रताप, ब्रह्म गुलाल आदि	,,	१७ वां	लि.क प्रीतिसौभाग्य
१९६५	४४५२(८३)	,, ,,	श्याम, काशीराम आदि	,,	१२४ वां	
१९६६	५५२४	सत्रहभेदी पूजा	साधुकीर्ति	१८६४	९	
१९६७	६३३	सहमफल स्पष्टाध्याय		१९वीं	१	
१९६८	५९१	साठ सवच्छरी		१७वी	५	
१९६९	२५५६	साठ सवच्छर दोहा		१९०६	१२	
१९७०	२८३७	साठी सवच्छर फल		१८९०	४५	
१९७१	३५६४(४)	,,		१८६१	१–२२	
१९७२	५४१०	,,		१८वीं	८३	प्रश्नावली और मोहर्रमके चांद आदिका फल है
१९७३	३५५५(६)	सात वाररा दूहा		१९वीं	१६ वां	
१९७४	४९२४(१२)	,, विघडिया		१७९०	१३–१४	
१९७५	२८९३(३६)	सात विसन गीत	हीरकलश	१६२२	७० वां	
१९७६	४९२४(११)	सात सखीरो सवाद		१७९३	१२–१३	
१९७७	४४५२(९४)	,, (प्रहेली)		१८वी	१३० वां	
१९७८	२१०८	साधुप्रतिक्रमण बालावबोध		१७वी	१८	
१९७९	२१७६	साधुवदना	पासचद	१७३५	६	
१९८०	२२०४	साबप्रद्युम्न चोपाई	समयसुदर	१८३८	२५	
१९८१	२८८६	,,	,,	१६९४	२२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९८२	४०००	सांबप्रद्युम्न चोपाई	समयसुन्दर	१८वीं	१५	
१९८३	२८९३(३०)	सामयिक बत्रीस दोषविवरण कुलक चोपाई	हीरकलश	१७वीं	६५–६६	
१९८४	२५७२	सामुद्रिकशास्त्र भाषा		१७७४	४	
१९८५	८६५	साररित्नमणि रास	सवेगसुन्दर	१८वीं	६	
१९८६	१८६८(५)	सावण	मालदेव	१७९३	१–१३	
१९८७	११२२(४३)	सासबहू री सवाद		१९वीं	५३ वां	
१९८८	११२४(४)	साहराउत नीलवण भास	ज्ञानसागर	१६७५	१	
१९८९	३७५१	साहाकाळणरा दूहा	मोतीराम	१९वीं	३	
१९९०	३५४८(७)	साहिजादा कुतबुदीन साहबरी वारता		१७९६	२–१३	
१९९१	३५१२	सिद्धचक्ररास	ज्ञानसागर	१६८५	१६	
१९९२	३५७५(५८)	सिद्धक्षत्र चत्यपरिपाटी	देवचंद्र	^०वीं	२८४–२९१	
१९९३	३५११	सिद्धांतचोपाई		१७वीं	१	
१९९४	२८९ (५५)	बोल			९०–९३	
१९९५	७३०५	" "		१६१०	४७	
१९९६	७५४६	सिद्धांतसारोद्धार		१७७६	५९	प्रारंभ ३ पत्र त्रुटित
१९९७	६३८३	सिरोसांतणी भास	लावण्यसमय	१८वीं	२	
१९९८	३५५५(१६)	सिरोही मांडवी बीकानेरी जोधपुरी बोलियां		१९वीं	१०२ वां	०
१९९९	४००६	सिंहलसुत चोपाई	समयसुन्दर	१७९४	६	लि क कुशलहर्ष

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२०००	४८२८	सिंहलसुत चोपाई	समयसुंदर	१७वीं	६	
२००१	६११	सिंहासनबत्तीसी		१७६०	१३	
२००२	२१४४(२)	,,	क्षेमकर ?	१८३३	१५–३५	
२००३	२१६८	,,	वेर्द्दवान	१७८२	२६	
२००४	२८९३(१)	,, द्वात्रिंशिका		१६२६	३	प्रत्यके ३ पत्र हैं
२००५	३१३४(१)	,, चोपाई	हीरकलश	१६वीं	१–८५	
२००६	३२६०	सिंहासनबत्तीसी	जेराज कवि	१८७८	७६	
२००७	३४६०	,, चोपाई	हीरकलश	१७वीं	१४२	
२००८	३५५६(२)	,, कथा	माधव	१८८७	७८–११३	
२००९	३५६७(७)	सीकोतरी छंद		१६वीं	१०६–१०७	
२०१०	११४४(२)	सीखबहुत्तरी		,,	२८–३०	
२०११	२०७५	सीलामण ढाल		१७वीं	३	
२०१२	८६	सीताराम चोपाई	समयसुंदर	१७८३	१०२	
२०१३	१८०८	,,	,,	१७३५	६६	
२०१४	६५३६	सीताराम चौपाई	,,	१८वीं	६२	
२०१५	२०३८	,,	,,	,,	८०	प्रथम पत्र अप्राप्त
२०१६	३६५८	,,	,,	,,	८२	मेड़ता में रचित
२०१७	७७५३(२)	सीतासज्झाय	जिनहर्ष	१८३७	३०–३१	
२०१८	३५७३(२८)	सीमंधर जिन वीनती	भक्तिलाभ	१६वीं	७६–८०	
२०१९	३५७५(४)	,, ,,	,,	२०वीं	३०–३२	
२०२०	२३२७(२)	,, ,,		१६वीं	१०–१५	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२०२१	२३७४(१६)	सीमंधरजिनस्तवन		१९वीं	८०–८३	
२०२२	३५७५(३५)	सीमंधरजीको जीवाजीकी चिट्ठी		२०वीं	१६७–१७३	
२०२३	३९११	सुदर्शनचरित्र चोपाई	ब्रह्मऋषि	१८५०	१९	
२ २४	५३७०(१)	सुदर्शन सेठकी कथा	नन्द ?	१७६१	१–३१	
२०२५	४००७	„ रा कवित्त	दीपो	१८८०	२१	लि क हरभाण
२०२६	४०८९		„	१८८४	२०	लि क वाई चपा
२०२७	३९१०	रास		१८६१	१६	
२०२८	२०८३	„ शीलप्रबंध		१५७०	१३	स १५०१में रचित
२०२९	१८२३	„ सज्झाय		१७७९	३	
२०३०	३५५०(१३)	„	रूपकीर्ति	१९वीं	८८–८९	
२०३१	२८३२(४)	सुदामाकी बारालडी		१७७४	८५–८८	
२०३२	२८७५(२)	सुधनविचार चोपई	ज्ञानशील	१८वीं	१२–१३	स १५६०में रचित
२०३३	६२७४	सुबाहुचरित्र		१९वीं	[illegible]	
२०३४	६३८८		माणिक्यसूरि	१८वीं	६	
२०३५	११२३(१३)	सुबाहुरिषिसंधि	पुण्यसागर	१७वीं	७१–७४	
२०३६	३५७३(१८)		„	१९वीं	५७–६०	
२०३७	९८१	सुभद्राकथा बालावबोध	विनयकुशल		११	
२०३८	२०९६	सुभद्रारास	भावप्रभ	१८वीं	१३	
२०३९	४००८	सुभद्रासतीरो चोढालियो	मानसागर	१८७९	५	लि क चनराम
२०४०	११४२(१)	सुभाषित		१८वीं	१–१७	
२०४१	४९१२			१९वीं	४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२०४२	२१५३	सुभाषित दोहा कवित्त आदि		१७वीं	२०	
२०४३	२८९३(१६)	सुभिक्षादि वर्णन		,,	१० वां	
२०४४	२२१७(३)	सुमतिजिनस्तवन	खेम मुनि	१८वी	३ रा	
२०४५	२०६१	सुमतिनागिल चोपाई		१७६०	३२	
२०४६	५४१८(३)	सुरतपंचमीकथा	वनवारीवास	१९वी	१–८७	
२०४७	३५१०(३)	सुरप्रियऋषिसज्झाय	लक्ष्मीरत्न	१८वी	३–४	
२०४८	९६३	सुरसुन्दरी चोपाई	धर्मवर्द्धन	१७६१	१९	
२०४९	९१०	,, चरित रास	विनयसुवर	१७वी	१६	
२०५०	३९१२	,, चोपाई	धर्मशील	१८५०	२५	
२०५१	३९५९	,, ,,	नयसुवर	१७वीं	१९	
२०५२	५९३०	,, ,,	धर्मवर्धन	१८४२	२८	पत्र २० से २३ तक अप्राप्त
२०५३	४००९	,, ,,	शुभशील	१९वीं	१७	
२०५४	७२४४	,, ,,	धर्मवर्धन	१८४८	२१	
२०५५	४८०१	,, रास	नयसुन्वर	१९८८	२६	लि.क राघवकेशव
२०५६	३२८४(५)	सुरेखाहरण	वीरो	१८१६	१–८७	
२०५७	२८९३(१२८)	सुवर्णसिद्धिप्रयोग		१७वीं	१९१ वां	
२०५८	३५५५(११)	सुवावहुत्तरीकथा	वेवदत्त भट्ट	१९वीं	१–५८	
२०५९	३६६७	सूक्तिमाला		१९१२	१५	
२०६०	७३७४	सूक्तिमुक्तावली	केशरविमलगणि	१९वी	२५	लि क. इष्टहस
२०६१	११६५	सूर्यजीरो सिलोको		१८५३	१–३	
२०६२	६४१८	सूरजजीरो सिलोको		,,	२	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२०६३	२३६८(६)	सूरजजीरो सिलोको	सेवग	१९वीं	३७–३९	
२०६४	३२५५			१८०१	१	
२०६५	३५५७(३)	,		१८वीं	७२ वां	
२०६६	७७२५	सूरजप्रकाश	करणीदान	१८४१	३००	
२०६७	३५६२(३)	सूरजजीरो सिलोको		१९५६	१७–१८	
२०६८	२३६०(१)	सूडाबहत्तरी वात	देवीदान	१९वीं	१४	
२०६९	२०४४	सूरपालचरित्र रास	सकलचंद	१८वीं	१५	
२०७०	७५१	सूमपुराण (कथा)	तुलसीदास	१८८७	७	
२०७१	६७५२	सेऊसमनकी परची	गोविंददास ?	१९२९	३	
२०७२	३५४६(२)	सेरसिंह मेडतिया आदि अनेक राजाओंका सपखरा		१९वीं	६–१०	*
२०७३	३५४६(१०)	सोनीतरा विरमदेरी वारता			८६–९३	* स १४८५के समान
२०७४	२८६१(२)	सोमवती अमावसरी कथा		१८३४	८–१४	,
२०७५	४०११	, वारता		१८४३	२	लि क जीवणराम
२०७६	७७२२(३)	सोरठरा दूहा		१८वीं	४६–४८	
२०७७	२१४२(१)	सोरठबीजरी वात		१९वीं	१–५	
२०७८	५४१८(२२)	सोलहकारणका रासा			१४७–१४९	
२०७९	४९१४(४५)	सोलह स्वप्न बीनती		१८७७	२७४ वां	
२०८०	२२२४	सौभाग्यपचमी चोपाई	जिनरंग	१८वीं	१७	
२०८१	६३५८		,	,	२५	
२०८२	२३७१(१)	संकष्टचतुर्थीव्रतकथा		२०वीं	१२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२०८३	२५४३	सक्रान्ति फल		१७५४	१	
२०८४	२५४०	,, तथा पूनमविचार		१९वी	२	
२०८५	११२२(६४)	सखणीस्त्रीनो छद		,,	८४–८५	
२०८६	२८९३(८६)	सख्याताविचार		१७वी	१४६ वाँ	
२०८७	९८४	सग्रहणीचोपाई	मतिसागर	१८३१	१७	
२०८८	३९१४	,, बालावबोध	शिवनिधान	१८११	७३	
२०८९	३९६१	,, चोपाई	,,	१८वीं	१५	
२०९०	३९१५	,, बालावबोध	दयासिंह	,,	६२	
२०९१	३५७५(१८)	सतोषछत्तीसी	समयसुन्दर	२०वीं	८५–८८	
२०९२	९८९	सवेगरसायनबावनी	कांतिविजय	१९वीं	६	
२०९३	२१९३	हसराजवच्छराजचोपाई	जिनोदय	१९०९	२५	
२०९४	३९६२	,,	,,	१७वीं	२६	
२०९५	३९९३	,,	,,	१८२९	२४	
२०९६	५८९२	,, सचित्र	,,	१८३५	४४	स १६८०मे रचित, चि सं. १०३
२०९७	५४३१(२)	,, अपूण		१६१०	६४ से	
२०९८	७४०२	,,	,,	१८६६	३४	लि.क. वृद्धिचद्र
२०९९	६५३५	,,	,	१९वी	४२	
२१००	९४३	,, ,, रास	,,	१७१२	२१	
२१०१	७२२७	,, ,,	,,	१८८३	४६	
२१०२	५२०९	हसवत्सचोपई		१८वीं	६२	चि स. ६५

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१०३	५४३१(१)	हंसायली (अपूर्ण)		१६१०	५१-६४	
२१०४	४४५२(७०)	हणमतरो छंद			१२० वां	
२१०५	७७२१(१५)	हनुमान छंद	नरहरदास	१६३१	२०१-२०३	
२१०६	१८८६(१८)	हमीररासो		१८५६	२८	गुटका
२१०७	४६०२			१७८७	५६	* लि क नाथूराम पाडे गौड
२१०८	५३८४(१)		कवि महेश	१६४४	१-७०	लि क मनसाराम
२१०९	७१६७	हमीरहठवारता		२०वीं	गुटका	
२११०	२३७४(१)	हरखपुरी		१६वीं	३४-३६	
२१११	३५६७(१२)	हरजस			१२७-१२८	
२११२	६४४६(४)			,	१-४	
२११३	३५७३(१३)	हरिकेसीचरित्र नवरसरास	कनकसोम		३५-३८	
२११४	३५५५(६)	हरिगुणकष्टहरणस्तोत्र	चंद कवि	,	१४ वां	
२११५	४०१२	हरिचंदरास	जिनहर्ष	१८८२	२५	लि [illegible] क्षमा प
२११६	४८२६	,	कनकसुंदर	१८८५	१७	
२११७	५३३	हरिजसनाममाला	रतनूहमीर	१८८१	२८	
२११८	७७२१(६)		,	१८२५	१४४-१६५	
२११९	३४६१	हरिबल चोपाई	लावण्यकीर्ति	१८वीं	३०	२८वां पत्र अप्राप्त
२१२०	३५७३(२०)	धीवर चोपाई		१६वीं	६१-६५	
२१२१	११२३(२)	हरिबल रास	कुशलसंयम	१७वीं	६-२२	
२१२२	२८६३(४८)	हरियाली (हीयाली)	हीरकलश		८८ वां	
२१२३	२८६३(५०)	( )	हेमाणंद	,,	८६ वां	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१२४	२८९३(५१)	हरियाली (हीयाली)	वीरहा	१७वी	८६ वां	
२१२५	४९०५ (१०,११,१२)	हरियालीरा दूहा ,,		१९वी	३६–३८	
२१२६	२३७७(३)	हरिरस	ईसरदास बारहठ	१८०७	१६	
२१२७	३५५५(८)	,,	,,	१९वीं	९–१४	
२१२८	३५५७(८)	,,	,,	१७९६	८२–९७	
२१२९	४९२४(८)	,,	,,	१७९३	१–१०	
२१३०	५३४३	,,	,,	१८वी	५	
२१३१	७७२१(१२)	,,	,,	१९३१	१८०–१९९	लि.क. फूलगिरि
२१३२	७७५०(१)	,,	,,	१८६०	१–२१	
२१३३	४९१४(२)	हरिवंशपुराणनो रास	ब्रह्मजिणदास	१८७१	७–१५७ १७१–२०१	लि.क चन्द्रकीर्ति
२१३४	२५४८	हस्तरेखाचित्र		१९वी	१	
२१३५	४४५२(९२)	हाथियारा बखाण		१८वीं	१३०	
२१३६	४९२४(९)	हाथीरा बणाव		१७९३	११ वां	
२१३७	३५६७(५)	हिंगुलाज प्राणदेवायण	ईसर बारोठ	१९वी	१००–१०५	
२१३८	४४५२(२४)	हिंगुलाष्टक	रामसरण ?	१८वीं	२४ वां	
२१३९	७४१७	हिंडोलणा आदि		१७वी	१	लि क. खेतसी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१४	३५७४(१)	हितोपदेश भाषा		१७७३	११४	
२१४१	२८६३(६८)	हीयाली	हीरकलश	१७वीं	१२४ वां	
२१४२	२८६३(६९)		हेमाणद	,,		
२१४३	२८६३(७०)	हीयाली	हेमाणद	१६५७	१३५ वां	
२१४४	३५१०(४)			१८वीं	४ था	
२१४५	२८६३(१५)	हीरकलश गोत्रविवरण		१७वीं	१० वा	#
२१४६	२८६३(६५)	हीरकलश मुनिस्तुती	जिल्हण		१६१ वां	
२१४७	४१६८	हीररांझ्याको तमासो		१६५४	३२	लि क नाथूनारायण शर्मा
२१४८	२१०७	हीरसूरि रास	ऋषभदास	१८वीं	८२	पत्र १–२ अप्राप्त
२१४९	२३६८(७)	हीरसूरि सज्झाय	प्राणव	१६वीं	५० वा	
२१५०	३५७३(४)	हुणाडा मडनसुमतिजिनस्तवन	देवसूरि		१८ वां	
२१५१	१७५८	होलीविचार			१	
२१५२	२३७४(८)	क्षमाछत्तीसी	समयसुन्दर	,,	२८–३१	
२१५३	३५७५(२०)	,,	,,	२०वीं	६१–६५	
२१५४	२३१३	क्षत्रपाल [illegible]	माधो	१६वीं	२	
२१५५	६५६	क्षत्रसमासकरणी बालावबोध	वत्सराज	१७वीं	१३	
२१५६	४८३८	क्षेत्रसमास	रत्नशेखर	१७८२	७१	पत्र स १, २ अप्राप्त
२१५७	७३६७			१७वीं	१५	
२१५८	७४०३	,,		१८५१	६	
२१५९	७५२३	क्षत्रसमास चौपाई	मतिसागर	१६८२	१४	स १५९४मे रचित
२१६०	४०२१	प्रकरण सबालावबोध	रत्नशेखर	१८२१	२०	

ते गछ दीपै दीपतो, साचोर नगर मझारि ।
वीर जिणेसर दीपतो, जिहा तीरथ प्रगट उदार ।। १३
तास पाटे अनुक्रमे हुआ, श्रीजीतसागर सूरि ।
विनय करी कर्मसागर, वाचक देय सनूर ।। १४
तास सीस पुण्यसागर, वाचक पभणे एम ।
अजनासुदरी चोपई, पूरण कीधी ते प्रेम ।। १५
सवत सोल सत्यासीइ, श्रावण मास रसाल ।
सुदि तिथि पचमी निरमल, सिद्धि वृद्धि मंगल माल ।। १६

सर्व गाथा ।। इति श्री अजना सुदरी चौपई सपूर्ण सवत १८६८ मीगसर कृष्ण पक्षे तिथौ १ भौमवासरे द्वीतीय प्रहरे लिपत ऋष नोनचद पीही ग्रामे उदावत राज्ये वाचनार्थ वीर नय श्रीरस्तु ।। श्री ।।

२४ १८२० अजना सुदरी भास अपूर्ण

आदि– ।।ई०।। श्री गुरुभ्यो नम. ।।
ढाल–बाहुबलि रयण इम चितवइ मरसति सामिणी प्रणमियइ ।
गोतम स्वामि जा पाइरे । अजना सुदरीनी कथा नारि नर सुणह मन लाइरे ।।१।
सील अविचल भलइ पालियउ । पाइय सुजस सभार रे ।
सवि कुमगति वली टालियउ पड्य भव दुप पार रे ।।२।।

अन्त– धन धन अजनासुदरी, सुमरिउ चित्ति त्रिकाल रे ।
सील भलउ तिणिइ, पालियउ जसु गावइ मुनिमान रे ।
सील भलउ जगि पालियइ । ५६।।

इति अजना सुदरी भास समाप्त । लिपत वमावण ऋषि बाई वीरो पठनार्थ सुभ भवतु लिपक पाठक ।। छ।। छ ।। श्री ।।

२६ ३८६२ अवड विद्याधर रास

आदि– ।।ई०।। सकल पडित मडली मडन प० श्री ५ रविसागर गणि चरणेभ्यो नम ।। वस्तु । सदा सपद २ रूप ऊकार । परमेष्ठी पचे सहित । देव त्रिणि सदा सेवित । महाज्ञान आनदमय । ब्रह्मवीज योगींद्र वदित ।

दूहा ।। भुवन त्रिणि गुण त्रिणिमय, विद्या चउद निवास ।
हु प्रणमु परमातमा, सर्व सिद्धि सुप वास ।। १
परम ज्योति परमेस जे, श्री गुरु सारदमाय ।
आदि कवीसर सतजन, नित वदु तस पाय ।। २

अन्त– सवत सोलउ सए चालीस । कार्तिक सुदि तेरसि ससि दीस ।
सिद्ध जोग रिप अश्विनी । अवड कथा चोपइ नीपनी ।। १३
भणता सुद्ध सरीरे जोय । वृद्धि सिद्धि सवि होय ।
सिद्ध देव गुरु सकति । गुरु भक्तिथी पामइ भक्ति ।। १४
नव रस सइ अवड रासनी । स्रोता वगता जन पावनी ।
वीर कथा भावइ जे कहइ । च्यार पदारथ सहजे लहइ ।। १५

जिहा रहइ अवर अवनी चद्र । जिहा रवि तारा ध्रुव गिरि इद्र ।
सागर सपत शेषना वास । तिहा लगि रहा कथा परकास ॥ १६
उजेणिइ रहि चत्रमासि । कथा रची ए शास्त्र विमासि ।
विनाद वार वद्धि रस वात । पडित रस माहि विख्यात ॥ १७
मही पालना जास पसाय । विद्या भणी भानु भट पाय ।
मित्र लाडजी मुणिरा काजि । वाची विद्वान वाले राजि ॥ १८
वहु॰ वाचक मगल माणिक्य । प्रवद कथा रस छद आधिक्य ।
ते गुरु कृपा तणा आवग । पूरा सात हुआ आरग ॥ १६
इति श्री मुनि रतन सूरास । गोरख जोगिनी दाषा सीस ।
प्रवध कथानक आदस । काधा सात लघहा विसेस ॥ २०

इति श्री गोरख जोगिनी सप्त आदेश प्रवद विद्याधर रास सपूर्ण । सवत १६६३ वर्षे ज्येष्ठ शुदि १४ भौमवासरे प० श्री हसगागर गणि शिष्य लिमासागर वाचनार्थं लिखित पालणजा नगरे शुभभवतु ।

३६ ११२४ (६) अगडदत्त चोपाई

आदि– श्रीसौभाग्यसागरगणिसद्गुरुभ्यो नम ॥

आदि जिणवर प्रणमु पाय । समरू सरसति सामिणि माय ।
कर जोडीनी मागु मान । सवकनि देजो वरदान ॥ १

अन्त– अगडदत्त मुनि तणउ चरित्र । भणता गुणता हुइ नेह पवित्र ।
पडित हरखा सीस इम कहइ । भणइ गुणिते सिव सुख लहइ ॥ २६

इति श्री अगडदत्त मुनि चउपई सपूर्णा । लिखित ज्ञानसागरेण भाद्र राउत पटा कृते ॥ श्री पार्श्वनाथ प्रसादात्थी सुख सपत्ति हु ॥ श्रीरस्तु ॥

४१ ३५६२ (१४) अचलदास खीचीरी वारता

आदि– अथ अचलदास खीचीरी वात लीषते ॥

गढ गागरणरा धणी अचलदास खीचा गागुरणमे राज करे छ । राजा राजनी परजा धर कर छ । नगरीरा लोक सुखी । तीण राजारे राणी लाला मेवाड़ा छ । गहल मेवाडरो राणा मोकल छ । लालारे बेटा लाला खीरा अचलदासजी पाघा परणीया छ ॥

अन्त– गणा वरस लग राज सभाद कीदो । जतरे वृद्ध अवगता आय लागी छ । तीण समे मड मालुगढरा पातसाह रुयार सुलताण गढ गागुरण उपर फुज ग्राया । तर अचल दासजी षीचा गढ सजीया छ । मनरो दान सुपा वड कानी । भला जुगामु काम आया न सारी सराहा न उमा सोलमारा सगणो भाया न दाउ गनायो हुई । परषवा सा॰ सारा नाम गो हूवा ।

इति श्री ठाकर अचलदास खीचीरी वात सपूरण ॥ स॰ १६७० रा असाढ सद १५ द॰ रतो हरावन्दरा छ ॥ श्री ॥१॥

४४ ३५४६ (१८) अजीतसिंघजीरी वारता

आदि– वार्ता । महाराज श्री अजीतसिंघजीरी । महाराज श्रीअजीतसिंघजी पातिसाह श्रीफरखसाहरा बिना हुकम नरवदासु मुरधरमैं पाछा देसमें पधारीया नैं पातिसाहजी दिपण गया । दिपण मुहममन्द करि पातिसाहजी दिली आया । संवत १८६९ पछै पातिसाहजी मारवाडि उपरा मुहम ठहराय नैं वाईमीं विदा कीवी । निवाब हुसनअलीषा तिणरी मोचीयारै बाग डेरा पडा हुवा ।

अन्त– तरै भडारी कह्यो महाराजकवार पातिसाहरो हुक्म माथै चढाय ल्यो । भवतव्य न्यारा मति नैं कुमति उपजै । घरनीरै लालच अभैसिंघजी बषतसिंघजी उपरा परवानो लिषीयो । आपणै दोना भाया मारवाडिमैं आधो आध छै । नागोर मेडतो थाहरो छै । महाराजसु चूक करिज्यो । महाराजनै जाडेचामे छोलो आयो थो । तिको महाराज परणीज नैं जाडेचीजीरा मेहला पोढीया था । तिण राति महाराजसु ववर बषतसिंघजी चूक कीयो । संवत १७८१रा आसाढ सुदि १३ मंगलवार इण भांति अजीतसिंघजी नैं मारिया नैं घरनी पातिसाही गमी ।

इति महाराजरी वार्ता ॥१२॥ श्री ॥

४५ ३५७३ (४२) अजितसिंघजीरो कवित्त

श्री ॥ महाराज अजीतसिंघजीरो क्वित ॥

राजलोक रिपदुग्ण विम पटदाईत प्यारी मध महेली च्यार अगन ।
सिनान उतारे वारै गाडिण बलै बलै नव उडदावे गण ।
हाथल चेडी हुवै हुवै दौड जणी हजुरण ॥
पातरा पाच नाजर उभै भल वाई मून भामीयो ।
सीववत अजन सतीया सहित ईम सरगलोक सिधाइयो ॥ १
मारीयो लेप महाराजरै माहाराज कुणथी मरै ।
मोहकमसु नाह मुओ जेण मुहकमनै मारै ॥
सयदासु नाह मुओ सेदा सभर संघारे ।
पतसाहाना मुओ पडि उभो पतसाहा ।
वावीमी पच गई सूक वदीयौ दोय राह ॥
जोधाण धणी जस राजरो कुण तीणसु भारथ करै ।
मारीयो लेप महाराजनै महाराज कुणसु मरै ॥ २
ईती कवित ।

४६ २३६८ (४) अजीतसिंहजीरो सीलोको

• अथ अजीतसीवजीको सीलोको लीपते ॥

माता सरसती मोटी महामाई । तोनै तो समरचा कमणा नही काई ।
कहीयो सीलोको सुणज्यो ईण काजो । महाराजा अजमलरो वषाणुं राजो ॥ १
माहाराजा वैठा जालोर माहे । पतस्या ओरगनै लागु जी पाऐ ।
अब दोय कासीद दीलीसु आया । पतस्या ओरगनै सोष पूहचाया ॥ २

अन्त- सम [illegible]वयाम प्रासाद मानो। राजाजी कीयो देवलोक वासा।
साथ मीनाक पमाजा छाज। जा ध्यान बाज अविचल धाज ॥ ३१

ईना थायजीतमाय।।को मानावा सपूर्ण ॥ मिता वसाप वदि ११ सन १८४८ मा दीपन नमविज दाध्यामध्य, नम बीजजीका चेला नेमजा साध्या छ, वालमें लीपा छ धानरा साथ रपाया १) मर ३६ म छा जमि ता पीन ॥

५४ २८६३ (१२७) अणहिल्लवाडपत्तनराजावली

आदि- संवत ८०२ वणराउ चाउडइ अणहिल्लवाडइ पाटण वसाविउ ॥ साठि वष लगइ राज्य पालिउ। एव ८६२ आउषउ नाणियउ। तेह तेह पाटि योग राजा तेह राज्य हूऊ। वष १५ लगइ राज्य पालिउ ॥

अन्त- श्रीकुमारपाल राजा राज्य वष ३१ एवं संवत १२।३०। तेह नइ पाटि अजय पाल राजा राज्य वष ३ एव १२।३३ तेह नइ पाटि बाल मूल राजा राज्य वष २ एव सं० १२३५। तेह नइ पाटि भागदेव राजा राज्य वष ६३ ॥ एम सोलकी ११ पाट पाटणि नयरि राजया हूया ॥

५९ ७७४३ अध्यात्मरामायण भाषा

आदि- श्री गणेशाय नीम ॥ सुरसती नीमो ॥ श्री सीतारामजी सत छ जी ॥ श्री रामाय नमः ॥ अथ अध्यात्म रामायण भाषा लीषत रामकृष्ण ॥ राज श्रीराजेनपजी सभार्थीम।

चौपई- जब गुर भार भया [illegible] । तब ही [illegible] गय जाचन प्रभुग ॥
[illegible]नद मुनी [illegible] भाता। परजापत अमतु ही ठाना ॥ २
मीन मुख मा भय भगवाता। चीनाम याधा सब आता ॥
मय गिरा बोलो जु पुपारा। मुनाक ब्रमा मन वापारी ॥ २

अन्त- दूहा ॥ राम हीरदे जो राजस्थानी प्राते करन कुनार।
मायाराम हीरदे बसय्या इम मात बाचार ॥ ६५
राम हीरद जाया घरय कीनी [illegible] मी।
मुना [illegible] राज [illegible] पावी है करीय म [illegible] समाना ॥ ६६

ईती श्री अध्यात्म रामायण राम हृदय भाषा परम समाप्त ॥ लखे [illegible] श्रीराज सीधजी ॥ सभ मस्तुष।

६० ७२०३ अध्यात्मसारमाला

आदि- ॥८०॥ ॐ नमः परमात्मने ॥
दुहा ॥ श्री जिन वाणी नित नमी कीजइ य सम सुद्धि।
[illegible] गुरु पार्यम [illegible] [illegible] ॥ १

अन्त- इम जिनदत्त [illegible] राज [illegible] अविच नि[illegible] [illegible]।
दु[illegible] हनि बाधा म[illegible] [illegible] निज मणि पावनी ॥

अन्त— कलस ।। ते जैन धरम विचार साभलि लिए सजम भाउ ए ।
परिग्राह केरी सदा पालैं नेम निरतीचार ए ।।७१।।उ०
ससारना सुष सबल भोगवी ते लहै भव पार ए ।
श्रीरतनहरष सुपाग रगैं इम कहै श्रीसार ए ।। ७२

इति श्री उपदेशसतरी सपूर्णम् । स० १८३८रा मिती आसोज वदि ४ दिने प०
श्रीकर्मसुन्दर कालूग्रामे उपकेस गच्छे ।

२२६ ११२२ (१७) ऊट तथा हाथीवर्णन

आदि— सुविसाल तुमाल जिके अति सोभित घाट सुघाट विख्यात घड्या ।
जटी आल सुपाल हलत क्रमालय पत न थान जके पडिया ।।
बिने पक सुद्ध भला वगदा दौय कुरगह जेम पवे क्रमता ।
जग भेम दौड़ अमरे सहरो इस्यो घूघवडा मदिरा घुमता ।। १

अन्त— पट जेम उछाडिय पल्ल गॅय वर फोज तणा ग्रहणा फवणा ।
धन जे मग रज्जित मूल महा पण लाप वे लाप जिके लहणा ।।
गट भाज पाहाड विहाड कुरगम भाउ उपाड वहे भनता ।
गजराज दिड गजसिंघ कमध्वज इद्र जिमा हथियार हता ।। २
इति हाथीना वषाण ।

२३९ २३६० (८) एकलगिड वराहरी वात

आदि— ।।द०।। अथ एकलगिटवाराहरी वात लिष्यते ।। जबुदीप भरथ षडमै अठारै
गिरारो सिर अरवद । अरवद किसडोहेक छै । उण दूहा जिसडो ।

दूहा ।। वनस्पती पापर वणी, वरणीया टूक विहद ।
पडा विछूटा नीझरण, आयो सद अरवद ।। १
घैघूबी लूबी घटा, सपर पपीया सद ।
लगसासु वाथा लीये, आजुणै अरवद ।। २

अन्त— दाढालो काम आयो भूडण सती हुई । च्यार चेलरा काम आया । पाचमो
चेलरो आबुजी रहमी । महारावजी वीसलदेनै मारणहार हुमी । ऋषीश्वरारापा वचन सत्य
हूवा । झूठामै हूवै रावजीनै मारमी । गोठ पायनै घरै पधारीया । उमरावानै सीष दीधी ।
मुजरो करनै साराही डेरे आप आपरै गया । महारावजी श्री वीसलदेजी दरबार पधारीया ।
सुषमै रहै छै । फतई हुई ।।

इति श्री दाढालो वाराहरी वार्त्ता सपूरण ।। श्रीरस्तु । कल्याणमस्तु ।.

२५१. ५३० एकाक्षर नाममाला

आदि— श्रीगणेशाय नम ।। अथ एकाषरी नाममाला लिष्यते ।।
दोहा ।। कहत अकारज विस्नकू , पुनि महेस मतमान ।
आ ब्राह्मकू कहत है, ई जुगमा रमा जान ।। १

अन्त— विद्रुपन सुष सुनि तरक पट अष्टादसहि पुरान ।
नाममाला एकाक्षरी, भाषी रतनू भान ।। ३४

इति श्रीबारोठईरा रतनू वीरभाण कृत एकाक्षरी नाममाला संपूर्ण ॥ सं० १८५६ ना वर्षे श्रावण सुद ३ रवौ(वौ) लिपिता श्रीगोडीजी प्रसादात् ॥

२५३ ३२८६ ओखाहरण

आदि– ॥ श्रीगणेशाय नम ॥ अथ ओखाहरण लिख्यते ॥

राग रामग्री ॥

श्रीगभूमूतनें आनें आराधू जी । मन क्रम वचन सेवा साधु जो ॥ १

चतुरस्त लाक जेहनें माने जी । तेहना गुणसू सपीय पाने जी ॥ २

ढाल ॥ पाने नव्या जाय नहीं श्रीगणशना गुणग्राम ।

सकल कारज सीध थाय मुष लता नाम ॥ ३

अंत– पछे आपानें बीत्याय आपी वरत्या जयजयकार ।

श्रीकृष्ण पधारचा द्वारिका परणाबीनें कुमार ॥ १६

प्र आपा (ह)रण जे सांभले तेहना ताप अग्ध जाय ।

भट प्रेमानंद वेह कथा समरो श्रीयदुराय ॥ १७

कन्या ॥२६॥२॥ ओषाहरण संपूर्ण ॥ समाप्त ।

२५५ ३३०६ (३) कृष्णध्यान

आदि– अथ कृष्णध्यान लिख्यते कवि ईसरदासजीरो कयो ॥

निरष आदि रूपनिधान । कोट अनगकी छिव मान ।

माथ मुकट पपया मोर । घेरत मदन मुरली घोर ॥

भाल विमाल लाल कपाल । राप भानु कोटकी ओल ॥

भृकुटी ध्रुह वक कवान । मनकत कन्ना जुग भान ॥

अंत– श्रीपत चरण चबुज लाल । तिन बिच ऊद्ध रेष विमाल ॥

जव तिन गदा चक्र पद्म । निरस कटति काट करम ॥

निज पद लाग रज भर जात । तिनकु ब्रह्म सिव ललचात ॥

पतित बान जूप(ष)मझार । गावत गाव नदकुमार ॥

तिनके दरस प लप वर । ईसर वार वारघा फेर ॥ १५

इति श्रीकवि ईसरदासजीकृत कृष्णध्यान संपूर्ण ।

२७५ ५२११ कछवाहांकी वंशावली

आदि– ॥ श्रीगणेशाय नम ॥ अथ कुछवाहांकी वंशावली लिख्यते ॥

श्रीआदिनारायणजी कवलम ब्रह्माजी ॥१॥ मारीच ॥२॥ कस्यप ॥३॥ सूर्य ॥ ४ ॥ ववस्वत ॥५॥ मनु ॥६॥ इक्ष्वाक ॥७॥ विकुषि ॥८॥ पुरजय ॥९॥

अंत– महाराजाधिराज जगतसिंघ माहासिंघ नरवरका राजाका बटा गा राज पायो । जदि मानसिंघजी नाव पड्या । माता पोस वदि ६ सं० १८७५ का । राज कीयो माहीना ४ दिन ६ ॥ माहाराजाधिराज श्रीसवाई जयसिंघजी संवत १८७ क साल श्रीजसवायजी पधारचा जाति देरा । सब माता साथ पधारी मोती ढुगाढ़ सदि ८ संवत १८८४ क साल ।

२७८. ७७२० (२२) कपडकुतूहल

आद्य अंग खण्डित है। उपलब्ध रचनाका प्रारंभ इस प्रकार है—

·· ·· ढि पिलग पर सु दर ढोलियै वाय ॥ १३
ससी जर सु सो मन भयो, प्रीउ ढोलिए बोनाय।
माल सु हुणीवे लीजिये, सो माहरइ आवी दाय ॥ १४
तन सुपकी साटी चणी कछु वण्यो सुचग।
रतन जडीत नीरषी सोनी सुदर अंग ॥ १५

अन्त— कचीयो पेम पछेवडो कीयो सेज तीआर।
तिण वेला मदिर गई प्रीउ माणइ तिणि वार ॥ ३१
प्रीआग गगदास सूत, नगर उदैपुर वास।
कपडकुतूहल कीधा वणी देहि दुवास ॥ ३२

इति कपडकतुहल सपूर्ण ॥

२९२. २०९२ करगडू चोपाई

आदि— ॥ऎ०॥ नमो अरिहिताण रिसिह
जिणदह पयकमल, विमल वित्त पणमेसु।
वद्धमाण निणा वलि काई एक कवित कहेसु ॥ १
रिसह वरस दिण तप कियउ, वद्धमाण छम्मास।
वरसी छिम्मासाडसउ नामह उतिण तास्स ॥ २

अन्त— वाचक मतिपर इम कहइ, भणइ ते सपद शिव लहइ ॥ ७४
इति कूरगडू रिपि चउपई समप्रलिपट लेप्यक पाठके सुभं भवितु ॥

३०२ ११२३ (१२) करसंवाद

आदि—
दूहा ॥ पहिलू प्रणमिसि सारदा, जसु करि वेणा नाद ॥
आदीस्वर आदिइ करी, गाइसु कर संवाद ॥ १ ॥
नाभिराय कुलमडणउ, मुरु देवी उरि हार।
युगला धर्म निवारणउ, आदिइं आदि कुमार ॥ २ ॥
वीस लाप पूरव लही, कुयरपदिइ सुविशाल।
त्रिस विलाप पूरव जिणइ, कीवउ राज रसाल ॥ ३ ॥

अन्त— दोइ कर सप जिनेस्वर करचा, भाव सरिस अक्षर सभरिया।
श्री श्रेयांनकुमर आणद। प्रथम पारणू प्रथम जिणद ॥ ६४ ॥
हुई वृष्टि सो वन शृ गार। दुदुभि देव करइ जयकार।
मुनि लावण्यसमय कहइ जोय। जिहार सपति तहा सुप होय ॥ ६५
सपइ लहीइ घननी कोडि। सपइ अग न लागइ पोडि।
सपइ वयण न वावइ रली। सप वपाणइ श्रीजिन मनी ॥ ६६
इति श्रीऋषभदेवपारणाधिकारे करसवाद सपूर्ण।

३०६ ४०२० कविकल्पलता

आदि– ॥ द० ॥ अथ श्रीसारकृत बावनी लिप्यंते ।
ॐकार अपार पार तसु को न लम्य ।
सवर कर सिरताज मत्र धुरि कवियणम्य ॥
अरधचद आकार उवरे मीडा जसु सोहै ।
ज घ्यान चित लाय तिक तिहुयण मन माहै ॥
साधक सिध जोगी जती जासु घ्यांन अहनिस करै ।
कवि सार कहै ॐकार जप काइ सण भुलो फिर ॥ १

अत– क्षिन मडल मिति तिलक सहर पाली पुर सोहै ।
गढ मठ मदिर महिन बाग बाडी सनमोहै ॥
राज करै जगनाथ सुर सामत र नवायो ।
सोनगरे सुममध सुजस वसुधा वर तायो ॥
सवत मोलनित्यासिय मासु सुदी दसमी दिन ।
श्रीसार कवित बावन कह्या साभलिज्यो साध मन ॥५५

इति श्रीकविकल्पलता श्रीसारकृत सपुर्ण । सुभ भूयात ॥ श्री सवत १८७८ रा मती फागुण सुदी १० स श्री श्रीगुराजा श्रीवनरामजी । लीपर्ता कु इद्रभाण वाचनारथम अणदपुरमध्य ।

३२५ ४६१५ (१६) कागदरी नकल

इस गुटकम पत्र स० ३६८से पत्र स० ४०६ तक चार कागजो(पत्रा)की नकलें दी हुई हैं जो इस प्रकार हैं—

पहली नकल आदि– कागदरी नकल ।

छद नराच– मत हम सांभर नगर सुधर । प्यारी निज हाथ दियो पतर ।
सुभ थान मथानक सुदरिय । छिब गात अनत चित हरिय ॥ १
सलिता सर निसर नीर वहै । नरनि सभ वास धर र रहै ।
वहु वास निवास न कुप वन । वनिता गनि तीर सनीर घन ॥ २

अन्त– दिन जात वृथा तुम सग विना । कबहु सप होत न आप विना ।
कहता ज रजो समचार सव । स मिथ्या तन मानहु भाम कव ॥ १७
न लिप तुम पत्र सनेह घनो । पथ जावनकी तुम रीत गनो ।
जुग राम वस समि संवत य । सम मास तथी सरस चरय ॥ १८ इति ॥

दूसरी नकल– [सवत १८३४]

आदि– कागदरी नकल लीपते । स्वस्त श्रीअमुकानगर सुथाने सुवल सुम ओपमा केलास वयारी अमरसप्यारी चदवदनी मगलोचनी लजरी लडी जीवरी जडी हीयारी हार, सेजरी सिणगार प्रीतमरी पीआर चितरी उदार हसलमुषी सदा सुषी ।

अन्त– सवसरपी नारी नही, मवसरपी नही वाण ।
मव गुण एकणमे नहीं, दापु चतुर सुजाण ।। ६२
इती ओपमा लिपणरी, जथाजोग मत जाण ।
कहत दुलैमल चुप सु, रुप चुप परवाण ।। ६३ ।। सपुर्ण ।

तीमरी नकल–

आदि– सिध श्री प्यारी दीसे, जैपुर नगर जठेह ।
प्रीतम लिपत वणायकै, नित २ नवलै नेह ।। १
चदवदनि मृगलोचनी, चिता लक सुचग ।
गजगमणि रस जोग है, अतहि जाण सुचग ।। २

अन्त– वाहू उतर देजो सदा, कागद अधिक उजास ।
हित कर लिपजो हेतसु दमक्त अपणा पाम ।। २० सपुरण ।।

चौथी नकल–

आदि– सिध श्री सरवओपमा विराजमान अनेक ओपमा लायक गुणनिधान बहोतर कलासुजाण चवदै विध्यानिधानं सूरज जेहा तेज, चकवा चकवि जिहा हेज, चद्रमा जेहा सितल, रुपा जेहा ऊजला ।

अन्त– मत किणहिसु लागजो, नैणाहदो नेह ।
धुकै न धुवो नीसरै, जलै सुरंगी देह ।। १८
सजन फलजो फुलजो, वड जु वीसतरजो ।
नालेरा जु लुवजो, आछा जु फलजो ।। १९

इति श्रीपत्री सपुर्ण ।

३३१. ३५६२ काया-नगरको कागद

आदि– अथ कायानगररो कागद लीपते । सीध श्रीसुरगपुरी मुत्र सुथानेर सकल सुभओपमा वीराजमानान राजराजेस्वर माहाराजाधीराज महाराजाजी श्री श्री १००८ श्री श्रीधरमरायजी जमराजजी सदाचरणजी वो चरणकमलायनु जोग कायानगरसु लीपतु ककर पानाजाद नमतासुर अतरसुर चीतगुपतरो नमो वीसन वचावसी अठारा समचार भला छै ।

अन्त– सवत उगणीसें सही, पाचा उपर एक । (१९१५)
कवीयण कर जोडी वीनवे , सायव रापे टेक ।।
कागद कीदो कोडसु, फरप रष्यो नही फेर ।
ओर ठोर लावे नही, हीया जव चलो हेज(र) ।। ३

ईती कागद सपुर्ण ।

३४२ २३७५ (२) काष्ठघोडा विक्रमजीतनी वारता

आदि– श्रीगणेशाय नम ।। अथ श्रीकाष्ठघोडानी वारता लिष्यते ।
चोपाई ।। हरसि दरे गुणपतिनु नाम । प्रथ विपत पोतानो ठाम ।।

तन व्यजाण विजा कीय । तह मानव एक भवरज होय ।
समाप आण्यु देहरू । ज राजा य हुन्द बहू ॥
माहि बठो एक दिठो जन । तहनु मरवा उपर मन ॥ २

पउ– विक्रमगा माटा राजन । वह पूतली सुणा भोजराजन ।
एवा को मथा स्य सही । त सायासण बसे जई ॥ १०२
यह वात पुतलीय कही । पछै आकास मारगे उडी गई ॥ १०४

इति श्रीराजा विक्रमजितनी वारता बाप्टपोटली सपूरण ।

१४५ ११५२ कुतुबगात

आदि– द० ॥ वरगुा दार गयदनी भठी दवल नाम ।
साहिबना गुरतिया वर बोलीय वडाम ॥ १

तब स्थिमि साहिबा वरणीयुं पाणा पुनावनी थी, वरणी प्रणाम कीया । साहिबा तुमनुं क्या उपगार करू । हमनु क्या उपगार करहुगे । हमारे वरावुवांने उपगार करउ । तहव मयर क्या उपगार करहुग ।

अन्त– जिन हा जाव परगीया, पानन भई जा आद ।
[illegible] गुनाह कुतुबनी रहह सु रापउ माहि ।
[illegible] कुरान दीना मनु करे गाय पर पीना ॥
[illegible] मुहगुर माने गादा नावे ।
याउ बाजत वजाया हुव हुव बाई ॥
जिमा जीव कुतुबनी, जिन नामना न आद ।

इति श्रीकुतबगात समाप्त ॥ श्री ॥ सवत् १६७० वर्षे [illegible] [illegible] । शनिवारे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] श्री[illegible] शिष्य [illegible] लिखित ॥ श्री ॥ [illegible] ॥ श्री ॥ श्री[illegible] ।

४०८ २८८१ (१०१) [illegible]

वर [illegible] बालिय [illegible] ।
[illegible] ॥ १
[illegible] ।
[illegible] ॥ २
[illegible] ।
[illegible] ॥ ३
[illegible] ।
[illegible] ॥ ४

४०४ १४४६ (१०) [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] । [illegible] १६६१ [illegible]

दीन पातिमाह पदमणीरै लीयै आयो नै गोरोवादल लडीया । सवत १६२४ राणा उदैसिघजीसु चीतोड छूटो नै पीछोला-तलाव उपर उदैपुर वसायो ·· ।

अन्त– सव्वत १६०० राव राम काल कीधो राव डुगरसी टीकै वैठो । पछै राव मालदे डुगरसीनै तेडनै होलीयारी रामति माहे झालीयो । पछै राव मालदे फलोवी आण घेरी । डुगरसीनै पिण साथे ल्याया । कोट डुगरसीरै रजपूत जगहथै देपावत सभायो । वडी वेढ कीवी मास २ ताई । पछै रावजी डुगरसीनै दोहरो करण लागा । तरै डुगरसीजी जगह छ देपावतनै कहायो । तु कोट परोटे तरै जगह श्रै कह्यौ कु थारै हाथ कूची देईस । तरे डुगरसीनै पोल वारै ले गया । जगहथै देपावत डुगरसीरै हाथ कूची दीवी । डुगरसीजी राव मालदेनै दीधी । तरै राव मालदे गढ लीयो । डुगरसीनै परो छोड दीयो पछे डुगरसी कानी होइ गयो ।

५७१ २८९३ (१३८) चद्रगुप्त सोलस्वप्न सज्झाय

आदि– ·· य नम ॥ हरषइ प्रभु गुरु प्रणमी करी, स · हियडइ धरी ।
सोलह सुपरा तणी सिझाइ' ·· णता सवि सुप धाइ ॥ १
भरतषेत्र पाडलपुरि ·राजा चद्रगुपति अभिराम ।
निसि भरि सेजि सुपन जे लहिया, सोलह सुणियो अनुक्रमि कहिया ॥ २

अन्त– सवत सोलहसइ वावी वसुदि पचमिय जगीस ।
राजलदेसरि सघा ·· एह सिझाय हीर रिषि कहइ ॥ २०

इति श्री चद्रगु ·· द्र सोल स्वप्न सिज्झाय ॥ लिपत हेमराजेन ।

विशेप—गुटका अत्यन्त जीर्ण एव त्रुटित होनेसे इस कृतिका अधिकाश खण्डित हो गया है ।

६०३ ३५४६ (१३) जपरा मुपराकी वार्ता

आदि– अथ वार्त्ता १ जपरा मुपरारी लिप्यत्ते । पश्चिम दिसनै पटण गाव छै । तठै श्रोढो भाटी राज करै । तिणरै दोइ वेटा हुवा । एकणारो तो नाम भीवो । दूजारो नाम देवो । गाव २॥ ऽथ ३ रो धणी । घणा रजपूत पाप २ रा कनै रहै छै । असवार हजार १री साहिवी । तठे ठावा सगीरै भीवानै परणायो । देवो पिण परण्यो । तठै वरस १६ माहे तो भीवो हुवो······।

अन्त–

दुहा ॥ पूटी ताई पानाह, जिणै न पायो जपरो ।
मिलै न मेले ताह, माटी दूजी माढुवा ॥ १
वेह दातार विनाह, जाचिक क्यु जीवै नही ।
पूटी ताई पानाह, जिणै न पायो जपरो ॥ २
पातरीया पहलोइ, जाय जूहारचो जपरो ।
नर वीजा नर लोइ, आप्या तलि आवै नही ॥ ३
श्रा इतरी वात जपरा मुपरारी कही ।
सूरवीर दातार, तिणरै मन लही ॥ ३
इति वार्त्ता सपूर्णं ॥

६०४ ११२२ (३) जगडूनो छंद

आदि– ॥श्री॥ अथ जगडूरा छंद ॥

[illegible] दवा [illegible] । [illegible] [illegible] ।

[illegible] जुगादि [illegible] । [illegible] ॥ १

[illegible] मेश्वर जाण । [illegible] जिण [illegible] ॥

[illegible] कुमारी [illegible] उतारा । [illegible] माटी माता त्रिपुराया ॥ २

अन्त–

[illegible] ॥ [illegible] पुर नही दात पट [illegible] देणो ।

हे [illegible] दुवार [illegible] ॥

[illegible] उदरंग [illegible] ।

[illegible] ॥

[illegible] ।

[illegible] जगड [illegible] ॥ ६

इति जगडू [illegible] संपूर्ण ॥

६०५ ११२२ (१८) जगडूसाहरो जस

आदि– [illegible] ।

दूहो ॥ [illegible] ।

[illegible] लिपचे हमारे ॥

[illegible] ।

[illegible] ॥

[illegible] ।

[illegible] ॥ १

[illegible] ।

[illegible] ॥

[illegible] ।

[illegible] ॥

[illegible] ।

[illegible] ॥ २

६४८ ९१८ (७) [illegible]

आदि – [illegible] ॥

[illegible] ।

[illegible] ॥

[illegible] ।

[illegible] ॥

[illegible] ।

[illegible] ॥ १

अन्त— हूजरारा हेक वार आत गेगजे जारं ।
गरज पथ हिगनाज नरा गाय हुर पारे ॥
पोकरण पोतदार तिरि द्वारका पधारो ।
ज्यो पानिक मिट जाय हुई आतम निगतारो ॥
उतपात मात परमी अनग जान गीया उर जागनी ।
द्वारकानाथ प्रतापथं इनरें होनी थावगो ॥ १

संवत १७३५रा पोस वदि १० महाराजा श्रीजसवंतसिंघजी देवलोक प्राप्त हुआ छैं सो अटक पार तरै पोहे पहुरै कह्या छै ।

६५०. ११२२ (४६) जाम लापारी नीसाणी

आदि— ॥ई०॥ अथ जाम लापानी नीसाणी लिख्यते ॥
मां पर भवानी मेहरवानी, मपर आगेवान ।
वापान लाडक गुर विनाडक, दे नवाडक दान ॥ १
हूनू दान दाडक नरा नाइक, वरनजो गुविहान ।
रज रीत रापा जाम लापा, पट्ट आपा जान ॥

अन्त— हूनू रूप राजे छवि छाजे, जग कवदा जीह ।
यह कहत राजमरान बावत, देसपत गव दीह ॥ २६
हूनू दीह साजे धनी दौलत, नरा दत्त सवाइ ।
अस्मान जमी ताम अमर, जाम नाम न जाइ ॥ ३०
इति श्रीनीसाणी जाम लापारी संपूर्ण ॥

६५३. ७४६ जालधरपुराण

आदि— ॥ श्रीगणेशाय नम ॥ अथ जालंधरपुराण लिख्यते ॥
छंद वेअापरी ॥ गजमुष गुण भंडार गणेसर ।
सिधि वुधि समपि समोभ्रम संकर ।
उमया मात उदर उतपना ।
देमू देव विद्या वरदंन्ना ॥
अप्पर अजव अछभम आणी ।
वधवाणी दे अविरल वाणी ॥
विमला कला कमल वाहनी ।
वेद वरनी चंद वदनी ॥ २

अन्त— तोहारी चाकर चिंता तूझ ।
मफेर विजो न चौरासी मूझ ॥
तोरी करि रापि हवै त्रिपरारि ।
अमैं वर मूझ मया अवधारि ॥ ३५

इति श्रीजालधर पुराणं संपूर्णतामवीभजत् ॥ लिखित प. कुअरकुशलेन ॥

६८१ ४६१४ (५४) जोगी रासा

आदि– अथ जोगीराम लाषीत ॥ ॐ नम सीध्यभ्यो नम ॥
आदिपुरिष जो आदिजगोत्तमु, आदिजती आदिनाथो।
आदिजुगोत्तमो जोग पयसो जय जग जय जगनाथो॥ १
तास परपर मुनिवर हुआ दीगाबर सहिनाणी।
कुदकुदाचरज[1] गुरु मेर, पहुजी वहिय वहाणी॥
अंत– जोगीह रासो सीषहु श्रावक, दुषन कबहु लहि सो।
जो जिणदासह त्रिविधि हि सिधहु समरण कीजहु॥ ४२
ईती जोगीरासो सपुरणमस्तु।

६८३ ५४१८ (३१) टडाणा गीत

आदि– टडाणा टडाणा वे जियड टडाणा टडाणा॥
इत ससार दुष भडार क्या गुण देषि लुभाणा छे॥
जिन ठग ठगिया नादह काल फिर तस जोग परयाणा छे॥
अन्त– करि उदिम आपन बन मडो भोगो अमर बिमाणा छे।
समिकि तपोहण दस विधि पूरा निरमल धरम कराणा छे॥
सुधसरीर सहज लवनावहु भावहु अतर भा(गा) छे।
जपे बूचा तम सुष पावहु, वछ पद निरवाणा छे॥

इति टडाणा समाप्तम्।

७१५ २३६८ (५) तारातबोलरी वार्ता

आदि– अथ तारातबोलकी वारता लीपते ॥ मुलतान वासी ॥ नाव ठाकुरसी। बुलाकीदास दुर देसकीसु वारता देषि आया सु लीपी छ॥ प्रथम गुजरातसु कोस ३००स अहमदाबाद नगर छ। अहमदाबादसु कोस ३००स आगरो छ। आगरासु कोस ३००स लाहोर छ।

अन्त– 'तारातबोल नगरक आसि पासि सीमु नदी बहै छ। चोगरद जीका पाद छ। आगकी काई गम नही। मुलक जमी आसमान छ क नहीं छ। जी की ठीक नही।
आ वारता मुलतान वासी नाम ठाकुरसी जाति पत्री बुलाकीदास देषि आयो सो लीषी छ।

तारातबोल आगरासु ५५५१ कोस छ। आगे घरती छ जाका बिचारतो मवली जाग सहर १ आग बताव छ। जीको राह कोस २००स आग चाल छ। सो पन्डित होसी सो जाणसी। इ वात मजूब जाणो भतीना॥

ईति श्रीतारातबोलकी वार्ता सपूण।

---

१ कुदकुदाचाय (?)

७८६ ११२४ (१०) दामनक चोपाई

आदि– ॥ई०॥ वा० श्रीसौभाग्यसेनगुरुभ्यो नम ॥

दूहा ॥ सरसति सामिणि वीनवी, मागु अविचल मान ।
सरस कथा रस वोनवा, दे जेउ वरदान ॥ १
दया धर्म जगि स्यहउ, भाषइ श्रीजिनराय ।
ताऊ परि सतवहु, बोलिसुं सगुरु पसाय ॥ २
मानव भव दुहिल्यु सही, कीजइ जीव जतन ।
दामनगनी परिसदा, लहीउ परिबसन ॥ ३

अन्त– सवत सोल त्रिसठि जाणि (१६६३) । ज्येष्ट सुदि नवमी सु वखाणि ॥
राउ(?)द्रहा नगर मझारि । श्रीवद्ध मान स्वामि साधारि ॥ ३१
पुन्यइ सुख सपति घरि होइ । पुन्यइ जस नामइ जगि जोइ ॥
दयासील वाचक इमि कहइ । पुन्य थकी सिव पद लहइ ॥ १३२

इति श्रीजीवदया विषये दामनग चुपाई सपूर्ण लिखित मुनि श्रीज्ञानसेनरेण माहगाउल पठनकृते श्रीपार्श्वनाथप्रसादात् श्रीरस्तु ॥

८७६ ४६२४ (३) नागदमण कथा (अपूर्ण)

आदि– ॥ई०॥ श्रीसारदाय नम ॥ अथ नागदमणि लिख्यते ॥

दुहा ॥ वलतो सारद विनवु, गुणपति करो पसाऊ ।
पवाडा पनगा सरस, जदुपति कीधो जाऊ ॥ १
प्रभू अनेके पाटीया, देत वडा सादन ।
के पालणै पोढीया, के पय पान करन ॥ २
कोइ न दीधो कानवा, सुण्यो न सौता वध ।
आप वधावण उपना, बीजा छोडण बध ॥ ३

अन्त– "कलश ॥ सुणे पुणें सम वास, नद नदन अहिनारी ।
समुद्र पार ससार, दोई गोपद अणहारी ॥
अनतर आणद सवे वपताप सुणावै ।
भगति मुगति भडार, कमन मुगनाह करावै ॥
रमीयो चरित राधारमणि' " ॥

६१३ ११२३ (२२) नेमिनाथ चदाइण गीत

आदि– ॥ई०॥ राग केदार गुडी ॥

दूहउ ॥ सामल वर्ण सोहामणु, सब गुण भणु भडार ।
मुगति मनोहर मानिनी, तिनको हइ भरथार ॥ १

चालि ॥ मुगति रमनि तु भरथारा । तुझ गुण कोइ न पामइ पारा ॥
तीन भुवनहु आधारा । अभयदान सुहइ दातारा ॥ २

अन्त– सहस वरस कु आयु ज पालिउ । जनम मरण कु भड स टालिउ ॥
सुकल ध्यान ऊजल गिरि करीए । नेमनाथ शिव रमणी वरीए ॥ ४५

दूहउ ॥ नेम चदाइरण जे भणइ रे, ते पावइ पुसार ।
- मुनि भावड इम वीनवइ छोरउ भव के पार । ४६
इति नमनाथ चदाइरण गात समाप्त ॥

३५७३ (४८)[1] पनरमी विद्या

आदि– ॥द०॥ श्री गुणसायम अथ राजा भोजरी पनरमी वार्त्ता व्यास भवानीदास कृता लिख्यत्त ।

अथ दूहा ॥ श्री गणपति सरसती सीव जिसना रवि गुरूदेव ।
व्यास करे अरदास प्रभू, देजे अख्यर भव ॥ १
अविरल वाणि आप जे, देज्यो सुबुद्धि सुग्यान ।
त्रियाचरित्र वरणत करू, धरे सुलछन ध्यान ॥ २

अन्त– मछु न नार वचन चिन धरय ।
कराय भोग आलोच न करीय ॥
सुप विनास बहुतेरा कीज ।
दीलसु मरम भरम नही दीज ॥ ५३
त्रिय परपुरष घणु वषाणु ।
चोहट वात पारकी आण ॥
देप जवाना चीत दीढ़ावै ।
विषतामेह जु छिनाल वताव ॥ ५४
(अपूर्ण)

१०७५ ३५६० (४) पाबू धाधोलातरा दूहा (अपूर्ण)

आदि– ॥ श्री पाबु धाधालातरा दोहा मु० नथ्यरा कया ॥
देवी द वरदान, सुणतो यु सघ मालीयो ॥
पाबुसु परध्यान गालतु तुव गुण ॥ १
सुरनाथा कुडान वरदायक हुइज वल ॥
भल पाबु भूपाल मलकहे या कीरत सुणु ॥ २

अन्त– बीर वरजताह म कीधो सुज पामीयो ॥
पुट नह पाताह, माता सुण बूझो सुण ॥ ६५
छेन्डो विछावेह म ममझायो मो दिसा ॥
पिण तागो या एह तो पिण न मान त्रिपट ॥ ६६

११५५ ५८६७ बगसीराम प्रोहित होरां की वात[2]

१२६६ ३५४६ (२०) महाराज अभैसिंघ देवलोक हुवा तिण समयरी वार्ता

आदि– ॥७०॥ अथ वार्ता महाराजा श्रीअभसिघजी देवलोक हुवा मारवाडिम विपो हुवो तिण समीयारी ॥ सवत १८०६रा अषाढ सदि १४री राति घडी २ पाछली रहिता महाराज श्रीअभसिघजी अजमेर देवलोक हवा न दाग पोहकरजी दिरायो। पछ

१ यह ग्रन्थ मूल सूची मे भूल स छपना रह गया है। २ यह कृति प्रतिष्ठान स प्रकाशित हो रही है।

महाराजकवार श्रीरामसिंघजी श्रावण सुदि १० गुरवार जोधपुरमें टीके बैठा।

अन्त— संवत १८१३रा आसोज सुदि ८ महाराज विजैसिंघजी मेड़तै श्रमल कीया। सोभत पिण तुरी नीयी। तरै रामसिंघजी जैपुर गया। राजा ईसरसिंघजीरी बेटी परणीया संवत १८१३रा पोस वदि १ मंगलवार।

इति मारवाड़विपारी वार्त्ता संपूर्णं।

कवित्त— दिषणी मुरधर देस राम राजा ले आया।
लारा लगावै रार काल पिण पड़्या सवाया॥
धरती हुई पराय लूटकोस घणी मचाई।
दुनीयारा पोगाल गड पिण फटी गवाई॥
संवत अठारें इग्यारोतरें बारोतरो पिण जाणीयो।
तीनु काल मिल एकठा तेरोतरोही पिछाणीयो॥

१२८६   ६०४.   माधवानलकामकदला चोपाई

आदि— '' '' माधवानल २ रूपि मकरद। चवदह विद्याधर चतुर॥
चिहुर जाणि सुरगुरु विचक्षण। नारद वर नाद गुण॥
लहु वेस वत्रिस लक्षण। कला बहुत्तरि अति कुसलक्षण॥
अभिनव इंदकुमार। सदगुरु सुपि जिम मन रलइ॥ विरचिसु तेह चरित्त॥ २

अन्त— दूहा॥ संवत् सोलसोलोत्तरइ, जेसलमेर मझारि॥
फागुण सुदि तेरसि दिवसि, विरची आदित्यवार॥ ५०
गाहा गूढा चउपई, कवित कथा संबंध॥
कामकदलाकामिनी, माधवानल संबंध॥ ५१
कुसललाभ वाचक कहइ, सरस चरित सुपवित्र।
जे वाचइ जे सभलइ, तीया मिलइ धन गरथ॥ ५२
गाथा साढी पाचसइ, ए चउपइ प्रमाण।
सुणता भणता सुप दीयइ, जे नर चतुर सुजाण॥ ५३
रा ' ल माल सु पट्टधर, कुवर श्रीहरराज।
विरची ए शृंगार रस, तासू कतूहल काजि॥ ५४
सारदसु प्रसाद करि सील तणइ आधारि।
भणइ सभलइ तेह नर, सुप पामइ नरनारि॥ ५५

ग्रंथ ५०५५॥ इति श्रीमाधवानलकामकदला चउपई समाप्ता॥ सं० १६४३ वर्षे चैत्र वदि १० बुधवारे उत्तराषाढ नक्षत्रे मध्ये पल्लीवाल० भट्टा श्री शांतिसूरि तत शि० देवीदास लिपत जयतारणे॥

१३०२   ६७१   मानतुगमानवती चोपाई

आदि— ॥र्द०॥ श्रीपरमात्मने नम॥
प्रणमु माता सरसती, प्रणमु सदगुरु पाइ।
सूरपथी पंडित करे, जस जगमे कहिवाइ॥ १

कथा सरसनें कवि वयण, कलवीया बहु भाठ ।
सावर द्राप प्रमी थकी, म ता अधिका दीठ ॥ २

अन्त- सवत सतरेंसतवीसें धुरें । सुदि आसाढें बीज दिनें गुरें ॥
खरतर सह गुरुजिणचन्द जयकरू । तहनें राजे सोहगसुदरू ॥
सुदरू सोमसुदर प्रमार्ने । अभयसोम इणि परि कहें ॥
ए सरस रहिनें कथा दाखी । भेद मतिमदिर लहें ॥

इति श्रीमानतुग मानवती चतुपदा समाप्ता ॥ स० १७७८ चैत्र सुदि चतुर्थी लिखिता प० राजविजयवर ॥ श्राविका पुण्यप्रभाविका देवगुरुभक्तिकारिका केसरपठनाथ बीक्रम पुर वास्तव्य कल्याणमस्तु ।

१३८२ ३५५० (१५) महता आदिकी एतिहासिक हकीकत

आदि- सवत १७४६ वष पोस वदि नवाब अयाइतखानरो बेटो रावणपड़ी तिणनु मेन्तीय जोध माडानु मारीयो । सामरि पर तुरक घणा मरण गया । रपत चपत घोड़ा युद्ध अब सब रजपूतार आयो । राडानु बारी । मारवाडि माहे बरस ७०८ रहो । लोका माहे लाव पान्ती गाव घणा पाड मारीया था तणा सब कसर काढी । मुहवमनीय मन्तीयानु मारीयो हुतो तको वर लीया ।

अन्त- स० १७५२ वर्षे वगडी मुकाते रुपीया हजार ७ लसकरीखानर बट बीजो हथीवखान लाधा । माप नीपनी सघरी । मेह घणा हुआ ॥ १

१४५४ ७७२० (२३) रागनामोपरि विरहसुभाषित

आदि- ॥६०॥ प्रीतम चाल्या हे सखा ललित करी लववार ।
हियडा उपर हिमता, मा विरहणीको ना हार ॥ १
तुम विण मेरे प्रातमा, मदीर मांहि अपार ।
पर बाहर नहा आसगे जा कीया श्याम गधार ॥ २

अन्त- थांहरा प्रीतम आइयो, सन्या सम सुजाण ।
मन उछाहा अधि हुयो, करा कल्याण कल्याण ॥ ३०
प्राउ पधारया हे सखा पायो आज सोभाग ।
जतश्री जय जय करें, श्राव अम्हारा भाग ॥ ३१
इति राग सपूर्ण सवत् १७६८ वर्षे जेठ सूद ७ दीने थी ॥

१४६१ ४६०६ (२) राजसभारंजन

आदि- ॥६०॥ अथ राजसभारंजन लिख्यते ॥
गणाधर सबहु सदा बाहत रसिक प्रवीन ।
राजसभारजन कहा, मन हुलास रस भीन ॥ १
रूपतिरति नारागनन, विद्या सुघन सुगह ।
जा दिन आय आनन्दमें, जातबरो चन एह ॥ २

बीचमे कुछ उदाहरण—
माघ सहेट चल्यो चहै, मुग्धा तिय पिय छैल ।
पीमेमे कोटी न्हीं, चले बाग की सैल ॥ ६७
सहज रीति कुल तजि लगै, काम कलाकै साज ।
बाप न मारी मीडकी, बेटा तीरदाज ॥ ७०

अन्त— छंद तीनसैसाठ सब, व्यव्हारै सुप देत ।
राज-सभा-रंजन सरस, कियो रसिकजन हेत ॥ ६७
अक बान मुनि ससि (१७५६) समा, विक्रम सक नभ मास ।
उजल नवमी भृगु दिवस, पूरन रस-प्रकास ॥ ६८
सुपद भूमि सग्रामपुर, श्रीनृपवर जयसाहि ।
तहि कवि मन सुप्रसन्न अति, मति रतिसो अवगाह ॥ ६९
जब लो सुप सज्जन कला, मेरु धराधर धाम ।
तब लो चिर जीवहु रसिक, पटत गुणत गुंन नाम ॥ ७०

इति श्रीराजसभा-रंजन दोहा समाप्त ।
संवत् १७९८ वर्षे मिति पोस वदि १४ शुक्रे लिपिकृतं श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ।

१४७६ ४८३४ राठोड नाहरखानरो छंद

आदि— छंद राठोड नाहरपानरो गाडण माधोदास रो कह्यो ॥
आरज्या ॥ उपन्ना पुरसाणी उडा । पाणी पन्था पापर होडा ।
अैरा कीआ रछ्छीस जोडा । नाहरपान समप्पे घोडा ॥ १
भाडजी केवी मुगलाणी । पासा पंग जिके पुरमाणी ॥
वडपाता सुण अवरल वाणीं । रेवत रीझ दीयै राजाणी ॥ २

अन्त— कलस ॥ वहस तेज वहू सफल वहुत मोला वहु भोयण ।
धीरज तेज अनत लोय दीप क्वहलोयण ॥
धड विसाल पै करह गात उतगह मैंगल ।
पवग वेग विसराल वाजि वीया वेगागल ॥
वरहास वडा वड कवीयणा त्यागी व्रण हरतै रवै ।
समपीया पान राजानकै कुप करन्नह अभिनवै ॥
इति नाहरपान घोडारा दातारो छंद सपूरण ॥

१४९८ ३८९७ रामयशोरसायन

आदि— ॥र्द०॥ राम-रासा लिपते ॥ वेलावल रागे ॥
दोहा ॥ श्रीमुनिसोव्रतस्वामि नमो, त्रिभवन तारण देव ।
तीरथ कर प्रभु वीसमो, सुर नर सारै सेव ॥
पुत्र सुमित्र नरिंद्रनो, पो मावंत ममाय ।
जनमा भुमि जिनवर तणी, राजग्रही कहवाय ॥ २

अन्त– कलस ।। राम लिछमन अन रावण सति सीता नीचरी ।
वही माया धरीत साची वचन रचन करी धरी ।। १
सघ रग विनोद करता, अन आवता सुप भणी ।
केसराज कवीन्द जप सदाहरप वधामणी ।। २

इति श्रीढाल हृपष्टया रामयसोरसायण चतुर्थाधिकार समाप्त सब ढाल ६२ सब गाथा ३१६६ सब ग्रथाग्रथ ४३७५ इति रमायण समाप्त ।। सवत १६७१ चैत्र मासे शुक्लपषे तिथ छठ ६ वार आदीत वार न देहरग्राम जमना टट । लिपत रमायण साम्त्र पुरा कीया हुगा बुधराम लिपत ।

१५३७ २३६४ (२) रूपदीपक पिंगल

आदि– ।। श्रीरामजी ।। अथ रूपदीपक भाषा लिपत ।।

दोहा ।। सारदमाता तू बडी सुबुधि देहु दर हाल ।
पिंगल कि छाया लीय बरनौं बावन चाल ।। १
गुरु गनेसके चरण गहि हिय धारक विस्न ।
कुमर भवानीदास की जुगति कर ज किस्न ।। २

अन्त– बावन बरनी चाल सब जस मोम बुद्ध ।
भून भेद जाकी कही करी कवीसर शुद्ध ।। ३
सबत सतर स बरस और छिहतर पाय ।
भादो सुदि दुतीया गुरी, भयो ग्रथ सपदाय ।। ४ सवत १७७६

इति श्रीरूपदीपक पिंगल भाषाग्रथ सपूणम ।।१।। स १८५८ मिती पोस सु ६ ।

१५४७ ११२२ (६१) लाखफूलाणीरा कवित्त

आदि– ।।७०।। अथ लाखाफूलाणीना कवित्त लिष्यते ।

छप्पय ।। प्रथम चउद्दह कोडि सेन गह मिल सुभट्टा ।
धर पूरब ऊमड धहे सिर थाट उवट्टा ।।
जगल वारा मिरू लप्प लोघी धर माही ।
धनचर कीध विलग्ग जाण वामणो पसाही ।।
धूधला गयण पुड धूजियो गभीर पच जोजन गियो ।
मम बीह सूर सस मारवा इद्र कहे लाषा मयो ।। १

अन्त– सवत नव एकम मास कारतक्क निरतर ।
पिता वर छन मर्माहि सहस्र रापाइत सद्धर ।।
पड ममा भो पार पड सोलकी सो पग ।
आगणीस सो चावडा पूथा छिन राज रिणवट ।।
पातरे घमल मगल सहै सोल सीह नामो सर ।
आठ म पप्प रा चाद्रण मूलराज लापो मर ।। ५

इति लाषा फूलाणीना कवित्त सपूर्ण ।

३५४६   ३५५५-(२७)   लापाफुलाणीरी वात

आदि- श्री गणेशाय नम ।। अथ लापाफुलाणीरी वात लिपते । प्रथम तो गीत सीहा सेतरा मोसरो लापाजीनै मारीया तिण समारो—

मुध मन जात चालियो सीहो, सेन मुतन ले वहु साज ।
मूलराज नालेर मेलीयो, उपर करो कनोउचा आज ।। १
हुतो चाल्यो जाति गोमती, सगी पण छै आगलो साथ ।
जाता करे वलता घर जास्या, वाउडता सगपणरी वात ।। २

अन्त- सिरदार काम आयो। रापायचरा काका भाइ माग ही वैर ले पाछा पाटण आया ।

इति श्री लापाफुलाणीरी वात मपूर्ण । मवन् १८२६ वर्षे येप्ट वदि १४ दिने पिपलीया ग्रामे लिपत केसरचद लिपीकृत । तिण ममारो कह्यो दूहो—

लापो तो मीहै मारीयो, ये भगा मो वार ।
पडीयो सीह करकडै, की वेडीयो गिमार ।। १

वात लाखोजी पुरे लोहे पडिया छै तठै मूलराज चावडो आयो   सीहोजी कुच करे नैक नव जनै पधारीया । सोलकणीमु सुप भोगवता छ पुत्र हुवा छै । वडा आसथानजी तिके मारवाडमै आया । तिणारो विसतार राठोड छै सही ।

इति वारता सपूर्ण ।

१५६३   १८१५   विक्रम-चरित्र

आदि- ।।र्द०।। श्रीत्रिपुराई नम ।।
देवि सम्मति पाय पणमेवि शभु शकति त्रिमनी धरी ।
करिम कवित नव नवइ सिद्धि बुद्धिवर विघनहर ।।
गुणनिधान गणपति प्रसादि ज्ञानी रपि आगइ हूया ।।
जह आगम परवेस तस पसाइ कवीअण कहइ विक्रममुत अणवेस ।। १

दूहा ।। आदि सति नेमी सरह, पासनाह वर्द्धमान ।
ए पचइ मगल करण, शास्त्रारभि प्रवान ।। २

अन्त- पनरपासठइ सवत्सरिइ । जेठ मास सुदि पक्ष दिन करिइ ।।
रवि त्ररास ए शास्त्र प्रकास । कहि कवीयण निज गुरु उदास ।। ४६
विपुल वुद्धि सुकवि तेह तणइ । वाचक उदयभानु इम भणइ ।। ६२

इति श्रीविक्रमचरित्र प्रवध ।। सवत् १५६७ वर्षे मार्गशरमासे कृष्णपष्य नवम्या तिथौ शनिवारेऽज्जेहश्रीपूर्णिमापक्षे पूजा श्री श्री ६ भुवनप्रभसूरि शक्ष्य वा० रत्नमेरु लिपित ।। गोदावरी ग्राम श्री श्रीहस सानिध्ये लिपित ।। कल्याणमस्तु ।।

६४१४   विक्रमचरित्र (हेमाणन्द रचित)

आदि- ।।र्द०।। श्रीसरस्वत्यै नम ।। प्रणम्य देवदेवच वीतराग सुर्रचित ।।

लाकानां हि विनोदाय करिष्येहं कथामिमा ॥ १
नत्वा सरस्वती देवी श्वेताभरणभूषिता ।
पद्मपत्रविसालाक्षी नित्य पद्मासन स्थिता ॥ २

अन्त- श्री विक्रमनें वैताल कथा कही चउवास उदार ।
मोन छियाल माद्रव मास । हेमाणद कहै उल्हास ॥ ३६

इति श्रीवैतालपचीसा २४ कथा ।

दोहा- अनि विक्रम मीमम गया, पाछो लिए हा डाल ।
मन्त्रधी बाघइ काया, तब बोल नृपाल ॥ १

आगया अग मपूण है ।

१६१२ २०१६ विक्रमसेन चोपाई (परमसागरप्रणीत)*

आदि-

॥८०॥ दूहा- परम ज्योति प्रणामकर पूरण परम उल्लास ।
प्रणमु परमानदमु परम सपमर पास ॥ १
चरमसरीरा चरम जिन शासन नाह सधिर ।
परम प्रम पद पूजस्यो जगवत भजि न वीर ॥ २

अन्त- तो लग ए चोपइ थिर रह्या, जा लग सूरज चन्द ।
राग धन्यासी ढाल चोमठ्ठमी, परमसागर आणदा रे ॥ १३

सब गाथा १३४७ छ इती श्रीविक्रमादित्य लीलावतीसुत विक्रमसेन चोपई सपूर्ण ।

१६१३ ३८६८ विक्रमसेन चोपाई (मानसागररचित)

आदि- ॥ॐ०॥ श्रीवीतरागाय नम ॥
सुपनाता सखमरा पूरण परम उनास ।
सानिध करज्या साहिबा अधिक घन मुझ आस ॥ १
मारद घर सामा वडो, वदन अनोपम जान ।
सा सारद सुप्रसन्न हुवा, द्या मुझ वचन विनाण ।

अन्त- ढाल आवनमी आ मे गाइ मानसागर सुपसाइ जी ।
दीन २ चढ़ता जान सवाइ दान २ दासत पाइ जी ॥वी १३॥

इति श्रीविक्रमसेन नरेन्द्रस्य चोपी सपूर्ण समाप्ता । स० १८२८ वरप ।

१६२७ ३६६२ विद्याविलास चोपाई

आदि- ॥ॐ०॥ श्रीजिनाय नम ॥
श्रीजिनवरमुखवासिनी प्रणमु सरसति माय ।
कविअण वयण ममुच्चरइ त सारद सुपसाइ ॥ १

* इस रचना की क्रमांक १८२६ पर भी एक प्रति है। ये दोनों परमसागर कृत हैं।

प्रणमु गोतम प्रमुप वलि, गणधर गुणह निवास ।
समरता गुण जेहता, पूजइ मगली आस ।

अन्त– ताम सीस रगइ कहइ, राजसिंघ आणद ।
विद्याविलास नृप गाईयउ, दान अधिक सुपकद । ४५
ए सवध सुहामणउ, सुणत भणत दुप दूर ।
मनवछित साहिल फलइ, लहावइ सुपतर पूर ॥ ४६

इति श्रीविद्याविलास चउपई समाप्त सपूर्ण सर्वगाथा ३४६ ग्रथाग्र ४१६ सवत् १६६३ वर्षे माह वदि ६ नौमि ' ठाकरसी वाचनार्थं लिपित श्रीजेसलमेरमध्ये शुभ भवतु कल्याणमस्तु ॥

१६२६ ६१११ विद्याविलास चोपाई

आदि– ॥र्द०॥ श्रीसरस्वत्यै नम ॥

दूहा– सरसति नित आपो सुमति, चित हित धरि प्रणमेवि ।
जित तित थिन थानक अचल, सोभित दह दिसि देवि ॥ १
कवियण नरसा निधि करण, दूर हरण अगन्यान ।
चरण सरण उपम वरण, उपावण गुण ग्यान ॥ २

अन्त– वाचक गुणवर्धन सुषदाया, श्रीसोमगणि सुपसायाजी ।
इम जिनहरष पुण्य गुण गाया, तीस ढाल सुष पायाजी ॥ १४
हिव राजानि सुणै गुरवाणी ॥

इति श्रीपुण्यविषये विद्याविलास चोपई सपूर्ण ॥ स० १८२६ वर्षे मिति आसाढ सुदि ७ दिने ।

१६३२ १८२७ विद्याविलास रास (पवाडउ)

आदि– ॥र्द०॥ ॐ नम ॥ श्रीवीतरागाय नम ॥
पहिलुं पणमु पढम जिणेसर, शत्रुजय अवतार ।
हथिणाउरि श्रीशाति जिणेसर, उजलनेमि कुमार ॥ १
जी राउलि पुरि पास जिणेसर, साच उरउ वर्धमान ।
कासमीरि पुरि सरसति सामणि, दिउ मुझ नित वरदान ॥ २

अन्त– सयम लेईं सिवपुरि पुहुतउ धन धन विद्याविलासइ ।
भणइ हीराणद सो श्रीसघह वछित पूरउ आसइ ॥ १६
सवत चऊद पच्यासी अए, रचीउ ए हरमालत्तु ।
अचल वधामणा ए ॥ १६
जा लगइ अवरि रवि तपए ता लगइ विस्तरउ ए चरी ।
अचल वधामणा ए ॥ २०

इति विद्याविलास चरित्ररास संपूर्ण ॥ सवत् १६७६ वर्षे ॥ आसो वदि दुवादसी गुरुवारे..... जावालमधे लिपित ॥ शुभ भवतु ॥

१६७० ७३२२ (१४) वीरमद ईडरिया आदि कवित

आदि– ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

कवित– गढ़त लख दईयन मर भरत अहिराइण ।
धनत धान अहि चलत पान पचत पजाइण ॥
समरत श्रास माया सपास रस होइ महा जल ।
परसा वात यावन घात वितत वेगागन ॥
प्रणराइ चाइ एकाणवे सानिहानर दिगा सव ।
जिहु राइ लिख नारियण सना दाता सो वारमो ॥

अन्त– कर वरि जिण गिरवर धरयो, मथुरा मारयौ कंस ।
रया रावस निरदले, जयकारा जदुवंस ॥ १०

श्रीठाकुरांरी साखी छ ॥ लिपत मिश्र मानदराम ॥ शुभमस्तु ॥

१६७१ २१४३ (४) वीसलदेव गूजर निवाररी वात●

आदि– ॥ अथ चन्दराव वीसलद सीरोहीरा धणीरा गूजरार सिवाररा वात लिपत ॥

दूहो– गहे पूव सूवा घटा वणिया टव विहल्ल ।
मरवदन धनणा रहे जाना नीण हवास ॥ १

वात– आबूरा पाहड़ा ऊपर मवनाथ । चौरासी सिद्ध । चौसठ जोगणी । बावन वीर । तठा वाद त्यना तपस्या कर । आबूर पाहड़ ऊपर १ जनम सीधौ सो मास २ सपथा ध्याररा हुवो । सो माईला माग भरणा आव । सा पाहड चोग १२ म तें ऊमर चर पाव । सा सारी ही ठाइ तपना तपस्या कर छ ।

अन्त– सा जिण वहम गूजर गिर सो नम पाय पड़ी । घड़ी मजराग हुई । पिर्छ गिरनार वाम आया सा निकाल रावजी निवाजस करी । सीरोही पधारीया ।

इति श्रावद राव रामसन्दे गूजरार निवार वात संपूर्ण ।

१६६० ७३४१ (४) वैराग्यसुनि भाषा

आदि – ॥ श्रीगणेशजी ॥ अथ वम्मारी भाषा माव्यन ॥ राजश्रीराजसीमजी संमायर्ग ॥

दूहा– श्री भागीन दगम मवष, इण मनुष्य भाषा बंध ॥
धर्मा धान भर बध दूहा पावाम्सन सिर भ्रम नर ॥

चौपई– श्रीगुरुचरण कमल सुखराना । वदस्याले पुत्र विस्याना ॥
सीतर परधान ध वर । नारवा क्यौर हिरदमे धर ॥

दूहा– [illegible] भाट ब स करै सुपरे इम ज्ञान ।
तन मन स हुए नाह है नाम सम बाणान ॥ ६०

इति वाहड संपूर्ण म न ग्रन्थ मह्यान ॥ सर्व न सूपगरद श्रीराजरानजी ॥

● सं ४०१२ (१३) पर दजित 'वचनिका खादररा वार्ता' और इस रचनाकी कथा वस्तु एक है किन्तु दोनोंकी वर्णनात्मा भिन्न है।

१६९१. ३९०३   वैदर्भी चोपाई

आदि–

॥दं०॥ दूहा– जिण धर्म माहे दीपता, करि धरमस्यु रगि ।
रिदइ, मूरा जाणिस्यइ, ढाल भणइ वहुरग ॥ १
रग विण रस न आवमी, कविता करो विचार ।
नवरस आदि सिंगार रस, ते आणु अधिकार ॥ २

अन्त– दूहा ॥ दान देइ चार तलीयो, हूवउ तउ जयजयकार ॥
पेमराज गुरु इम भणै, मुगत गया ततकाल ॥ ४९
भणै गुणै जे साभलै, वैदरभी तणो वीवाह ।
भणता सहु सुप सपजै, पुहचइ नगर मझार ॥ ५०

इति श्रीवैदरभी चौपई समाप्ता ॥ ग्रथाग्रथ २५० ।

१७००. ३५४८ (१)   वैहलीमरी वात

आदि– ॥ अथ वेहलीमरी वात लिप्यतै ॥

दूहा– धूर दीपण वाका धणी, राज करै पीरोज ।
उगै आथनीया विचै, दाण उधरै रोज ॥ १

वात—पीरोजसाह पातसाह गढ गजनी राज करै । तरै पातसाह वीचारीयो वीजापुररो गढ लीजे । तरै पातसाह कटक करनै बीजापुररै गढनु लागो । मास ८ आठता ' ढ ढोहो हुओ । पछै गढ पीरोजसाह पातसाह लीयो ।

अन्त– वात ॥ तठै ममण तलाव ऊपर सती कर काठ देने पाछो वलीयो ॥

दूहो– रातै मुह वैहलीम साह, साहिव भाई होय ॥
भोजाई पला जिसी, कवर होसी मोहि ॥ ५६

इति वैहलीमरी वात सपूर्ण ॥ लिपत धनराज तिमरीमध्ये सा श्रीअमुकनाजी तत्पुत्र राजसी फतेचंद वाचनाय ॥ स० १७९४रा मिती आसोज सुदी २ गुरवारे ॥

१७६८ १००२   शत्रुञ्जयउद्धार रास (समयसुन्दररचित)

आदि–

॥दं०॥ दुहा– श्रीरिमहेसर पाय नमी, आणी मन आणद ।
रास भणी सरलीयामणो, सेत्रु जना सुपनो कद ॥ १
सवत च्यार सतोतरइ, हूआ धनेसर सूर ।
तिण सेत्रुज महातम कीद्यो, सिलादित्य हजूर ॥ २

अन्त– तास सीस जग जाणीयै ए, समयसुदरउ वडाय ।
रास रच्यो तिण सूअडो ए, सुणता आणद थाय ॥ २१॥से॥

ईति श्रीसेत्रुजय रास सपूर्ण ॥ सवत् १८३६रा वर्षे आसोज सुद १२ दिनै उपाध्याय श्रीसोभागचदजी कस्य आत्यम साधने लिपापित प नैणसीलिपत श्रीराधणपुरमध्ये ॥ श्रीरस्तु ॥

१७७२ ३६५३ शत्रुञ्जयउद्धार रास (नयसुन्दरविनिर्मित)

आदि- ॥६०॥ गुरुभ्यो नम ॥

विमल गिरिवरमंडन जिनराय । श्रीरिसहेसर पय नमा ॥
धरीय ध्यान सारदा देवी । श्रीसिद्धाचल गाईसिउ ॥
हईंइ भाव निरमल धरेवी । सत्रुंजि गिरिवर माँहि वन्दउ ॥
सिद्धि अनंती कोडि । जिहा मुनिवर मुगति गया ॥
पद्य वर जोडि ॥ १

अंत- भानुमेरु पण्डित सीस दाए कर जोडि कहि ॥
नयसुंदर प्रभु पाय सेवा नित करे वा । देहि दरसण जय करो ॥ ११४

इति श्रीशत्रुंजयउद्धार समाप्त ॥ सं० १६६८ वर्षे मार्गसिर सुदि २ महोपाध्याय विमलहर्षगणि शिष्य गणि हंसविजयेणालेखि ॥ शुभ भवतु ॥

१७४४ ६८० श्रीपाल रास (विनयविजय यशोविजय विरचित)*

आदि- ॥ श्री सद्गुरुभ्यो नम ॥

दूहा- कल्पवेलि कवियणतणि, सरसति करि सुपसाय ।
सिद्ध चक्र गुणगावता, पूरि मनोरथ माय ॥ १
अलिय विघन सवि उपशम जपता जिन चोवीस ।
नमता निज गुरुपयकमल जगमा वध जगीस ॥ २

अंत- देह सबल ससनेह परंदे रग अभंग रेसाला जी ।
अनुभव तेज महोदय पन्या नहिस्य मान विशाला जी ॥१४॥ त०

इति श्रीमहोपाध्याय श्रीकीर्तिविजयगणि शिष्य उपाध्याय श्रीविनयविजयगणि विरचिते उपाध्याय यशोविजयगणि पूरित प्राकृतबंध श्रीसिद्धचक्रमहिमावर्णनाधिकारे श्रीपाल चतुर्थ खंड संपूर्णम् ॥ ग्रंथ सं० १६२१म सिद्धचक्रआविधि लिखी है ।

१८४१ ६०३ गुरुमहोत्सरी चौपई

आदि- ॥ श्रीगणेशाय नम ॥ श्रीमाताजी सत्य छे ॥ छ ॥
सयल सुरासुर माया मगन कराग भूजत जय निलया ।
वर विजायरा दाया सा सारद वन्म पर शामामि ॥ १

अंत- मंगल पहेला जिन चोवीस । बीजो मगन गोमय गीस ॥
त्रीजो मंगल गुरु परिवार । चोथो जिन शासन प्रधान ॥ ५२

इति धारगमधरा कथा गुरुमन्तरी चोपाई संपूर्ण समाप्त भवतु ॥
॥ १६०८ना वर्षे ।

१८४४ ४०१० गुरुमहोत्तरी

आदि - ॥६०॥ श्री गुरुभ्यो नम । अथ बार गुरुमहुत्तरी लिख्यते ॥

---

* इस ग्रंथकी चार विभिन्न प्रतियाँ है आदरी कथा एक पाठ अपर प्रमाण है।

दूहा– करि प्रणाम श्री शारदा, शपनी बुध परमान ॥
मुक शप्त वार्ता उ करी, न्यावते देवी दान ॥ १
विक्रम नगर सुहामणो, सुप सपता ठोर ।
हिंदू थान इग हिंदू धरम, श्रेगो महर न ग्रोर ॥ २

ग्रन्त– • हरदत्त सेठ होम करायो निहा सारिका पिण ग्राई । उपरन्तु दिव्यमाला पडी । उणरे दर्शन सेती सराप छूट शुकसारिका गधर्व होय आपणे लोक गया ।

इति श्रीबहुत्तर वार्ता सुध सुवावहुत्तरी सपूर्णम् ॥ ७२ संवत् १८६६रा मिती श्रावण सुदी १ दिने लिपतं प० विजैसमुद्रेण श्रीजैसलमेर दुर्गे चतुर्मास्या स्थिता ।

१८४५ ४४१६ शुकबहोतरी । प्रथम पत्र अप्राप्त

आदि– दी यसो । पृथ्वीके विषै बहुतसी कथा मनुष्य भाषा करि प्रभावती आगे कहसी । सील रषावसी । तदि गंधमाद परवतके विषै आविने शुक सरीर छोडिके मूल सो शरीर पामी पाचसै मोहर ब्राहमणने दान देई । निपाप थाइस…।

• ग्रन्त– …कवि देवदत कहे । शुकका वचन भेला करिके आपकी बुद्धिके अनुसारै बाधी छई ।

इति श्रीशुकबहोतरी कथा समाप्ता ॥ सवत् १७६० वर्षे आसोज वदि ६ षष्टी भोमवासरे प० वनीतविजय लिपि चक्रे ॥ शुभभवतु ॥ श्रीसमाप्ता ॥

१७४५ ६८५ ' श्रीपाल रास (ज्ञानसागर कृत)

आदि–
॥र्द०॥ दूहा– कर कमलजोडेवि करि, सिद्ध सयन पणमेस ।
श्रीश्रीपाल नरिंदनु, रासवध पभणेस ॥ १
महीयलि मत्र अनेक छै, पवलि सपटिग सार ।
भवसायर तनु उतरै, जो जपै श्रीनवकार ॥ २

ग्रन्त– सिद्ध चक्र महिमा सुणो ए माल वडी भवेया कर्णधरेवि सुणो सुदरी भ० २ मनवछित सुपदायक् ए माल० ॥ जे सुणे नितमेव सुणो० जे० १ एक मना जे जिन जपइए मा० ते घर मगल माल सु० ते० २ ऋद्धि अनती भोगवें ए मा० जम भूपति श्री सुणो सुदरी जे० २ ।

इति श्रीपालरास सपूर्ण ।

१७४६ ६६१ श्रीपाल रास (जिनहर्ष रचित)

आदि–
॥र्द०॥ दूहा ॥ श्रीअरिहत अनत गुण, धरीयइ हीयडै ध्यान ।
केवल ज्ञान प्रकाश कर, दूरि हरण अगन्यान ॥ १
चउद राजु ऊपरि रहइ, सिध अनत समृद्धि ।
सुगति युवति सुप भोगवइ, दायक अविचल सिद्धि ॥ २

ग्रन्त– सवत सतरइसै चालीसै, चैत्रादिक सुजगी इमइ रे ।
मातइ सोमवार सुत दीसै, पाटण विमवा वीसैरे ॥ १०

१६६८. ३५५५ (१६) सिरोही माडवी आदि स्थानोंकी बोलियोंके नमूने

आदि– अथ बोलीया लिख्यते ॥

सवइया ४ ॥ सभलेन भाट पेमा आही वात थासो कहूं,
माटीयारो माट मारे रहीया रे जाम्या जी ।
इगुनै अभागीयारै सेवा देवी काट नहीं
इगुनै सभागीयारै घी नै बाटी पाम्या जी ॥
घाघरं रै घुमकैसु माडीयारं भूमकै सु,
लोचनारै सुमकैसु चितडो रमावस्या जी ।
अमलारो कोट आछो नीरपारी ओट वालै,
ज्यासु मारी रात जीवडो रमास्या जी ॥ १

इति सीरोही बोली सपूर्ण ।

ठालोभूलो लेह मोनै बुरी बुरी गाळया बोलै,
गावरी लूगाया सूणै छोहरा सूणै हाटसु ।
पमा वितो एक कथ ए कहु कहा, आंही मोया,
अविकरो ज्यु हु ईडै अंथा घाटसु ॥
ओही रजपूत जायो हु ई रजपूत जाई,
ओही एकै नामै छै त्युही कालै काटसु ।
सणदलबाई आही वात थासु कहु भाई,
ऐहे घरवासमु केहा दिन काटसु ॥

इति माडेवी बोली सपूर्ण ।

जेथ जावा तेथ माहरै दोड दोड आडो आडो,
आवै थारो किसु लीयो माहरै काम काजै जावा छा ।
हार कठी डोरो तोडै भालनै बाह मरोडै,
ओही झूठी वाता नेहडो न लगावा छा ॥
सटकमै माडी पोलै भूडी भूडी गाल्या बोलै,
तोसु किसु वीहा थारै घरे रोटी पावा छा ।
लाज बीज किसु पोवै पापतीरा लोक जोवै,
आये काल्ह उथि म्हेइ उथि आवा छा ॥

इति बीकानेरी बोली सपूर्ण ।

सणदल भाई वाई आही वात थासु कहू,
देपो वाई थारो भाई म्हासू वेढ माडै जी ।
एक तो म्हेइ गड कीधै तिका थे जाणो विध,
वीजी ही नसारै कीया तीओ ठोर हिडै जी ॥

कहो हिव जाऊ किसी कहो किम्,
तिम् करो छपी ही न छूटू म्हारा देहडो न छाड जी ।
जाणी स्यू ही हालो आप दू तो क्यू ही
कहू नही दया मान भाद जी ॥
इति जोधपुरी वाली सपूर्ण ॥ लिपीकृत चेला केसरचद ॥ समापना ॥

३५४६ (२) सेरसिह मेडतिया आदि राजाओंका सपपरा

आदि– गीत जाति सपपरो म्रगिघ मेडतीयारा नें कुसलसिघ चांपावतरो ।
चय" आवीया घरारैं सेघ वेहु राजा वधे चान
वहुई घरावा दगे छूट मोमा वाग ।
वलावली सिघुराग वागिया कुम्भाउ वाजा
मड वहु आभ लाग उनल माराग ॥ १ ।

अन्त– रगग मनगा जसा वसी तग अग रभा
आपरा पिलमा पोढ सरोवती अग ।
नय घप पान घणु परियां कुरग वचा,
भेट जेन साजी भला भागरा तरग ॥ ७ ॥इति॥

३५४६ (१०) सोनीगरा वीरमदेरी वारता

आदि– ॥"०॥ अथ वार्ता १ सोनिगरा वीरमदेरी ॥ गढ जालोर सोनिगरा वणवीर वीर कवर दाइ हुवा । वडो कवर कानडदे । छोटो रालगदे । टीक कानडदेजी बडा । गढ जालोर राज कर । तिको एकण समीय कानडदेजी सिकार चढीया । तिको जालोरसु कोस १० तथा ११ उपरा गया न रांति पडी । बन एक पवास रह्यो ।

अन्त– छः मगर चदणरो घर वणायो । आयो धड गोद माहे लेन सती हुई । तिका पावदतू आय सतलोकम भली हुई । पातिसाह अलावदीन दिली गया । आ इतरी वात वीरमदे सोनिगरारी क"ी । सूरवीर "तार तिगर मन सही । सवत १३३७ अलावदीन पातिसाह जालोर आयो नें सवत १३४६रा फागुण वदि १३ वीरमदे सोनिगरो कांम आयो ॥ गढ जालोर भागो ।

इति वारमदे सानिगरारी वार्ता सपूरण ।

४६०३ हमीररासो (हमीरायन)

आदि– श्री गनेसाय नम हमीराईन लीख्य ॥

कवीत– गवरीन" पान" ष" सीसाट वाग्राय ।
प्यार भुज कर परस भरस सुपल घग राजत ॥
कर कर्मदन अपमान साम्र यमन चोर गुहाय ।
मधुर स्वगप स्वगमय रचा धार उन्माहा कीन ।
हा हर प्रगट सुघा सुधी मना जो वच कवीन प्रभा मागा ॥ १

अन्त– कवीतः ।। अमो करीउ काहु करै नही, कोउ मो नगी गजवी चक्र तन ।
वाईम वीक्रम गण बुधवीन पार्जवयाभा. अजहु मच्यवी गेड गेलें ।
दक्षीन भडारा मदगल कटू हमेल कगी ।
कदन्न रनथभ गढ अगो करै न कोई ।।

ईती श्रीहमगायनमाको श्रीगार सपुरन ममापनी ।

छद जाजाको ।। कुडलीयां माई मोहदे अमीम काई जीवो वरग गो । याई मोह दे अमीस छीनी ई तोर जीवो । वारा ऊपर वीस भनेजा जन वीरम केह ।

लीपत पाडे नाथुराम ब्राह्मन गोडगी आसावी अम धर्ममुर्त्त गउ ब्राह्मनका रक्षपाल राजा श्रीमलजीकू नाथुराम ब्राह्मन गोड नदारामको भतीजो टोढ रहे है पवीजीको अद भीछुकको अमीम वचजोजी मीती पोम वदी ६ मगालवार मवत् १७८७ जो पुस्तग वाचै जीकु राम राम वचजोजी । जाद्रष्ट दस्वा ताद्रम लीपते मा । जदी मुद्ध वीमुद्ध वा मम दोपं न दीयते ।। शु० ।।

२३७४ (१०)   हरचदपुरी

आदि– ।। अथ हरचद लप्यते ।।
नेरी अवती उत्यम ठाय । राज करे ता हरचद राय ।। १
रायना चक्र फरें नव पड । आण न लोपे को बलवत ।। २
मामु छोल वक्र नव फरे । पित्य पिनो पुन नमी मरे ।। ३
गउ तुलमी विरामणने दवार । रावु मत हरचद नै राय ।। ४

अन्त– काढी पटकनें धसमनो जाघायो मुके सीम ।
आगल चकीता आवीउ माहावग्रहा जगदीम ।। ८
ईती हरचदपुरी नपुर्ण ।।१०५५।।

२८६३ (६८-६९)   हीयाली

१ हीरकलश कृत

जलि कमल प्रसगइ । वाम वमइ लघु अग विग्रगइ ।।
कहिहो पडित ते कुण नारी । स्याम वरण ते स्याम सिगारी ।।
कवण मुनीर कमल कुण नारी । हीरकलस कहि कहउ न इ विचारी ।। ८

२. हेमाणद कृत

राग मल्हार ।। एक पुरुष सामल मुकुलीणउ रमणी त्रिहु भरतार रे ।।
गगा मुरि सिरि मूल उत्पन्नउ सुविचारउ समार रे ।। १
हीरकलस मुनि सीम हेमाणंद बोलइ मन उल्हास रे ।। ५

अन्त– इति श्रीहीयाली नाम कृत हीरकलस मुनि ।। सवत १६५७ वर्षे काती सुदी २ दिने रउवी स्याने ।

२८९३ (१५) हीरकलश गोत्रादि वर्णन

इस गुटकेके दसवें पत्र पर प्रारम्भ सूक्ष्माक्षरोंमें हीरकलश गोत्रादि लिखे हुए हैं, जो पत्रका कुछ भाग खण्डित हो जानेसे पूर्णतया पढ़े नहीं जाते। पढ़नेमें आने योग्य कुछ अंश इस प्रकार है—

रीयां धुंद्रा गोत्र ॥ सा० मोहणसी पुत्र मंत्रि वा पुत्र म० वाघा पुत्र म० धरणा पुत्र म० दया पुत्र सोमा पुत्र सा० सगला पुत्र सा० सदारंग प्रमुख ॥ कुतरा पुत्र भीमल हीरा चेला हेमाणंद चेला मरजन ईसर सा० तेजा पुत्र वोदा पुत्र चिरमाना ॥



॥ श्री ॥

परिशिष्ट २

ग्रन्थकार नामानुक्रमणिका

१

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित

महत्वपूर्ण राजस्थानी ग्रन्थ

---

१. कान्हडदे प्रबन्ध, महाकवि पद्मनाभ रचित। सम्पादक– प्रो के बी व्यास एम ए।
मूल्य १२.२५

२ क्यामखां रासा, कविवर जान रचित। सम्पादक– डा दशरथ शर्मा और श्री अगरचन्द, भंवरलाल नाहटा।
मूल्य ४.७५

३ लावारासा, चारण कवियां गोपालदान विरचित। सम्पादक– श्री महतावचन्द खारैड।
मूल्य ३.७५

४ बांकीदास री ख्यात, कविवर बांकीदास। सम्पादक– श्री नरोत्तमदास स्वामी एम ए.।
मूल्य ५.५०

५ राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग १, सम्पादक– श्री नरोत्तम स्वामी, एम. ए.। मूल्य २.२५

६. जुगलविलास, महाराजा पृथ्वीसिंह कृत। सम्पादिका– श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत।
मूल्य १.७५

७ भगतमाळ, ब्रह्मदासजी चारण कृत। सम्पादक– उदैराज उज्ज्वल। मूल्य १.७५

८ राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिरके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची, भाग १। मूल्य ७.५०

९. मुहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, मुहता नैणसी कृत। सम्पादक– श्री बदरीप्रसाद साकरिया।
मूल्य ८.५०

१० रघुवरजसप्रकास, किसनाजी आढा कृत। सम्पादक–श्री सीताराम लाळस। मूल्य ८.२५

११ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग १। मूल्य ४.५०